घंटू के कारनामे

(हरियाणवी किस्से)

घंटू के कारनामे

(हरियाणवी किस्से)

त्रिलोक 'फतेहपुरी'

शब्दांकुर प्रकाशन
SHABDANKUR PRAKASHAN

घंटू के कारनामे

(हरियाणवी किस्से)

ISBN : 978-93-85776-75-5

रचनाकार
त्रिलोक 'फतेहपुरी'

संस्करणः प्रथम, 2020)
मूल्यः ₹200/-

सर्वाधिकार
लेखकाधीन

टाइपसेटिंग
कंचन चौहान

आवरण
आईशा

मुद्रक
आर्यन डिजिटल प्रेस, दिल्ली

प्रकाशक
शब्दांकुर प्रकाशन
J-2nd-41, मदनगीर, नई दिल्ली 110062
दूरभाष : 09811863500
Email: shabdankurprakashan@gmail.com

समर्पण

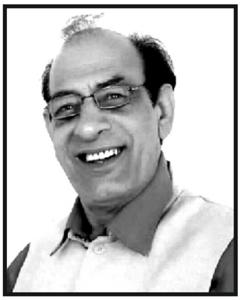

मेरी साहित्य साधना के आदि प्रणेता,
अन्तर्राष्ट्रीय-राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हास्य-व्यंग्य कवि,
साहित्य प्रेमियों के दिलों की धड़कन,
आदित्य-अल्हड़ पुरस्कार से सम्मानित
स्वनाम धन्य आदरणीय गुरुदेव
श्री हलचल हरियाणवी जी को सादर समर्पित।

आशीर्वचन

साहित्य ही मानव के विकास का मार्ग है। इसी के सहारे मानव आगे बढ़ता है। साहित्य संस्कृति ही हमारे संस्कार मजबूत करने में सहयोग करती है। किसी भी शब्द की पहचान उसकी संस्कृति पर आधारित है । भारतवर्ष में हरियाणा एक ऐसा प्रदेश है जहां पर अनेक कवि, लेखक, विद्वानों ने विरासत को संजोए रखा है। हरियाणा कृषि प्रधान प्रदेश कहलाता है किंतु इसके साथ-साथ वीरता में भी किसी से कम नहीं है। यहां का इतिहास बहादुरी की एक मिसाल है। आज भी देश की सीमा पर तैनात हरियाणा के फौजी हर तीसरे घर से मिल जाएंगे। कृषि और रक्षा के साथ-साथ यहां के लोग कला-साहित्य में भी किसी से कम नहीं है। यहां हंसी-मजाक तथा मस्ती और बेधड़क लोग जीवंतता का उदाहरण हैं। हर गांव में कुछ ऐसे लोग होते हैं जो अपनी विशेष पहचान बनाए रखते हैं। कोई खिलाड़ी, पहलवान, रेसलर तो कोई कंपीटीशन रागनी सॉन्ग आदि में पहचान स्थापित करते हैं। घंटू भी गांव का एक ऐसा पुरुष पात्र है जो अपने कारनामों के कारण गांव में ही नहीं आसपास के गांवों में भी चर्चित रहता है। यह उसके द्वारा किए गए कारनामों के कारण लेखक ने घंटू के इर्द-गिर्द अनेक प्रकार की घटनाओं को संजोकर एक पुस्तकाकार दिया है। इस प्रकार की शायद यह पहली पुस्तक होगी जो अन्य से अलग हटकर विषय उठाया गया है। इसके दिलचस्प और हरियाणवी सभ्यता संस्कृति की अनोखी जुगलबंदी का छोटी-छोटी घटनाओं को संग्रह किया गया है। जिससे यह पुस्तक अपनी अलग पहचान बनाती है। शुरू से अंत तक रोचक घटनाक्रम आते हैं और पाठक पढ़ते-पढ़ते बोर भी नहीं हो पाते, यह इस पुस्तक की विशेषता है। मैं **त्रिलोकचंद फतेहपुरी** जी द्वारा **'घंटू के कारनामें'** नामक पुस्तक के लिए शुभकामनाएं देता हूं और पाठकों से निवेदन करता हूं इसे जरूर पढ़ें और घंटू के अच्छे-अच्छे कारनामों की प्रशंसा करें। आशा है पाठक इस पुस्तक का सम्मान करेंगे। इन्हीं आशाओं के साथ मैं पुनः त्रिलोकचंद फतेहपुरी को मेरी शुभकामनाएं, शुभाशीष ।

शुभेच्छु

हलचल हरियाणवी, हास्य-व्यंग्य कवि
बीकानेर, रेवाड़ी (हरियाणा)
फोन : 9466084381

माटी की महक से सराबोर है- 'घंटू के कारनामे'

कुछ कुपढ़ लोग हरियाणा प्रदेश की संस्कृति के बारे में एक जुमला उछालते रहे हैं कि यहां कल्चर के नाम पर सिर्फ एग्रीकल्चर है, जबकि वे यह नहीं जानते कि एक ओर जहाँ एग्रीकल्चर खुद में सबसे बड़ी कल्चर है, वहीं दूसरी ओर देश और दुनिया में अपने स्वर्णिम सैनिक संस्कृति के लिए विख्यात रहा हरियाणा प्रदेश लोकसंस्कृति के क्षेत्र में भी राष्ट्र का प्रथम पालना रहा है। अपनी अनूठी लोकसंस्कृति के लिए लब्ध प्रतिष्ठ रहे इस हरे-भरे प्रदेश की तमाम खूबियों को इस हरियाणवी रचना से समझा जा सकता है-

हरियाणा यो जाण्या जा सै, रण म्हं हाथ दिखाणे म्हं
सोन्ना खेत उगाणे म्हं अर गीत-रागनी गाणे म्हं
हँसने और हँसाने म्हं अर हँस हिंद पै मिट ज्याणे म्हं
चारूं बेद पढ़ाणे म्हं अर गीत्ता ग्यान सुनाणे म्हं
खेल्लां म्हं मैड्डल ल्याणे म्हं, यो हरदम आग्गै पाया
हुया हरि का आना जब यो हरियाणा कहलाया
भारत भर म्हं सबतै न्यारा यो परदेस बताया

जो महत्त्व हरियाणा प्रदेश का उपरोक्त खूबियों के चलते देशभर में है, वही महत्त्व माँ-बोली हरियाणावी का सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में रहा है। इस प्रदेश की लोक नाट्य परंपरा भी बेहद समृद्ध रही है। हिंदी साहित्य की शायद ही कोई विधा हो, जिसे हरियाणवी में नहीं लिखा गया हो। यही कारण है कि हरियाणवी का अपना विपुल साहित्य है। उत्तर भारत के समूचे हरियाणा के अलावा दिल्ली, पश्चिमी उत्तर प्रदेश तथा राजस्थान का अलवर क्षेत्र आदि के बड़े भूभाग पर इसे बोला जाता है। हरियाणा प्रदेश के खादर, बांगर, मेवात, बागड़, ब्रज, अहीरवाल आदि क्षेत्रों की अपनी-अपनी बोलियाँ हैं। इन सभी उपबोलियों की अपनी-अपनी मौलिकता एवं अपनी-अपनी मिठास है। इन सभी का अपना विशेष महत्व है। यहाँ एवन-तहलका तथा एंडी हरियाणा जैसे हरियाणवी के अपने इलेक्ट्रॉनिक चैनल हैं, लणीहार, पींग जैसे हरियाणवी के पत्र-पत्रिकाएँ रहे हैं। आज की पीढी के रचनाकार भी विभिन्न विधाओं में हरियाणवी में निरंतर अपनी रचनाधर्मिता दे रहे हैं।

शिक्षा विभाग से हिंदी प्राध्यापक के तौर पर सेवानिवृत्त त्रिलोक चंद फतेहपुरी एक ऐसे ही रचनाकार हैं, जिन्होंने हिंदी तथा हरियाणवी में बहुआयामी लेखन के अलावा

काव्य मंचों पर निरंतर अपनी विशिष्ट उपस्थिति दर्ज कराई है। **'घंटू के कारनामे'** नामक उनकी पांचवीं पुस्तक में हरियाणवी माटी की महक को महसूस किया जा सकता है। हरियाणवी पात्र घंटू के माध्यम से रचनाकार ने हरियाणवी लोक जीवन की सतरंगी छटाओं को विभिन्न प्रसंगों के माध्यम से जीवंतता के साथ प्रस्तुत किया है, जिनमें कहीं हरियाणवी हास्य के रोचक उदाहरण हैं तो कहीं सामाजिक विसंगतियों एवं विद्रूपताओं पर करारी चोट साफ तौर पर समझी जा सकती है। संग्रह की इन कहानियों में हास-परिहास के बीच अनेक गूढ़ संदेश भी छिपे हुए हैं। हरियाणवी लोकजीवन के बहुआयामी पक्षों को मुखरित करती, कृति की रचनाएँ प्रदेश की लोक संस्कृति का दर्पण कही जा सकती हैं। गांव-देहात में प्रचलित विभिन्न लोक किस्सों को एक पात्र घंटू के माध्यम से प्रस्तुत कर के रचनाकार ने इसे लोक कथानको की एक सुंदर माला बना दी है, जिनमें लोक जीवन में रचे बसे अनूठे संदेश हैं, हरियाणा का पर्याय कहे जाने वाला मौलिक हास्य है, लोक संस्कृति के विभिन्न पक्षों का मार्मिक शब्दचित्र हैं, लोकजीवन की बहुरंगी तस्वीर है। हरियाणवी भाषा को इसके ठेठ उच्चारण के मुताबिक लिखना सहज नहीं है, जिसकी बानगियाँ इस संग्रह में भी देखी जा सकती हैं।

संग्रह की भाषा बेहद सरल व सहज है। कहने का अंदाज चुटीला व अनोखा है। लोक में बिखरे इन किस्से कहानियों को रचनाकार ने अपनी सच्ची साधना से मौलिकता के साथ एकत्रित कर कलमबद्ध करके बेहतरीन कार्य किया है, जिसके लिए वे बधाई एवं साधुवाद के पात्र हैं।

यह संग्रह लोक संस्कृति तथा लोक साहित्य के मूल तत्त्वों को सहेजने तथा माँ-बोली हरियाणवी के साहित्य को समृद्ध करने में विशेष भूमिका निभाएगा-ऐसा विश्वास है। **श्री त्रिलोक फतेहपुरी** जी के उज्ज्वल साहित्यिक भविष्य एवं स्वास्थ्य की अनंत शुभकामनाओं सहित।

सत्यवीर नाहड़िया
(कवि, लेखक एवं स्तंभकार)
257, सेक्टर-1, रेवाड़ी (हरियाणा)
फोन : 8168507684

शुभकामना

अगर हम भारतीय साहित्य के इतिहास पे नजर डालाँ तो सबतैं पहल्याँ बडकहा नामक कहानियाँ लिखी जाण के सबूत मिलैं सैं। ये कहानियाँ बड़ी सरल और सरस सैं। उसके बाद धीरे-धीरे साहित्य की दूसरी विधाओं का विकास होता गया अर आगै चाल कै इसकी दो धाराएं बणग्यी, जिस म्हं व्याकरण के नियम पूरे अपणाए गए। जो शिष्ट साहित्य, सीधी सादी बात नै न्यूं की न्यूं कह दे वो लोक साहित्य। लोक साहित्य मन के विचारां नै लोकगीत, लोककथा, कहानी, वैगरा कई तरहां के माध्यम तैं कहता आया सै। लेकिन विद्वान कहलावण के चक्कर म्हं पढे लिखे लोग कठिन तैं कठिन भाषा का इस्तेमाल अपणी बुद्धिमता दिखावण खातर करण लागग्ये अर लोक साहित्यकारां नै दोयम दर्जे का समझण लागग्ये। वो शिष्ट साहित्य के रचियता अपणे लेखन पै इतरावण तो लागग्ये पर आम जनमानस नै उनके क्लिष्ट साहित्य तैं किनारा करणा शुरू कर दिया। ईब हाम सब जाणा सां दुल्हन वही जो पिया मन भावै।

सन् 1960 के आसपास विश्वविद्यालयों नै लोक साहित्य म्हं पी एच डी कराणी शुरू कर दी और ईलाहाबाद विश्वविद्यालय तैं डॉ शंकर लाल यादव नै हरियाणवी लोक साहित्य पर शोध पूर्ण कर्या जो मील का पत्थर कहया जा सकै सै। उसके बाद तो बहोत सा साहित्य लिख्या गया पर वाहे दिक्कत फेर आग्यी कि परिवेश अर कथानक तो हरियाणवी पर शब्द शुद्ध हिंदी के, जिस कारण हरियाणवी शब्द लुप्त होण लागग्ये। इब कुछ साल तैं लेखकां का ध्यान फेर इस तरफ गया अर हरियाणवी शब्दां का प्रयोग, हरियाणवी परिवेश अर कथानक के लिए कर्या जाण लाग्या। जिसतैं लोकसाहित्य की सहजता, सरलता और मिठास बणी रहै अर लोक की बात, लोक के द्वारा लोकभाषा म्हं, लोकमन म्हं सीधी उतरज्या। कुछ हरियाणवी की मुखालफत करणीये कहण लागे, कौण सी हरियाणवी कौरवी, खादरी, बाँगरू, बागड़ी, देशवाली अक अहीरवाटी या मेवाती। मेरा मानना योह सै के माँ तो माँ ए हो सै उसके दो की बजाय तीन-च्यार लड़के होज्यां तो कोणसा लड़का न्यूं कहैगा, के या मेरी माँ कोन्यी या माँ न्यूं कहैगी के यो मेरा बेटा कोन्यी। सारी उपबोलिया हरियाणवी सैं अर जितणी ज्यादा उपबोलियां के देशी शब्द हाम इस्तेमाल करांगे, उतणी ए समृद्ध म्हारी हरियाणवी होती जावैगी।

श्री त्रिलोकचंद जी नै आपणी इन कहाणियां म्हं सरल अर सरस भाषा का इस्तेमाल करते हुए जो देशी माणसां की स्याणपत, भोलापण, यानी सब तरहां का कार व्यवहार ज्यूं का त्यूं लिख दिया अर एक न्यारी लीक पाड़ दी बिना किसै लाग लपेट के

लिखण की। उम्मीद सै बाकी लेखकां का ध्यान भी इस सरल अर सरस शैली पै जा गा अर आगली पीढी नै हाम अपणी पाछली पीढी की बात हुबहू पहोंच्यां द्ूयांगे तो उनका रूझान इन लोकमाणस की कणी मणियां न समझण अर हर अजमायस पर खरे उतरण आल़े इस लोकज्ञान के अनमोल भंडार नै संजोवण पै लाग ज्यागा। मैं आपणी सारी शुभकामनाएं **श्री त्रिलोकचंद** को देता हूँ कि इनकी पुस्तक समाज के काम आवै अर हर पढणिया इसका लाभ ठावै। सारे पढणियां नै राम राम।

लोकसाहित्य का एक पुजारी

रामफल चहल

रोहतक, हरियाणा

फोन : 8059615404

छत्तीस मणियां की अनोखी माला़

मनै अपणा जीवन मैं बहोत घणी किताब पढी, पर या किताब जिब पढी तो सबतै अलग हटकै मिली, पढयां पाछै जी सा आग्या। **'घंटू के कारनामे'** इस किताब म्हं रिटार हिंदी के प्रवक्ता श्री त्रिलोक चन्द फतेहपुरी नै अपणे जीवन मैं काम आण आली़ बातें मखोल म्हं हँसा-हँसा कै इसी सुथरी ढाल़ समझायी सीं अक पढण आला़ एकै सांस मै सारी किताब पढजाग्या। छत्तीस मणियां की इस अनोखी खुशबूदार माला़ के हर एक मणियां म्हं घंटू की एक न्यारी महक सै। लिखणिया नै बी चाला़ पाड़ दिया बेरां ना कित-कित तै ढूण्ड-ढूण्ड कै आखर लाया सैं एकबै जो पढण लागग्या तो हँस-हँस कै लोट पोट हो ज्यागा, या मेरी गारंटी सै।

इस किताब के हर एक किस्से एक तै बढकै एक सैं अर सबतै बढिया बात हँसण कै साथ-साथ हर एक किस्से म्हं एक बढिया सीख मिलै सै जो आज के जीवन मैं घणी जरुरी सै। करम का करम अर धरम का धरम इस लोकोक्ति को सिद्ध करते हुये लेखक नै हास्य बी अर सीख बी अपणी माँ बोली हरयाणवीं भाषा मैं बड़े ही सरल ढंग तै पाठकां के सामणै परोस दी सैं। या किताब सारे भाण भाइयां खात्यर पढण जोगी किताब सै या किताब अपणी बणावट अर बुणावट मैं घणी कामल सै। **त्रिलोकचंद** जी अपणी इस हरयाणवी किस्से **'घंटू के कारनामें'** किताब से अपणी भूमिका को और घणी करडी करेंगे ऐसा मंनै पूरा विश्वास ही नहीं पूरा भरोसा सै।

मेरी आप सब तै हाथ जोड़ कै याहे एक छोटी सी अरज सै आं किताब नै खुद पढकै औरां नै बी पढाइयो। अनन्त शुभकामनाओं के साथ मेरी थम सबनै हाथ जोड़ कै राम-राम, जय राम जी की।

थारा लाडला

दलबीर फूल, लोक कवि व गायक

गांव-लिसान, रेवाड़ी (हरियाणा)

बात न्यूँ सै कि...

हरियाणा अर हरियाणवी बोली की सारी दुनिया म्हं धाक सै। इसकी खास बात तो बोली की सै, पर मैं तो दक्षिणी हरियाणा के अंतिम छोर का रहण आला़ सूँ। मेरे इस इलाके म्हं हरियाणवी बोली का लेशमात्र भी लहजा ना सै। अर मनै भी हरियाणवी कती ना बोलणी आवै। पर फेर भी मनै अपणे प्रदेश की भाषा, बोली अपनावण की कोशिश करी सै। म्हारी या लठमार बोली किसै किसै नै हास्सी मजाक जिसी लाग्ये सै। जै कोय, किसै घटना का जिक्र करण लागज्या तो वा ही बात, चुटकुला या किस्सा बणज्या सै। चौपाड़ कै बीच बैठे हुक्का पाड़ण आले़ माणस इसै किस्से बहोत सुणावै सैं। किस्से बणाण आली़ सामग्री तो, म्हारे चारों तरफ बिखरी पड़ी सै। बस उस सामग्री नै समेट कै लाग लपेट लगा कै परोसणा चाहवै। चाहे सुणा दे या लिख दे। मैं अपणी या पाँचवीं किताब थारे साम्हे 'घंटू के कारनामें' हरियाणवी किस्साँ की ही लेके आया सूँ। मनै अपणे आसपास कोय भी घटना देखी या सुणी वा ही घंटू तै जोड़ण का प्रयास कर्‌या सै। घंटू एक जीता जागता माणस हरेक घटना का पात्र सै। इसके आच्छे अर बुरे कारनामें इस किताब म्हं संकलित करे सैं।

'घंटू के कारनामे' पुस्तक के लिखण म्हं मेरे गुरु जी, हास्य-व्यंग्य कवि **श्री हलचल हरियाणवी** जी का पूर्ण आशीर्वाद मिला सै। पुस्तक का नाम करण भी उन्हीं के द्वारा किया गया सै। हरियाणा के जाने माने सुविख्यात कवि एवं साहित्यकार, आकाशवाणी रोहतक के पूर्व निदेशक **श्री रामफल चहल** जी का विशेष सान्निध्य व सहयोग मिला, हरियाणवी भाषा के सचेतक, कवि एवं साहित्यकार, समीक्षक, विज्ञान विषय के व्याख्याता **श्री सत्यवीर नाहड़िया** जी का विशेष प्रेम व सहयोग रहा, हरियाणवी के लोककवि एवं गायक कलाकार **श्री दलबीर 'फूल'** व सुप्रसिद्ध समीक्षक, समालोचक त्रिभाषी विद्वान **श्री नेमीचंद शांडिल्य** जी ने सलाहकार और प्रूफ रीडिंग की भूमिका निभाई सै। मैं आप सब विद्वानां का खरे दिल तै आभार प्रकट करूँ सूँ, धन्यवाद करूँ सूँ तथा भविष्य म्हं भी थम मेरा सहयोग करोगे या कामना भी करूँ सूँ। **शब्दांकुर प्रकाशन** नई दिल्ली के प्रकाशक का **श्री काली शंकर** सौम्य भी मैं खर्‌या-खर्‌या आभार प्रकट करूं सूं।

सभी पाठकाँ तै भी हाथ जोड़ के निवेदन करूँ सूँ कि मेरी या पुस्तक **'घंटू के कारनामें'** थम एक बार जरूर पढ़ियो अर थमने ये किस्से किसै लाग्ये, मनै जरूर बताइयो। मैं थारे फोन का इंतज़ार करूँगा। आप सब नै मेरी हाथ जोड़ कै राम-राम।

धन्यवाद।

थारा लाडला

त्रिलोक फतेहपुरी, अटेली, हरियाणा

फोन : 9992381001

अनुक्रम

घंटू की होशियारी : 17
साँप का बहम : 20
दारू पिटे थी : 23
अनोखी शर्त : 25
घंटू का फैसला : 28
चौबै बणग्या दूबै : 31
घंटू खाग्या भूंडिये : 34
घंटू की दादागीरी : 37
घंटू के कारनामे : 40
बदला : 42
घंटू की झांकी : 45
घंटू का झोटा : 47
घंटू फकीर : 50
इब तो घी के चसग्ये : 52
कुबध की जड़- दारू : 55
अंडर पास : 57
घंटू झोला छाप : 60
दोगला गवाह : 63
घंटू ठेकेदार : 66
घंटू की दौड़ : 69
लेणे के देणे पड़े : 71
बिदकनी घोड़ी : 74
पोल खुलग्यी लालच की : 76
सपने म्हं लुटग्या : 79
बिन बात का पंगा : 83
तीस मार खां : 86
लापरवाही : 88
अनाड़ी अकल : 91
पुलिसिया रोब : 95
घर जमाई : 98

गंड्याँ की पूली : 101
चौबारे म्हं ऊँट : 104
गलती का अहसास : 107
अंधविश्वास की हद : 110
आंधा मास्टर : 113
सगाई आले़ खेत : 116

1. घंटू की होशियारी

एक बै घंटू नै किसै काम कै लिए चंडीगढ़ जाणा पड़ग्या। घंटू पहली बार ही चंडीगढ़ गया था। जिब बस अड्डे पै पहुँच ग्यी तो घंटू एक ऑटो आल़े तै बोल्या-हाई कोर्ट चाल्लैगा ?

ऑटो आल़ा बोल्या-हाँ चाल्लांगे।

घंटू बोल्या-भाड़ा बता?

ऑटो आल़ा बोल्या-ताऊ पूरे दो सौ लागैंगे।

घंटू बोल्या- घणै मांग्ये सै? यो हाईकोर्ट रह् या ?

ऑटो आल़ा बोल्या- पैदल चाल्या जा ?

घंटू दूसरे तै बोल्या, उसने ढाई सौ मांग लिए। इब घंटू चक्कर म्हं पड़ग्या? अड़े तो पीसै घणै ज्यादा मांगे सै? अर पैदल का रस्ता मालूम ना था। फेर अड्डे पै जा लिया अर बस म्हं बैठ लिया। जिब हाईकोर्ट आग्या तो कंडक्टर नै आवाज़ लगाई- हाईकोर्ट आल़े उतरल्यो। घंटू झट खड़ा हुया अर दरवाज़े नै जोर तै खींचा पर वो कोन्यी खुल्या। वो था प्रेशर डोर पर घंटू नै जिब पूरा हांग्या लगाया तो चौखट समेत पाड़ दिया। उसके नट बोल्ट सारे बिखरग्ये। ड्राइवर नै एकदम ब्रेक मारे अर सीट तै ऊठ कै दरवाज़ा चैक करा तो दरवाज़ा तो बिखरा पड़ा था। घंटू तो उतर कै चाल पड़ा, पर ड्राइवर नै भाग कै घंटू पकड़ लिया।

ड्राइवर बोल्या- इस दरवाजे के पीसै लिकाड़? यो तन्नै तोड़ा सै ?

घंटू बोल्या- मेरा कै दोष सै? मनै तो

खोल़ण ताहि हाथ ही लगाया था अर यो खुलग्या। कै बेरा यो पहल्या का ही टूटा पड़ा हो ? मेरा कोय दोष ना सै ?

लोग कठ्ठे होग्ये अर घंटू मौका देख कै खिसक लिया। बस चली गई जिब घंटू कै जी म्हं जी आया।

घंटू सारा दिन हाईकोर्ट म्हं बैठा रहा पर वकील ना मिला। वकील धोरै फोन कर्‌या वो बोल्या इब्बे आया पर सांझ होग्यी वो ना आया। इब घंटू चंडीगढ़ म्हं चक्कर काटता रहा पर ठहरण का कोय ठिकाणा ना मिला।

एक रिक्शे आल़े तै पूछी- अरै अड़े कोय धर्मशाला मंदिर हो, रात काटणी थी ?

रिक्शे आल़ा बोल्या- यो तेरे साम्हे होटल रहा इत काट ले।

घंटू ने देख्या कि होटल तो सुथरा सै। ले धर्मशाला अर मंदिर तो कै पता ठहरण दे अक ना पर इस का ही पता करल्याँ। घंटू होटल म्हं चाल्या गया।

रिसैप्शन आल़े तै पूछी- भाई एक रात काटणी सै कोय कमरा खाली हो तो ?

होटल आल़ा बोल्या- ओह ! स्योर, वैलकम।

घंटू कै समझ म्हं ना आई कि यो कौणसी भाषा बोल्ये सै, पर बोल्या- हाँ कम पीसै आला ही चाहवै सै।

होटल आल़ा हिंदी म्हं बोल्या- सुण ताऊ एक कमरा पाँच सौ रुपये का सै। अर काल बारह बजे खाली करणा पड़ेगा जै बारह बजे खाली ना कर्‌या तो एक दिन के पीसै पाँच सौ देणे पड़ेंगे।

घंटू बोल्या- ठीक सै?

होटल आल़ा बोल्या- ल्या तेरा आई कार्ड दिखा दे ?

घंटू बोल्या- कै दिखाऊँ भाई? मनै ना बणवा राख्यी आँख। इब्बे तो दीखै सै। मनैआई कार्ड की कै जरुत सै?

होटल आल़े नै समझा यो हमनै उल्लू बणावै सै पर खैर कोय बात ना, बोल्या- कित तै आया सै ?

घंटू बोल्या- अपणे घर तै।

होटल आल़ा बोल्या- गाम का नाम ?

घंटू बोल्या- बिचपड़ी

होटल आल़े नै गाम नाम लिख कै फोन नंबर लिख लिए अर घंटू के दस्खत ले लिए अर कमरा दे दिया । घंटू होटल म्हं चाल्या ग्या। बढिया बिस्तर, सौफा, कुरसी मेज देख के चकरा गया। एक बैरा पाणी ल्याया अर फेर रोटी ले आया। घंटू नै इसी

थाली भरी कदे पहल्याँ ना देखी थी, चाँ म्हं भर कै खाग्या। बहोत सुवाद आया। सोग्या सवेरे वेटर चाँ लेके आ खड़ा हुया।

इब घंटू नै सोच्यी कि होटल आल़ा पीसै लेग्या अर पीसै तो थोड़े ही सै तो उसने एक तरकीब सूझी। घंटू ने देख्या कि कमरे की गैलरी म्हं एक शीशे की खिड़की सै। मैं इस म्हं तै कूद जाऊँ?

घंटू नै कमरे कै भीतर तै कुंडी लगा कै आच्छे ढंग तै बंद कर दिया अर खिड़की म्हं तै कूदग्या। खिड़की फेर बंद कर दी, पर बाहर जाण का रस्ता कोन्यी पाया। चारों और घूमता रहा। फेर घंटू रिसेप्शन पै जा पहुंचा अर भीतर चाल्या गया। होटल आल़ा देख रहा था। घंटू कमरे तक गया फेर उल्टा आग्या अर रिसेप्शन आल़े तै बोल्या- कमरा कोन्यी खुलै ? तेक चाल कै खोल दे ? होटल आल़ा गया तो कमरा भीतर ते बंद था। घंटी बजाई पर कमरे नै खोल्ये कौण? हार के होटल आल़ा घंटू तै पूछताछ करण लाग्या। आप बाहर कब गये? दरवाज़ा खुला छोड़ग्ये थे या बंद करग्ये थे। घंटू ने सारे सवालाँ का जवाब दिया अर बोल्या- सुण मेरे पीसै भी भीतर सै। मेरा सामान कपड़े लत्ते भी भीतर ही सै। मनै ना पता मेरा सामान अर पीसै दे द् यो इब म्हं कोर्ट म्हं ज्यांगा।

होटल आल़ा बोल्या- दरवाजा तोड़ना पड़ेगा? पर ताऊ दरवाज़ा तो पूरे दस हजार का सै। अर तेरे रुपये कितने होंगे?

घंटू बोल्या- मेरे तो दो हजार ही सै?

होटल आल़ा बोल्या- तेरा बिल भी तो हजार का सै।

घंटू बोल्या- थम मेरा फैसला कर द् यो चाहे दरवाजा तोड़ो या फेर जैसी थारी मरजी। चाहो तो पुलिस बुलाल्यो? नहीं तो ल्यो मैं बुला ल्याऊँ पुलिस नै।

होटल आल़ा बोल्या- ताऊ तू अपणे एक हजार पकड़ अर अड़े तै जा। हमने किसै पुलिस की जरूरत ना सै। मिस्त्री नै बुलावांगे अर वो आ कै दरवाज़ा खोल देगा। तू चाहवै तो अपणा सामान ले जाइये।

घंटू तो एक हजार ले अर छूट लिया। पाछै फिर कै भी ना देख्या अर हजार कमा के ल्याया।

तीन घंटे बाद होटल तै फोन आया। यहाँ आपका सामान सुरक्षित है पैसे भी मिल गये सै पर ताऊ एक बै होटल आणा पड़ेगा।

ताऊ समझग्या कि या तो होटल आल़ा की कोय चाल सै।

घंटू बोल्या- वो सामान अर पीसै थारे। मैं तो अपणे घरां जा लिया। फेर कदे देख्यांगे ? 😂😂😂

2.

साँप का बहम

एक बै घंटू के घर म्हं साँप घुसग्या। उस साँप नै घर म्हं घुसते हुये घंटू की घर आल़ी नै देख्या था। वा घंटू तै बोल्यी- सुणै सै कै, म्हारे घर म्हं साँप आग्या। अर तू उसने मारिये ना, कदे मार दे।

घंटू बोल्या- म्हारे घर म्हं साँप क्यूँ कर आग्या? एक डंडा ल्या, इब्बे मारूँगा?

उसकी घर आल़ी बोल्यी- तनै के सेधै सै? पड़ा रहण दे। आपै चाल्या ज्यागा। अर फेर सावण के महीने म्हं तो साँप नै कोय भी ना मारै? इस महीने म्हं तो साँप देवता बण कै आवै सै। अर सबका भला ही करै सै। तब मैं तनै कहूँ सूँ कि इस नै मतना मारै।

घंटू बोल्या- जै यो तनै काटग्या तो देवता बणा कै पूज लिए। यो काल सै काल़, कै तेरा अर कै मेरा। कदे तू इसने देवता बणा दे सै, कदे पीत्तर बता दे सै। तू एक डंडा ल्या, मैं बणाऊँ इसका देवता। जै देवता हुया तो यो मारे तै भी ना मरेग्या। अर जै हुया साँप तो काम तमाम सै। घंटू एक डंडा ले के साँप नै ढूँढण लाग्या पर साँप कोन्यी मिला। बेरा ना कितै और जगहां छुपग्या पर जै घर म्हं हुया तो लिकड़ेग्या जरूर, या फेर तू झूठ बोल्ये सै। जिब घंटा एक हो लिया तो एक काल़ा साँप आंगण म्हं सीधा घंटू कान्यी चाल्या। इब घंटू तो त्यार ही बैठ्या था। डंडा ठा के मार थोबड़ा, मार थोबड़ा कती फण नै धरती के चेप दिया। डंडे नै पीटण की

आवाज़ सुण कै उसकी घर आल़ी धप्पो भाग्यी आई अर बोल्यी- रै घंटू! तनै यो कै करा? तेरे तै कही थी मारिये मत ना, यो आपै चला ज्यागा, पर तू मेरी कित मानै था?

घंटू मरे साँप नै ठा के दूर गड्ढे म्हं दाब आया, अर घर आल़ी ते बोल्या- धप्पो, इब मिटग्या तेरा खटका? वो तो साँप ही था पीतर ना था?

जिब सांझ हुई तो घंटू की घर आल़ी फेर बोल्यी- हे भगवान, इब कै कराँ? यो तो जोड़ा था अर यो दूसरा भी आग्या। इब यो तो बदला लेग्या? घंटू नै बता आऊँ। घंटू जिब घर म्हं आया तो उसकी घर आल़ी बोल्यी- घंटू मैं तनै मना करी थी कि साँप नै ना मारिये। हाँ इब दूसरा भी आ लिया। सारी दुनिया नै बेरा सै कि सावण के महीने म्हं जोड़ा होवै सै। तै एक नै मार दिया इब दूसरा भी घर म्हं आग्या।

घंटू बोल्या- तू न्यूँ बता कि तनै देख्या सै?

घर आल़ी बोल्यी- हाँ उस बोरी के नीचे लागै सै ?

घंटू फेर उसै डंडे नै ठा कै ल्याया। साँप कोणे म्हं कुंडली मार कै बैठा था अर उस के साथ ही हांडी, कूंडे, बरतन पड़े थे। इब जै घंटू मारै तो हांडी कूंडे फूटै अर साँप का बेरा ना मरे ना मरे, पर घंटू नै एक डंडा मार्‌या तो साँप घंटू कान्यी लपक्या। इब तो साँप बरतनां तै खुद ही बाहर आग्या अर घंटू नै डंडे तै उसने भी मार दिया। फेर उसने भी ठा कै दाब आया।

जिब रोटी खा कै सोग्ये तो रात नै घंटू की घर आल़ी सपने म्हं बड़बड़ाण लाग्यी- घंटू देख, यो आग्या साँप? घंटू यो आ लिया? अर तनै खावैगा? भाग घंटू भाग!

घंटू की आँख खुली, एकदम उठ खड़ा हुया अर डंडा ठा के ल्याया अर अपणी घर आल़ी तै बोल्या- री धप्पो, कित सै साँप? कै देखे धप्पो तो खर्राटें पाड़ण लाग री सै। घंटू फेर सोग्या, पर थोड़ी देर पाछै फेर धप्पो सपने म्हं बोल्यी- यो आग्या, यो आग्या! मार घंटू मार?

घंटू की तो आँख लाग्यी ही, पर डंडा ठा कै धप्पो तै बोल्या- धप्पो! कित सै साँप? धप्पो नै ज्यों हि घंटू की आवाज़ सुणी तो झट खड़ी हो गई अर ऊठ कै भाग पड़ी, बोल्यी- कित सै घंटू?

घंटू बोल्या- तू बता कित सै? तू दो बार कह चुकी। मैं तो त्यार बैठा सूँ, मारूंगा?

पर धप्पो बोल्यी- घंटू, मनै तो सपना भी साँप का ही आ रहा था। अर वो तनै डसण खातिर भाग्या आवै था।

घंटू बोल्या- इब चुपचाप सोज्याँ?

धप्पो नै तो नींद ही ना आई अर घंटू तै बोल्यी- ये लोग न्यूँ कहवै सै कि थमनै सावण म्हं साँप मारै सै इसका बदला साँप लेवेंगे।

जिब दो- तीन दिनां तक धप्पो न्यूँ सपने म्हं बड़कती रही अर घंटू की नींद खराब करती रही तो एक दिन घंटू नै भी छोह आग्या अर डंडा ले के सो ग्या। ज्योंहि रात नै धन्नो बड़बड़ाई कि यो आग्या साँप तो घंटू नै दो-चार डंडे धप्पो के फटकार दिये अर बोल्या- यो मार दिया। न्यूँ कह कै आँख मीच ली।

धप्पो के जिब डंडे लागै तो भाग पड़ी। अरे, मेरे किसने मारी? घंटू तै बोल्यी- घंटू, मेरे डंडे किसने मारै?

घंटू बोल्या- मनै तो सुपना आ रह् या था। सुपने म्हं तू न्यूँ बोल्यी-यो रहा साँप तो मनै डंडा ठा के उसके फटकार दिये। अर साँप भागग्या।

इस तरिया धप्पो तो दो डंडे खा कै सुपने लेणा ही भूल गई।

3.

दारू पिटे थी

घंटू म्हं बढिया खाण पीण की आदत थी। अर जिब पेट भर कै खा लिया करे था तो कुंभकरण की ढाल़ सो जाया करे था। फेर चाहे कोय ढोल पीटै जाओ घंटू कोन्यी जाग्या करे था। चाहे कितना ही जरूरी काम हो पर घंटू तो अपणी चादर ताण के सोया रहता।

एक बै फत्ते के छोरे का ब्याह था अर घंटू की लुगाई धप्पो सांझ नै गीत गाण चाल्यी गई अर घंटू तै बोल्यी- हाँ मैं फत्ते के गीत गाण जा री सूँ। तू रोटी खा लिए अर घर का भी ध्यान राखिये कदे पड़ कै सोज्याँ? मैं जल्दी ही आऊँगी।

जिब धप्पो चाल्यी गई तो घंटू कती आज़ाद होग्या। अपणी बोतल लिकाड़ी अर पीणा शुरू कर दिया। जिब आधी बोतल पीग्या तो नशा होग्या अर रोटी भी छिक कै खा ली तो घंटू नै अपणै पैर पसार दिये। खर्राटें पाड़ण लागग्या।

इब दरवाज़ा चौपट खुल्या पड़ा। कुत्ते आवै अर जावै। घंटू की बची खुची रोटी खाग्ये। सब्जी बिखेर दी। भीतर भी कुत्याँ नै इसा घमासान मचाया कि हांडी-कूंडे सब फोड़ दिये। कपड़े लत्ते तक फाड़ दिये और तो और घंटू के मूँह म्हं भी मूतग्ये अर जिब तक धप्पो ना आली तब तक घर म्हं कुत्याँ की महाभारत चालती रही, ज्यों हि धप्पो घर म्हं आई तो कै देखे घर म्हं तो कुत्या का महाभारत छिड़ रह्या सै। बर्तन भांडे सब फूट्चे पड़े सै। लत्ते गाभै सब झीरम झीर कर राख्ये सै। अर घंटू ठाठ तै खर्राटें पाड़ण लाग रहा सै। इब

धप्पो नै घर का बुरा हाल देख्या तो उसका पारा सातवैं आसमान म्हं चढग्या।

धप्पो ने एक मोटा डंडा ठाया अर पहल्या तो गिंडकाँ की खबर ली। डंडे खा-खा कै, प्योह-प्योह पुकारते भाज लिये। अर फेर घंटू के भी पड़े-पड़े कै कई डंडे फटकारे, पांच चार गाली भी लिकाड़ी।

जिब घंटू के डंडे पड़े तो पहल्याँ तो करवट बदलता रह् या पर फेर जिब सहा कोन्यी गया तब आँख खोल्यी तो देख्या कि कोय थाणेदार खड़ा सै?
फेर धीरे सै बोल्या- थाणेदार साहब इब-इब कै छोड़ द् यो फेर कदे ना पीऊँगा?

धप्पो बोल्यी- ना तू फेर पीवैगा ?

घंटू फेर आधी आँख मीच कै धीरे से बोल्या- ना जी फेर कदे ना पीऊँ। ल्यो नाक तै लीक खींच द् यूँ।

धप्पो बोल्यी- खींच नाक ते लकीर? खड़ा हो ले।
घंटू तै खड़ा कोन्यी हुया गया। हाथ जोड़ कै फेर सौग्या।

घंटू सवेरे जल्दी ऊठ जाया करे था। आज भी जल्दी ऊठ कै भैंस्याँ की गोबर भाहरी के लागग्या। धप्पो नै देख्या, आज तो भाज-भाज कै काम करै सै। रात आले डंडे काम करग्ये। धप्पो उसके खातिर चाँ बणा कै ल्यायी। दोनों बैठ कै पीवण लागग्ये, पर घंटू नीची गरदन करे बैठ्या रहा।

धप्पो बोल्यी- कै बात सै? क्यूँ कर नाड़ नीची कर राख्यी सै?

घंटू बोल्या- धप्पो सांझ नै तो बहोत बुरी हुई। मैं अर भूंडू, हम दोनों सांझ नै तिबारे म्हं बैठ कै दारू पीण लाग रे थे। थोड़ी देर पाछै पुलिस आग्यी अर हमने जिप्सी म्हं पटक लेग्ये। हम ने थाणे म्हं लेज्या म्हारी तलाशी ली अर फेर कंबल बिछवा कै अर हमने मोधा लिटा कै म्हारा पिछवाड़ा कती बांदर बरग्या कर दिया। पर हमने कै होश था। दारू पिटे थी। बस एक बार मुंह सै चीख तो लिकड़े थी। फेर हमने ना बेरा म्हारे साथ कै हुया? पर धप्पो तू न्यूँ बता मैं घर क्यूँ कर आया? मैं तो थाणे म्हं था। मनै कौण ले के आया?

धप्पो बोल्यी- तनै मैं ले के आई। बोल फेर पीवैगा? बेरी इब तो छोड़ दे?

घंटू बोल्या- इब कोन्यी पीऊँ। थाणे म्हं ही नाक रगड़ आया था।

इस तरिया सचमुच घंटू नै दारू पीणी छोड़ दई अर इब भूंडू नै भी

बोल्या- रै दारू छोड़ दे नहीं तो पुलिस पकड़ ले जावैगी अर कोय छुड़ा कै ना ल्यावैगा।

मन्नै तो मेरी लुगाई छुड़ा ल्याई अर तेरी तो लुगाई भी भाज री सै, पड़ा जेल़ म्हं सिड़ेग्या। जिब मैं न्यूँ कहूँ सूँ, इब तैं भी दारू छोड़ दें। डर के मारे सचमुच भूंडू नै भी दारू पीणी छोड़ दी। 😂😂😂

4.

अनोखी शर्त

घंटू अर भूंडू दोनों बालीबाल के बढिया खिलाड़ी थे पर दोनों की टीम अलग- अलग रहा करे थी। ज्यों हि सांझ के चार बजते दोनवाँ की टीम मैदान म्हं हाजिर रहा करे थी पर छुट्टी के दिन तो बड़ा जबरदस्त मुकाबला होया करे था। कई बार दूर-दूर तक खेलण जाया करे थे। ईनाम अर सील्ड भी जीत के ल्याया करे थे। एक बार तो मेल़े तै एक-एक मोबाईल फोन जीत के ल्याये थे। घंटू टीम का कैप्टन रहा करै था अर भूंडू वाईस कैप्टन। जिब वे जीत के आया करै थे तो गाम का सरपंच अर लंबड़दार पूरी टीम का फूल्याँ की माला पहरा के, डीजै के साथ पूरा मान-सम्मान करा करै थे। गाम का पंचायत भवन सील्ड अर मोमैंटो तै भर राख्या था। बड़े-बड़े शहरां के क्लब आल़े भी घंटू नै बढिया खिलाड़ी मानै थे। जिब कोय तीज त्योहार आज्या तो बालीबाल की टीम त्यार पावै थी। गाम के लोग लुगाई भी देखण आया करै थे।

एक दिन जिब दिवाल़ी का त्योहार आया तो घंटू बोल्या-भूंडू, काल दिवाल़ी सै अर दस बजे अपणी टीम नै त्यार कर लिये। जरूर खेल्यांगे?

भूंडू बोल्या-रहण दे बारह महीना का त्योहार सै। सारे लोग दिवाल़ी की त्यारी म्हं लाग रै सै।

घंटू बोल्या- अरै दिवाल़ी की कै त्यारी सै, लोग तो दिवाल़ी कै दिन जूआ तक खेले सै अर हम तो बालीबाल ही

खेल्यांगे ।

भूंडू बोल्या- घंटू मैं और खिलाड़ियाँ तै पूछ कै बताऊँगा। पक्की हामी कोन्यी भरूँ? अर तू भी तो पूछ सकै सै?

घंटू अर भूंडू नै और खिलाड़ियाँ तै पूछी वे सारे त्यार होग्ये। ठीक दस बजे सारे खिलाड़ी मैदान म्हं पहुँच ग्ये। घंटू अर भूंडू नै अपणी- अपणी टीम के खिलाड़ी बाँट लिये।

बदलू बोल्या- आज तो दिवाळी सै, फेर कोय शर्त? बिना शर्त कोन्यी गोड्डे तुड़ाये ज्याँ? लगा ले घंटू शर्त?

घंटू तो त्यार ही था, बोल्या- बोल भूंडू किसकी शर्त लगावै सै?

फत्ते बोल्या- इसी शर्त लगाओ जो पहल्याँ किसै नै भी कोन्यी लगाई हो। जिस तै या दिवाळी याद रहै ।

घंटू बोल्या- फेर फत्ते इब तू ही बता दे?

फत्ते बोल्या- अरै मेरे तै ना पूछो ? मेरा बिचार तो यो सै कि पाँच मैच खेल्याँगे अर तीन जीतणे पड़ेंगे अर जो टीम हारैगी वा काळै नाई तै गंजी टाँट करावैगी अर वा भी उस्तरे तै अर भाई पाँच किलो कलाकंद खुवाणा पड़ेग्या। जै मंजूर हो तो बता द्‌ यो?

सारे खिलाड़ियाँ नै शर्त मान ली। भूप्पी रैफरी सै। पूरी ईमानदारी बरतेग्या। दोनों टीमाँ के छः-छः खिलाड़ी अर एक रैफरी जुटग्ये मैदान म्हं।

जो शर्त लगाई थी उसकी खबर गाम म्हं पहुँच ग्यी। गाम के बालक अर लोग भी देखण आग्ये। दोनों टीमाँ म्हं इब एक नै तो गंजा होणा ही पड़ेगा? मैच बड़ा रोमांचक बणग्या जिब दोनों टीमाँ नै एक-एक पाळा जीत लिया। फेर मैच और मजेदार बणग्या जिब दोनों टीम्याँ नै दो-दो मैच जीत लिये। अर इब पाँचवें म्हं तो फैसला होणा ही था अर फैसला भी होग्या। भूंडू की टीम जीत ग्यी अर घंटू की टीम हारग्यी।

घंटू अपणे खिलाड़ियाँ पै झीखण लाग्या तो रैफरी बोल्या- ना घंटू किसै की कोय गलती ना सै। सारे बढिया खेले सै अर भाई हार- जीत तो खेल म्हं हुया ही करै सै।

घंटू बोल्या- हार की कोय बात ना पर यो फत्ते इब म्हारी गंजी टाँट करावैगा ?

फत्ते बोल्या- अरे कोय काळै नाई नै फोन कर कै बुलाओ। इनकी टाँट गंजी करवाणी सै ? असली दिवाळी तो इब्बे मनैग्यी।

काऌै नाई आग्या अर बोल्या- बोलो भाई मनै क्यूँ कर बुलाया सै? मैं तो अपणा काम छोड़ कै आया सूँ।

भूंडू बोल्या- इसतै भी आच्छा छोड़ कै आया सै कै? बोल, सिर पै उस्तरा फेरण कै कितने पीसै लेग्या?

काऌै बोल्या- आज दिवाऌी सै, एक आदमी के पचास ल्यूँगा? बोलो कौण-कौण त्यार सै ?

घंटू बोल्या- हाँ, आज तो पचास ही द् यांगे। कर दे शुरू काम। एक दो घंटू की टीम के खिसकण लाग्ये तो भूंडू बोल्या- ना भई न्यू ना सै, जाण कोन्यी द् यांगे। पहल्याँ गंजी करवाओ अर कलाकंद खिलाओ अर खाओ फेर अपणे घरां जाओ।

इस तरिया काऌै नाई नै घंटू की सारी टीम गंजी कर दी। फेर छिक कै कलाकंद खाया फेर सब जयकारा लगा कै अपणे-अपणे घरां चाल्ये गये।

जिब घंटू घर पहुंचा तो उसकी घर आऌी राशन पाणी ले के चढग्यी, बोल्यी- अनपूत्ते यो कै करवाया सै? सूणसामण गंजी टाँट। कौण मरग्या? जो तू गंजी करा बैठा? तनै बेरा कोन्यी था कै आज दिवाऌी सै। मनै तो तू पागल ही लागै सै। किसने दी या सलाह ?

घंटू बोल्या- बाल ही तो कटा कै आया सूँ। इसा कै होग्या? शर्त लगाई थी हार ग्या अर गंजी करवा ली।

उसकी घर आऌी बोल्यी- शर्त! क्याँ बात की शर्त? या भी कोय शर्त हुई, आण दे उस भूंडू नै मैं सुधारूँगी ?

घंटू बोल्या- हँसी खुशी का त्योहार सै किसै नै कुछ ना कहे। मजे तै दिवाऌी मनावांगे। अर या दिवाऌी तो याद रहवैगी। 😂😂😂

5.

घंटू का फैसला

घंटू गाम के उल्टे- सीधे, अलझ-पलझ मसले सुल झावण म्हं माहिर था। किसै का कोई मामला जिब घणा अटक ज्याँ तो वो घंटू धोरे जा लिया करै थे। अर घंटू उस मसले नै तुरंत सुल झा दिया करे था। वैसे भी मजबूत किस्म का माणस था। दो चार माणस हुक्का पाड़, बड़बोले पंच, लंबड़दार सरीखे उस धोरे बैठे रहवै थे। अर सारे गाम व बाजार की खबर, राजनीति की उठापटक जैसी खबराँ पै चर्चा करदे। हाँस्सी ठठ्ठे चालते रहवै थे।

एक बै एक सेठ के चार छोरे थे। सेठ कै धोरे तीन कोठी थी अर तीन ही दुकान थी। सेठ की तीनों दुकान बढिया चाल्लै थी। चारों छोहराँ का ब्याह कर राख्या था। आच्छा टेम पास हो रह् या था, पर एक दिन अचानक सेठ के दिल का दौरा पड़् या अर स्वर्ग सिधार ग्या, पर अपणी वसीयत तीन छोहराँ कै नाम करग्या। अर वसीयत म्हं नाम किसै छोहरे का ना लिख्या। ना जाणै या लिखण आला तै गलती हुई या सेठ नै जाणबूझ कै चौथे का नाम ना लिखाया। इब तो कोठियाँ अर दुकान का बँटवारा होणा लाजिमी होग्या। चारों छोहरे आपस म्हं रोजाना जंग मचावण लागग्ये। कई लोगाँ नै सलाह भी दई कि थम चारों आपस म्हं बाँट ल्यों, पर छोहरे बोल्ये- ना बापू बात कटै सै, बापू आल़ी बात कित रही? म्हारा बापू जो लिख कै गयो सै, हम वाही बात मान्याग्ये। बापू

का पूरा कहण पुगावाँग्ये ।

जिब मामला कोन्यी सुल झा तब एक दिन वे घंटू धोरै आग्ये अर बोल्ये – घंटू म्हारा फैसला कर दे । म्हारे बापू नै म्हारी जायदाद तीनों के नाम कर राख्यी सै अर नाम किसै का भी कोन्यी लिख्या । इब हम भाई चार सै ,बता हम क्यूँ कर बाँटा ? तू म्हारा सही सही बँटवारा कर दे ?

घंटू बोल्या – बापू तो मरग्या इब थम चार जगहाँ बाँट ल्यों ।

पर चारों कोन्यी मानै अर बोल्ये – बापू की इज्जत कै बट्टा लागै सै । बापू ने सोच समझ कै ही वसीयत बणाई सै । जिसा बापू लिख ग्या , थम उसी ढाल़ फैसला कर द् यो ।म्हारे बापू की बात भी रहज्या अर फैसला भी होज्या ।

घंटू फेर बोल्या– थम मान जाओ अर चार जगहाँ बाँट ल्यों ?

एक छोहरा बोल्या – ना घंटू , बापू भी सोच समझ के लिखग्या सै , तू बस एक बार न्यूँ बता दे कि म्हारे म्हं सै वो तीन कौण सै ?

जिब चारों ना माने तब घंटू बोल्या– थम जाओ, बजार तै एक सुथरी सी पगड़ी थारा बापू की खातिर ल्याओ।

चारों बजार म्हं चाल्ये गए अर एक दुकान तै एक बढिया महंगी पगड़ी ले आये। अर वा घंटू तै सौंप दी। घंटू नै एक गड्ढा खोद् या अर उस म्हं एक चार-पांच फुट का एक मोटा लठ्ठ खड़ा कर दिया। अर उसके ऊपर वा पगड़ी बाँध दी। अर फेर सेठ कै छोहराँ तै बोल्या-सुणो रै, यो थारा बाप सै। थम बारी-बारी तै इसके पाँच-पाँच जूते मारों। आओ सब तै पहल्या जो बड़ा सै वो आ जाओ।

सबतै बड़ा छोहराँ बोल्या– ना घंटू जिब यो मेरा बाप सै तो मैं इसके पैराँ म्हं धोक लगा सकूँ सूँ, पर जूते कोन्यी मार सकूँ। बापू जी मनै माफ कर दो। थारै जूतें मार के, मनै कुछ ना लेणा? ना घंटू, ना मैं अपणे बापू कै जूतें ना मार सकूँ। मैं तो बापू का लाडला रह् या सूँ। मनै तो माफ करो।

घंटू फेर दूसरे तै बोल्या– चलो दूसरे नंबर पै कूण सै ?

दूसरा भी यूँ ही बोल्या– ना घंटू, जिब यो म्हारा बापू सै, इसनै तो हमनै पढाया लिखाया सै, काम धंधा सिखाया सै, मैं अपणै बापू के जूते कोन्यी मार सकूँ।

फेर तीसरा आग्या अर बोल्या– ना मैं अपणे बापू के किस तरिया जूतें मार सकूँ सूँ। मनै पाल पोश कै काम धंधा लायक बणाया। मैं इसा काम कदे भी नहीं कर सकूँ। घंटू, मनै कुछ ना चाहिए।

फेर चौथे की बारी आई। घंटू बोल्या– तू सब तै छोटा सै अर तेरे भाइयाँ

नै तो सब कुछ छोड़ दिया। इब तू सोच लै, तनै कै चाहिए?

चौथे नै सोच्यी कि भाइयाँ नै तो सब कुछ छोड़ दिया तो इब मैं ही सारी जायदाद का मालिक बण जाऊँ। मन म्हं जायदाद का लालच आग्या, अर लिकाड़ कै अपणा जूता जिस लठ्ठ पै पगड़ी बाँध राख्यी थी, उसके पाँच जूते दे पड़ा पड़, दे पड़ापड़ मार दिये।

तब घंटू बोल्या- इब थम ही देख ल्यों? थम तीन तो सपूत सो अर यो चौथा कपूत सै। सेठ इसके नाम कुछ भी कोन्यी करग्या। थारै तीनों के ही नाम करग्या सै।

इतणा सणते ही चौथे की आँख खुली। इब चौथा रोवण लागग्या अर बोल्या- रै, मेरे तै तो बहोत बड़ी गलती होग्यी। मन म्हं लालच आग्या। इब मनै माफ कर दे घंटू। बापू जी मनै माफ कर द् यो। भाई मनै माफ कर द् यो। उन सबकै पैराँ म्हं लौटग्या।

घंटू बोल्या- तनै बेरा कोन्यी या सारी दुनिया कहण लाग री कि लालच बुरी बला सै, पर तू फेर भी ना समझ्या। थारै बापू के कहे अनुसार तो सारी जायदाद थारे तीनों की सै पर जै थम न्यूँ चाहो कि यो भी म्हारा ही भाई सै तो इसनै भी बाँट के दे सको सो। जै थारी मरजी सै तो, सोच ल्यों ?

तीनों भाई चौथे नै हिस्सा देण नै राजी होग्ये। इस तरिया घंटू ने सेठ की जायदाद का बँटवारा चार जगहाँ कर दिया। चारों छोहरे राजी हो कै अपणे घराँ चाल्ले गये।

6.

चौबै बणग्या दूबै

महंगाई नै कतई आदमी का दम लिकाड़ राख्या सै। कदे आलू महंगे होज्या सैं तो कदे टमाटर। कदे चीनी तो कदे गुड़। लहसुण अर अदरक की तो पूछो ही मत, पर इब कै तो प्याज नै कतई चाल्ये पाड़ दिये। जिब देश की राजधानी म्हं प्याज दो सौ रुपये किलो बिकण लाग्यी तो गरीब आदमी का तो जीणा ही दूभर होग्या। गरीब अर बीच आल़े तो इन सब नै ही खा कै गुजारा करै सै, पर इतनी महंगी प्याज क्यूँ कर खायी जा सकै सै?

घंटू का छोरा दिल्ली म्हं नौकरी कर्या करे था। अपणे बालक भी दिल्ली ले ज्या रा था। जिब प्याज महंगी होग्यी तो छोरे नै घंटू तै फोन कर्या बोल्या- बापू अड़े तो प्याज बहोत महंगी होग्यी अर अपणे तो घणी ही प्याज पड़ी सै। जै तू दो कट्टे भर ल्यावै तो मैं अड़े बेच भी द्यूंगा अर बची- खुची हम भी खाल्यांगे।

घंटू बोल्या- ठीक सै बेटा, मैं काल ए ल्याऊंगा दो कट्टे भर कै?

घंटू दो कट्टे प्याज भर कै टेशण पै पहुँच ग्या। गाड़ी म्हं बैठ कै दिल्ली जा पहुंचा। जिब कट्टे ठा कै चाल्या तो एक पुलिस आल़े नै पकड़ लिया अर बोल्या- रै, कै भर राख्या सै इन कट्याँ म्हं ?

घंटू बोल्या- साहब, प्याज सै।

पुलिस आल़ा बोल्या- प्याज सै? एक बार फेर बोलिये? दिखा कैसी प्याज सै ?

घंटू बोल्या- जी, ये प्याज ही सै।

सिपाही बोल्या- सुण, तू और कोय भी चीज ले जा सकै सै, पर प्याज कोन्यी लेज्या सकै। इसके तो ल्याण अर ले जाण पै बैन सै। कोय भी आदमी एक किलो तै ज्यादा ना लेज्या सकै। तेरे खिलाफ तो मुकदमा दरज होग्या? चल उठा ये कट्टे, थाणे म्हं चाल। अवैध धंधा करै सै। तनै बेरा सै अड़े तो प्याज दो सौ रुपये बिक री सै अर एक किलो तै ज्यादा कोय ना ले जांदा।

घंटू बोल्या- साहब मैं तो अपणे छोरे धोरै ले जाऊंगा। वो अड़े दिल्ली म्हं ही रहवै सै।

सिपाही बोल्या- उस छोरे नै भी फँसवावैगा कै ?

दोनों थाणे म्हं जा पहुंचे। जिब थाणैदार नै प्याज देखी तो एकदम टूट कै पड़ा अर बोल्या- रै झकोई, यो कित हाथ मार्या? अरे अफीम, चरस, गांजा, दारू बहोत पकड़ी सै पर आज तक इतनी प्याज ना पकड़ी गई। देखो और सारी चीज मिल ज्याँ सै पर प्याज कोन्यी मिलै? ल्यो भई सुवाद आग्या। घंटू तै बोल्या- तू ल्याया सै? नाम व पता बता दे? सही बताणा।

घंटू नै अपणा नाम पता सही-सही बता दिया।

थाणैदार बोल्या- बोल घंटू, तू कै चाहवै सै? बंद कर द्याँ तनै? देख कितना माल़ बरामद होग्या? अर मुलजिम भी हाथ आग्या? अर इस सिपाही नै, तनै पकड़ण की ईनाम भी मिलैगी। सारै अखबारों म्हं तेरी फोटू छपवावांगे। एक दिन म्हं स्टार बणज्यागा? सोच ले घंटू, दो ही तरहाँ के लोग प्रसिद्ध हुया करे सै, कै तो आच्छा काम करण आल़े या फेर कोय अवैध धंधा करण आल़े। एक नै ईनाम मिला करै सै तो दूसरे नै जेल। तू न्यूँ कर अपणे छोरै तै पूछ ले?

घंटू नै छोरे धोरै फोन मिलाया। टेशण आल़ी बात बताई। छोरा बोल्या- बापू, इब तो तू ही कुछ ले देके मामले निपटा ले। मनै बीच म्हं ना ल्यावै। ना तो मेरी नौकरी म्हं डांगर रुलज्याँगे।

घंटू बोल्या- साहब, जो थम चाहो वो ही फैसला मंजूर सै पर जेल आल़ी बात ठीक कोन्यी। चाहे सारी प्याज ले ल्यो अर मनै अपणे घरां जाण दो।

इस तरिया घंटू नै सारी प्याज थाणे म्हं ही छोड़ दी अर माफी मांगण लाग्या। जी इब ये सारी थारी ही सै। ल्यो संभालो या गठड़ी?

थाणेदार बोल्या- रे, फेर ल्यावैगा कै?

घंटू बोल्या- ना साहब, इसी गलती फेर कोन्यी करूँ? जात भी गई अर जमात भी गई।

छोरे कै यार दोस्तों के फोन घनघनाये कि प्याज आग्यी कै? छोरा बोल्या- अगले सप्ताह म्हं आवैंगी।

इस तरिया घंटू अर उसका छोरा चोबै जी सै छब्बै जी बणना चाहवै थे पर बणग्ये दूबै जी।

7.

घंटू खाग्या भूंडिये

एक बै चौमासे का टेम था अर चौमासे म्हं कीड़े मकोड़े घणे लिकड़ा करे सैं। जिब घणी बारिश होज्या तो पाख्याँ आली तीतर भूतर लट्टू धोरै, बोहर मोह की माक्खियाँ ढाल चिपटज्याँ सैं, अर लट पट तलै नै मकोड़े बण के उडण लाग ज्याँ सैं अर मोटे-मोटे काले भूंड सीधे मुँह कै टक्कर मारै सैं। हार कै सब नै ही लट्टू बंद करणे पड़े सैं। जै किते भी रोशनी दीख्ये उड़े ही ये भूतर का छत्ता जा ले सैं। इब कोय भी काम अंधेरे कै म्हं ही करणा पड़े सै।

एक दिन यूँ ही अंधेरा होग्या अर घंटू नै रोटी खाणी पड़ग्यी। धप्पो थाली म्हं कढी अर रोटी धर के ले आई अर घंटू तै बोल्यी- लै, घंटू रोटी खा ले?

घंटू बोल्या- धप्पो खाट पै धर दे। मैं दो डिब्बे पाणी डाल ल्यूँ सूँ? मनै गरमी लाग री सै। घंटू नहाण लागग्या अर थाली म्हं भूंडिये आ पड़े अर कढी म्हं लथपथ होग्ये और भी कई कीड़े अर भूतर थाली म्हं गोता लगाण लागग्ये।

घंटू नहा धो कै थाली म्हं खाण लागग्या अर वो मोटे-मोटे भूंडिये कटड़-कटड़ चबाग्या अर न्यूँ सोचण लाग्या कि धप्पो नै कढी म्हं टींट गेर राख्ये सैं, पर ये तो किमे फीकै अर कड़वे से लागै सैं? वैसे कढी बहोत सुवाद लागै सै। जिब रोटी खा ली तो धप्पो तै बोल्या- धप्पो कढी बहोत सुवाद बणी सै अर तनै टींट भी गेर राख्ये सै ।

धप्पो बोल्यी- टींट कित तै आग्ये? तैं ल्याया था कै ?

घंटू बोल्या- तो और कै गैर राख्या था? मैं तो खा ग्या। मनै तो तेरी कढी सुवाद लाग्यी।

धप्पो बोल्यी- कितै भूंडिये तो कोन्यी खाग्या? ये देख कितणे मोटे-मोटे आ कै टक्कर मारै सैं। मनै इसा लागै सै तूँ भूंडिये खाग्या?

घंटू बोल्या- मैं तो टींट समझ कै खाग्या। कोय ना इब खाग्या तो खाग्या।

घंटू नै सारी ही रात नींद कोन्यी आई। सवेरे उठ्या तो थोबड़ा सूज रह् या था। देही पै पित के से दाफड़ होग्ये थे। खुजली अर दर्द भी हो रह् या था। धप्पो उसके थोबड़े नै देख के बोल्यी- हाय राम! घंटू यो कै होग्या तेरे? मुँह पै सोजन आ रह् या सै। डॉक्टर धोरै जा, दवाई ले आ?

घंटू डॉक्टर धोरै जा पहुंचा।

डॉक्टर बोल्या- कै खा लिया ?

घंटू बोल्या- डॉक्टर साहब कढी अर रोटी खाई थी और कुछ ना खाया ?

डॉक्टर बोल्या- कोय जहरीला जानवर खा लिया। उसै के कारण तेरे या तकलीफ हुई सै।

घंटू बोल्या- डॉक्टर साहब हो सके सै, मनै भी इसा लागै सै कि मैं सुवाद-सुवाद म्हं कढी म्हं भूंडिये चबाग्या। मन्नै रात नै इसा लाग्या जाणू मैं टींट चबाग्या अर थे वो भूंडिये?

डॉक्टर बोल्या- इब तनै एडमिट होणा पड़ेगा। तूँ कोय जहरीले कीड़े मकोड़े खाग्या? इस कारण तेरा यो हाल हुआ सैं अर इब्बे तो तेरी खाल ना गलेगी अर रोग और बढेगा? इब तो तेरे पेट की सफाई करणी पड़ेगी। तीन दिन म्हं ठीक होज्याग्या, चिंता ना करै। ना तो तेरी सारी खाल गलेगी अर बड़े-बड़े गूमड़े भी लिकड़ेंगे?

घंटू बोल्या- डॉक्टर साहब, थम मेरा इलाज कर द् यो। मैं जल्दी ठीक हो ज्याँ। पीसै की चिंता ना करियो?

डॉक्टर ने घंटू का इलाज शुरू कर् या। उसके सब तै पहल्या दो इंजेक्शन ठोके अर दवाई दी, फेर गुलकोस की बोतल लगा दी। तीन दिन पाछै उसनै डिस्चार्ज कर दिया ।

इब तीन दिन पाछे घंटू अपणे घराँ आया। पूरे तीन हजार का बिल बांध्याँ, डॉक्टर ने। तब जा कै घंटू ठीक हुआ। इब घंटू नै अपणी गलती का अहसास होग्या। सचमुच घंटू नै मोटे-मोटे भूंडिये खा लिए थे।

इब घंटू बोल्या- सुणो रे, अंधेरे म्हं कुछ ना खाणा चाहिए। जो कुछ खाणा हो वो चांदणे म्हं ही खाणा चाहवै, ना तो मेरे आला हाल होवैगा अर कै पता मेरे तै भी भूंडा होज्या। थम ध्यान राखियों। 😂😂😂

८.

घंटू की दादागीरी

घंटू कतई आवारा था। सारे दिन मोटरसाइकिल पै हांड्या करे था। कदे तीन, कदे चार गाम के छोरे भी उसै के साथ बैठे हांड्या करै थे। उस नै अपणी पाँच-सात छोरा की एक खुरापाती गैंग बणा राख्यी थी। कितै भी कोय मार पीट करणी हो तो घंटू सबतै आगे पावै था। गाम की छोरियाँ तै कोय दूसरे गाम का छोरा जै बात कर ले तो उसकै हाथ पैर तोड़्या बिना ना मानै था। किसै का कब्जा दिवाणा हो या छुड़ा हो तो घंटू तै कहते, जै कोय झूठी गवाही देणी हो या किसै नै सुधारना हो तै घंटू ही सुधारा करै था। पूरे गाम म्हं उसकी दादागीरी चाल्ले थी। घंटू पुलिस का पक्का मुखबिर भी था। इस कारण पुलिस कुछ ना कहा करे थी। गाम म्हं पंच सरपंच के चुवावां म्हं घंटू जिसनै चाहवै अक्सर वो ही जीता करे था।

घंटू था कुँवारा। रिश्ते आ़ले तो कई आये पर उसके कारनामा की सुण कै उल्टे चले जा थे। एक तरहाँ वो कुँवारा की यानि की रांडै की फौज का सरदार था।

एक दिन घंटू नै एक कब्जा छुड़ाणा था। अपणी टीम त्यार करी अर मोटरसाइकिल पै चार बैठ कै चाल पड़े। मोटरसाइकिल बहोत तेज चलाया करे था। मैन रोड़ पै एक ट्रक तै टकरा ग्ये। चारों सड़क पै बहोत देर तक तड़पते रहे पर किसै नै हाथ ना लगाया। लोग देख कै लिकड़ज्या थे। सड़क पै खून बहग्या।

किसै नै सौ नंबर पै फोन करा जिब जा कै पुलिस आई। सबनै ठा के अस्पताल लेग्यी। मरहम पट्टी करी। घंटू के पैर कतई चकनाचूर होग्ये थे उसनै बड़े अस्पताल म्हं रैफर कर दिया। घंटू के दोनों पैर घुटने म्हं तै काटणे पड़े। तीन महीने बाद घंटू ठीक हो के आया।

इब घंटू नै सारे दादागीरी आले धंधे छोड़ दिये थे। अर सबकी भलाई आळे काम करण लागग्या था। सब का आदर सत्कार करणा सीख लिया था। सारा दिन घर म्हं या घर के बाहर ही बैठा रहवै था। इब तो घंटू बहोत बदलग्या था। पुराणी बातां नै याद करके हँसा भी करे था। इब तो दो बैशाखी ही उसका सहारा थी। जिब भी कितै जाता तो बैशाखी पै चला जाया करे था।

जिब बड़े भाई के छोरा हुया तो घंटू बहोत राजी हुया।

उसकी भाभी बोल्यी- इब गुड़ दिखाणे घंटू नै ही जाणा पड़ेगा ।
घंटू ना नुकर करता रहा पर उसकी भाभी बोल्यी- घंटू ही ज्यागा। मैंनै खबर भेज दी सै। भाई भी बोल्या- घंटू काल त्यार हो लिये। सवेरे आळी बस तै चाल्या जाइये। बस अड्डे ते तनै आप लेज्यांगे, फोन कर दिये।

सवेरे घंटू त्यार होकै बस अड्डे पै पहुंचा। बस आई उस म्हं चढग्या अर झाज्जर जा लिया। अड्डे पै पहुँच कै उसनै फोन कर्‌या। उसनै लेण आग्ये वो घरां जा लिया। इब तो घंटू बटेऊँ के टोरे म्हं था। ससुराल भी तो भाई की सै। खातिर दारी बहोत हुई। सीठणे भी सुणाये। हाँस्यी ठठ्ठे भी पाड़े। घंटू नै बढिया डनलप आळे गद्दे पै सुला दिया। घंट नै घूँट मार ली थी इस कारण नींद भी जल्दी ही आग्यी थी।

उसकी साळाहेळी नै मजाक सूझी कि वा घंटू के कारनामा नै जाणे थी। सोच्यी कदे यो ऊठ कै कोय गड़बड़ ना कर दे। उसकी दोनों बैशाखी छुपा दी। घंटू नै रात नै पेशाब जाणा पड़ग्या पर ऊठे किस तरिया? बैशाखी तो कोन्यी? फेर सोग्या पर प्रेशर बढ्या तो फेर बैठा होग्या पर उतर कोन्यी सका। पलंग ऊँचा था। इब बिस्तर म्हं ही पेशाब लिकड़ग्या। सारी रात मूत म्हं पड़ा रहा पर फेर जुलाब लाग्यी तो आवाज़ लगाई पर कोय ना ऊठा। फेर बिस्तर म्हं ही कर दिया। इब घंटू कोणै पै बैठ्या रहा। सवेरे उसका साळा आया तो घंटू बोल्या- एक पाणी का लोटा ल्या, पीऊँगा?

उसका साळा पाणी का लोटा ले के आया तो घंटू नै जाण बूझ के बिस्तर म्हं छोड़ दिया। सारा पाणी बिस्तर म्हं ही बिखरग्या। वो फेर दूसरा लोटा लेण चाल्या गया। उसकी साळाहेळी बैशाखी ले के आई अर बोल्यी- सुणा घंटू! ठीक सै? रात किसी कै कटी? ये ले अपणी टांग कित धर कै भूलग्या था?

ज्योंहि वा नज़दीक आई तो उसने पेशाब की बदबू आई। बोल्यी- रै घंटू यो कै कराँ? बिस्तर म्हं पेशाब कर दिया?

उसका साला बोल्या- ना पाणी का लोटा छूटग्या था। ले घंटू गद्दा बदल द्या?

उसकी साल़ाहेली बोल्यी- रै घंटू, तनै तो मूत-मूत कै कतई घमचोल मचा राख्या सै। तनै तेक भी शरम ना आई? सारे बिस्तर का नाश कर दिया। मैं इब्बे तेरे भाई धोरे फोन करूँ सूँ? या ही सै कै तेरी दादागिरी!

उसका साला बोल्या- कोय ना बटेऊँ कदे-कदे घणी पी ले तो पेशाब लिकड़ ही जाया करे सै।

घंटू की बहोत बेइजती हुई। घंटू की मजबूरी कोय ना समझ सका। लज्जित घंटू वापिस घरां आ लिया अर फेर कदे किसै भी गाम म्हं जाणा ही छोड़ दिया।😂😂😂

9.

घंटू के कारनामे

घंटू मेहनती बहोत था। सारा दिन किसै न किसै काम म्हं लाग्या रहवै था। नौकरी तै रिटायर हो चुक्या था। पैंशन मिला करै थी पूरी पच्चीस हजार पर फेर भी किसै न किसै तो सौ पचास मांगता रहवै था। उस म्हं कई लत थी। एक चुर्री खाण की, दूसरी हुक्का या बीड़ी पीवण की, तीसरी दारू पीवण की पर प्रचारी पक्का, चाहे किसै का प्रचार करवाल्यो, चाहे भाषण दिवा ल्यो, चाहे रागनी गवा ल्यो आदि किते न किते मंच पै चढा ही रहवै था। बस एक कमी थी कि जेब खाली रहवै थी। इसलिये पैसे कोय ना कोय बहाना बणा के मांग लिया करै था पर उल्टे ना दिया करता।

कुणबा भी उस पै भरोसा कम ही करै था। उसकी बैंक की कापी अर एटीएम उसकी घर आली धोरे रहवै थे। वा अपणे बेटां नै तो एटीएम दे दिया करै थी पर घंटू तै कदे भी ना दिया। बेटां नै उसकै पिन नंबर बदल राख्ये थे। घंटू नै तो खाता नंबर अर पिन नंबर भी कोन्यी मालूम थे। इस कारण घंटू अपणे खर्चे के पीसे कै तो मेहनत करता या फेर मांग कै ल्याया करे था।

घंटू जिब प्रचार के लिये जा तो मंच संचालन के पैसे मांग लिया करे था। जै किसै की भैंस, गाय बिकवाणी हो तो दोनों वाँ तै दलाली लिया करे था। जै किसै का कोय सामान बाजार तै ल्याणा हो तो उस म्हं कमीशन लिया करे था। कदे-कदे मिस्त्री या मजदूरी भी कर लिया करे था।

किसै नै गवाही दिवाणी हो या जमानत देणी हो तो पीसै पहल्याँ ही खोल लिया करे था। हर सौदेबाजी म्हं चाहे जमीन की खरीद फरोख्त की बात हो या और कोय चीज का सौदा करवाणा हो वो शामिल हो जाया करे था। एक काम रिश्ते कराण म्हं बहोत माहिर था। चाहे किसै भी जात या धर्म का हो रिश्ता करवा कै कितनो के घर बसवा दिये पर अपणी दिहाड़ी दोनों पक्षां तै जरूर लिया करे था।

इस तरिया घंटू अपणे सारे शोक या एब पूरे करा करे था। सांझ नै कै, दिन म्हं कै जिब देखे तब ही टल्ली पर अपणे घर म्हं कदे भी नुकसान कोन्यी करा करे था। इस कारण कुणबा भी उस तै राजी रहवै था।

एक बै घंटू किसै रिश्ते दारी म्हं सौदेबाजी करण चाल्या गया। दो दिन ठहरा, फेर रात नै कोय गड़बड़ कर बैठा अर किसै नै घंटू की आच्छी मरम्मत कर दी। इब घंटू रात नै ही भाग लिया। जिब दूसरे गाम म्हं ते लिकड़ा तो गाम कै कूत्ये लागग्ये अर घंटू नै मोटरसाइकिल तै नीचे पटक दिया। घंटू बोलणा ही चाहवै था कि उस तै पहल्या ही गाम का एक आदमी बोल पड़ा, बोल्या- चोर! चोर! तुरंत गाम के लोग कठ्ठे होग्ये अर घंटू नै दबोच लिया। एक नीम के बांध दिया। घंटू बहोत गिड़गिड़ाया पर गाम आले कोन्यी मानै। घंटू नै दारू भी पी राख्यी थी। घंटू बुरी तरिया फँसग्या पर एक आदमी नै घंटू पै दया आई। उस नै सारी बात घंटू तै पूछी। घंटू उस आदमी तै बोल्या- थम मेरे रिश्ते दारा नै फोन पै पूछ ल्यो? फोन मिलाया रिश्तेदार बोल्ये- हाँ जी यो म्हारा ही रिश्तेदार सै। इसनै छोड़ द् यो। घंटू नै छोड़ दिया।

घंटू जिब सड़क पे चाल्या तो सड़क पै किसै नै तार बांध राख्या था। उस म्हं उलझ कै घंटू पड़ग्या। दो छोरे भाग कै आये। घंटू के पीसै अर फोन छीन लिया अर बोल्ये- इब चाल्या जा। अर वे भी भागग्ये।

इब आधी रात घंटू अपणी आप बीती की रिपोर्ट कित दर्ज करवावै? बस सीधा अपणे घर आ लिया। सवेरे उसकी घर आली नै देख्या घंटू तो जगहां-जगहां तै फूट्या पड़ा सै। उसकी मरहम पट्टी करवाई। उस तै रात की सारी बात पूछी। घर आली बोल्यी- घंटू, तू इसे काम क्यूँ करै सै? तू रात नै क्यूँ चाल्या? जरूर कोई गड़बड़ करी होग्यी? मैं फोन कर कै पूछूंगी?

घंटू नै भी अपणी राम कहाणी सुणाई। मैं गया तो था सौदा करण पर कै बताऊँ, उल्टे लागग्ये। मेरे तो कारनामे ही इसे सै और किसने दोष द् यूँ?

किसै नै घंटू की बात साच्ची लाग्यी तो किसै नै झूठी पर न्यूँ कहा करे सै- जिसके लागै सै दर्द भी वो ही जाणै सै।

10.

बदला

घंटू पक्का चुगलखोर था। जिब चाहे जिसके मूंड भिड़ा देवे था। दिन म्हं किसै न किसै कै जरूर जूत बजवा दे था। गाम भी सारा उस के कारनामा तै दुखी था। कई गाम आले तो उसने जाणन लागग्ये थे। वे उसकी बात्याँ पै कोय भरोसा कोन्यी कर्या करे थे।

एक बै घंटू अर भूंडू गुवालियाँ के साथ भैंस चराया करे थे। सवेरे अर सांझ दोनों टेम भैंस खोल लेज्या अर चरा कै ले आवे थे। एक दिन घंटू नै किसै के खेत म्हं चरी(ज्वार) बो राख्यी थी उस म्हं भैंस चराई अर एक भरोटी काट कै भूंडू के सिर पै धर द् यी। अर बोल्या- भूंडू मैं भैंस ले के चाल रह् या सूँ, तू भरोटी ले के आ जाइये।

जिब भूंडू भरोटी नै ठा कै चाल्या तो रस्ते म्हं खेतआला मिलग्या, बोल्या- भूंडू, चरी किसकी काट कै ल्याया सै?

भूंडू बोल्या- मैं कोन्यी ल्याया, घंटू ल्याया सै।

खेत आला बोल्या- कित सै घंटू? मन्नै कोन्यी दीख रह् या?

भूंडू बोल्या- वो आगे चाल्या गया। मेरे तै बोल्या चरी काट ले अपणे बदलू का ही खेत सै अर इसके बीस खूड मनै ले राख्ये सै।

खेत आला बोल्या- मनै भी घंटू नै ही बताई सै कि भूंडू रोज थारे खेत म्हं तै चरी काट कै भैंस्याँ नै चरावै

सै? बेशर्म तनै तेक भी शरम कोन्यी आई। थमनै तो फोकट का माल़ चाहवै सै? गैर नीचे इसनै, तनै मैं सुधारूँगा? खेत आल़े नै भूंडू के दो झापड़ मारै अर भरोटी ले ली। भूंडू दो झापड़ खा कै सीधा अपणे घरां जा लिया पर पिटाई आल़ी बात किसै तै भी ना बताई। घंटू तै भी ना बताई पर घंटू तै बदला लेण का कोय उपाय सोचण लागग्या कि बदला क्यूँ कर ल्यूँ?

एक हफ्ता पाछै सांझ नै जिब भैंस चराण गये तो भूंडू बोल्या- घंटू, आज्याँ दो बाजी ताश खेल्यांगे? दूसरे और दो गुवालिये त्यार होग्ये। भूंडू एक गुवालिये तै बोल्या- रै ये ले पचास का नोट अर घंटू की भैंस ने पहाड़ी के परली ओर ताड़ आइये अर या बात किसै ना बताइये। वो गुवालिया त्यार होग्या।

चारों गुवालिये एक तिबारे म्हं बैठ कै ताश खेलण लागग्ये। जिब सांझ होग्यी तो सभी अपणी- अपणी भैंस्याँ नै ले के चाल पड़े पर घंटू नै अपणी भैंस अर पाड्यी कोन्यी मिली। दूर-दूर तक नज़र मारी पर भैंस कितै भी ना दिखाई पड़ी।

घंटू बोल्या- रै भूंडू, मेरी भैंस अर कटिया तो कोन्यी दीखै ?

भूंडू बोल्या- आगे नै जा कै देख ले, मिलज्याँगी?

घंटू अपणी भैंस ढूँढणे चाल्या गया। भूंडू नै सोच्यी आज सही मौका सै बदला लेण का। भूंडू घंटू कै घरां जा लिया अर घंटू की लुगाई धप्पो तै बोल्या- री ताई राम-राम। घंटू कोन्यी आया कै?

धप्पो बोल्यी- क्यूँ कै बात सै? इब्बै तो कोन्यी आया सै? कोय काम था कै?

भूंडू बोल्या- ताई री तू मेरा नाम मत लिये। मैं न्यूँ सुणी सै कि आज घंटू जूएँ म्हं भैंस्याँ नै हारग्या? यो पहल्याँ तो पीस्याँ तै खेल्याँ करे था पर इब भैंस्या तै भी खेलण लागग्या?

जिब धप्पो नै या बात सुणी कि घंटू जूआ खेलण लागग्या तो वा समझग्यी कि वो कई बार पीसै मांग कै ले जाया करै सै? आज आण दे उसनै, मैं खबर ल्यूँगी? भूंडू तो चुपचाप अपणे घरां खिसक लिया।

देर रात जिब घंटू नै भैंस कोन्यी मिली तो घर उल्टा आग्या। साम्हे ही धप्पो तो त्यार बैठी थी। बोल्यी- कै बात सै घंटू? आज तो मुंह लटक्या राख्या सै? अर भैंस कित सै?

घंटू बोल्या- धप्पो, भैंस तो आज कोय चोर लेग्या?

धप्पो बोल्यी- तू कित मरग्या था?

घंटू बोल्या- मैं तो ताश खेलण लागग्या था अर पाछै तै कोय भैंस्याँ नै

भगा लेग्या।

धप्पो नै डंडा ठा कै घंटू कै चार पाँच डंडे पाड़ दिये अर बोल्यी- सारा दिन जूआ खेले सै अर आज भैंस्याँ नै भी जूएँ म्हं हारग्या? इब सफाई तारे सै? जा भैंस ल्याँ फेर घर म्हं घुसिये अर दो डंडे और फटकार दिये। घंटू नै घर तै बाहर काढ दिया।

घंटू घर आली तै कुट पिट कै भूंडू धोरे जा लिया अर बोल्या- भूंडू, भैंस तो कोन्यी मिली अर धप्पो नै भी मेरी आच्छी मरम्मत कर द् यी। मार-मार डंडे सारी पीठ सुज्याँ कर दी। इब तू बता कै करा?

धप्पो बोल्यी- तू जूआ खेले सै अर भैंस्याँ नै जूएँ म्हं हार आया।

भूंडू बोल्या- इब सो ज्याँ सवेरे चाल्यांगे अर भैंस ढूँढ कै ल्यावांगे। घंटू अर भूंडू दोनों आगले दिन पहाड़ी के परली ओर हांडते रहे पर भैंस कोन्यी मिली। इस तरिया घंटू अपणी भैंस खो बैठ्या। सारे गाम म्हं बदनाम भी होग्या कि घंटू तो भैंस्याँ तै जूआ खेले सै। भूंडू नै अपणा इसा बदला लिया कि इब घंटू नै मूंड भिड़ाणा छोड़ दिया।

11.

घंटू की झांकी

घंटू जगराते म्हं झांकी दिखाया करे था। उसके सांग देखण दूर-दूर तै लोग आया करे थे। हनुमानजी के जगराते म्हं वो हनुमान बण्या करे था। सचमुच म्हं हनुमान दीख्या करे था। लोग नोटाँ की बरसात कर्या करे थे। देवी या माता कै जगराते म्हं राक्षस बण जाया करे था। कदे कृष्ण-सुदामा, कदे शुक्र-शनिचर, यानी उस का हरेक सांग एक तै बढ कै एक जचाँ करे था। लोग भी मुँह मांगे दाम दिया करे थे अर ईनाम के अलग से मिला करै थे।

एक बै घंटू हनुमानजी के जागरण म्हं चाल्या गया। उसनै सोच्यी कि आज कोय नया सांग भरणा चाहिए। आज उसके मन म्हं शिवजी का सांग दिखाण की आग्यी। यूँ तो कई बै शिवजी बण चुका था पर इबकै कुछ नया दिखाणाँ चाहवै था। पुराने आले सांग नै लोग कई दफा देख चुके थे।

घंटू ठीक टेम पै पहुंचग्या। घंटू अपणै साथ एक साँड लेग्या। न्यूँ सोच के कि पहल्याँ तो झूठ-मूठ का नांदियाँ बणा करे था पर इब कै सचमुच का शिवजी का नांदियाँ दिखाऊँगा अर इसके ऊपर बैठ के पंडाल म्हं जाऊँगा तो सचमुच शिवजी मानेंगे अर लोग बहोत नोट बरसावेंगे। न्यूँ सोच के गाम का एक आवारा साँड पकड़ ल्याया अर उस साँड नै पड़ौस म्हं एक घर म्हं बाँध दिया।

घंटू की बारी आधी रात म्हं

आई। घंटू नै अपणा शानदार शंकर भोले का रूप बणाया अर सांड नै नंदी बणा कै अर खुद नंदी पै बैठ के जिब पंडाल म्हं पहुंचा तो लोग सिर झुका-झुका कै हाथ जोड़ण लागै अर नोट पै नोट बरसाण लागै पर तभी ढोलकिये नै जोर से ढोलक कै थाप मारी तो नंदी महाराज बिदकग्ये अर उछल-कूद करके मार दुलत्ती भाग खड़ा हुआ। घंटू भी गिर पड़ा। उसके चोट लागगी। पंडाल म्हं और भी घणे लोग लुगाई घायल होग्ये। साजिंदे भी भाज लिए। मंच बिखरग्या। खुशी का माहौल गम म्हं बदलग्या। लोग घायलाँ नै ठा के अस्पताल म्हं लेग्ये। घंटू कै भी सिर म्हं चोट लाग्यी। खून से थोबड़ा लाल होग्या था। घंटू नै भी अस्पताल म्हं लेग्ये। किसै नै सौ नंबर पै फोन कर दिया। पुलिस भी आग्यी। जागरण कराण आले नै भी पकड़ लेग्ये। घंटू तो पहल्याँ ही अस्पताल जा लिया था घंटू के इस सांग नै रंग म्हं भंग डाल दिया था। पंडाल खाली था। सब अपणे-अपणे ठिकाणे जा लिए थे। साजिंदे ढोलकिये, गायक, कलाकार सब जयकारा लगा कै, अपणे बोरी बिस्तर बाँध कै चाल पड़े थे। टैंट आले भी टैंट उखाड़ण लागग्ये थे।

जागरण कराण आले अर घंटू पै मुकदमा दर्ज होग्या। जागरण कराण आले नै सरकार से परमीशन ना ली थी। बिना अनुमति लिए भीड़ कठ्ठी कर ली। जिस म्हं बहोत से लोग घायल होग्ये अर घंटू का तो सारा ही दोष था जो एक आवारा सांड पकड़ कै ले आया। एक जीव को सताणा अर उसतै पैसा कमाणा, बहोत बड़ा अपराध था। कोर्ट नै घंटू अर जागरण कराण आले दोनोवाँ कै दो-दो महीने की सजा अर एक-एक हजार रुपया जुर्माना लगाया। सजा भुगतणे कै बाद घंटू नै तो सांग अर झांकी काढणे ही छोड़ दिये। ज्यादा पैसे का लालच घंटू ने जेल तक लेग्या। घंटू उस दिन नै याद करके इब तक पछतावै सै। 😂😂😂

12.

घंटू का झोटा

घंटू की भैंस कै पाड्या हुआ। वो धीरे-धीरे बड़ा होग्या। कई मेव उस नै खरीदण आये पर घंटू नै पाड्या बेचा कोन्यी। इब वो पूरा झोटा बणग्या। लोग भैंस्याँ नै नई कराण ले के आण लाग्ये। पहल्याँ तो घंटू मुफ्त म्हं ही झोटे नै छोड़ देवे था पर इब घंटू के मन म्हं लालच आग्या था कि गाम म्हं दूसरे झोटे आल़े पीसे लेवे सै तो घंटू भी पीसै लेण लागग्या था।

इब तो सुबह होण तै पहल्या ही नई भैंस कराण आल़ा की भीड़ लागज्याँ थी। घंटू की घर आल़ी नै जिब घंटू का यो धंधा देख्या तो छोह म्हं आग्यी अर बोल्यी- घंटू? तनै तो कती शर्म तार दी। रोज सवेरे-सवेरे इस दुकान नै खोल कै बैठज्याँ सै? किमै तो खानदान का ध्यान कर? सारी दुनिया तनै थूकै सै कि थम झोटा की कमाई खा रै सो? मैं न्यूँ कहूँ सूँ, बंद कर दे यो धंधा?

घंटू बोल्या- घर का झोटा अर आच्छे भले पीसै मिलण लाग रे फेर तनै अर दुनिया नै कै तकलीफ सै?

उसकी घर आल़ी बोल्यी- घंटू तू मानज्याँ ना तो तू मनै जाणै सै जै इब कोय भैंस ले के आग्या तो सब तै पहल्या तेरी अर फेर ल्याण आल़े की टांगा नै तोडूंगी?

सचमुच थोड़ी देर पाछै झंडू अपणी भैंस नै ले के आ खड़ा हुआ अर बोल्या- रै झोटे आल़े घंटू! कर लै कमाई? खोल दे इसके ढब्बी नै? देख या आग्यी

उसकी ढब्बण ?

घंटू की घर आली बाहर लिकड़ के आई अर बोल्यी- झंडू, मुंह संभाल के बोलिये? अर चाल्या ज्या अड़े तै?

घंटू भी बाहर आग्या था बोल्या- रै झंडू, भाई बेरा ना इसने कौण कै कहग्या, या नाराज हो री सै।

झंडू बोल्या- रै! तू एक लुगाई तै ही डरग्या? लोग तो बेरा ना कै-कै धंधा करै सै अर नोट कमावै सै। मान ज्या अर बस आज तो खोल दे चाहे फेर मत खोलिये।

घंटू नै झोटा खोल दिया। उसकी घर आली एक डंडा ठा कै ल्याई अर घंटू के दे पड़ा-पड़ दे, पड़ा-पड़ कती पिछवाड़ा सुजा दिया। इब झंडू की बारी आई तो जिब झंडू के दो डंडे पिछवाड़े पै लागै तो झंडू तो भाग लिया अर बोल्या- आज तो नागिन लहरा पै आ री सै, किसै नै कोन्यी बख्शे? भाग ल्यो? झंडू तो भैंस नै भी छोड़ के भाग लिया। घंटू नै भी भाग कै अपणा पिंड छुड़ाया। जिब मामला शांत होग्या तो झंडू अपणी भैंस नै ले के चाल्या अर भैंस भी दो डंडा खा के नई हो गई थी ।

इब घंटू नै यो धंधा छोड़ना पड़ा। घंटू एक झोटा बुग्गी गाड़ी ले आया। अर झोटे नै बुग्गी म्हं जोड़ के मंडी म्हं आणा-जाणा शुरू कर दिया। किसै का नाज दाणा बुग्गी म्हं भर कै मंडी म्हं लेज्या अर बाजार तै खल बिनोलै या फेर कोय भारी सामान लाद कै घरां वापिस आवै था। इब घंटू नै मेहनत करणी पड़े थी।

एक दिन जिब घंटू मंडी म्हं गया अर बुग्गी तै सामान तार दिया। दुकान के साम्हे ही लाला जी की भैंस बंध री थी। भैंस झोटे नै देख के रींगणै लाग्यी। इब घंटू का झोटा भी गाड़ी समेत लाला जी की भैंस के गैल भाज पड़ा। भैंस भी खूंटे नै पाड़ कै भाज ली। इब आगे-आगे लाला की भैंस अर पाछै घंटू का झोटा, बजार कै बीचों-बीच भाग पड़े। भैंस तो मंडी तै भी बाहर चाल्यी गई पर झोटे नै भी पीछा कोन्यी छोड़ा।

घंटू नै किसै तरिया भाज कै झोटे नै पकड़ा, बुग्गी खंड-मंड होग्यी। उसकी चूल-चूल हालग्यी। जोड़ण जोग्यी भी ना रही पर लाला की भैंस, बेरा ना कित चली गई? लाला बहोत नाराज होग्या अर बोल्या- घंटू मेरी भैंस नै ल्या दे ना तो तेरी या झोटा बग्गी भी अड़े ही रहवैगी।

घंटू बोल्या- लाला जी इस म्हं मेरी गलती कित सै? या झोटा बुग्गी तो कई दिन तै आ री सै। किमै खोट सै तो वो तेरी भैंस म्हं ही सै अर कोय पशु सै भूल हो जाया करै सै। इब मनै घर जाण दे।

घंटू अपणे घरां आ लिया अर घर आली तै बोल्या- आज तो इस झोटे नै कतई नाश कर दिया। बड़ी मुश्किल ते लाला तै बच कै आया सूँ? पर बेरा ना इब वो कै करेगा?

सांझ नै पुलिस आग्यी अर भैंस चोरी के इल्जाम म्हं घंटू नै पकड़ लेग्यी। घंटू की घर आली बोल्यी- मैं पहल्याँ ही रोवै थी कि इस झोटे नै बेच दै पर घंटू कित मानै था? बोल्या धंधा करूँगा, ले कर लिया धंधा।

घंटू थाणै म्हं चाल्या गया। थाणेदार बोल्या- तनै जिब झोटा बुग्गी के जोड़ना था तो इसने कुटवा कै क्यूँ ना ल्याया। सुणा सै तू डबल कमाई करै सै। एक तो भैंस नई करे अर दूसरा तू इसने बुग्गी म्हं जोड़े सै। तो इब लाला की भैंस के पीसै दे दे या फेर भैंस ढूँढ के ल्या दे? इब यो फैसला तनै ही करणा सै ना तो तेरा चालाण करूँगा अर पशु अत्याचार की अर चोरी की कई धारा भी लगाऊँगा।
इस तरिया घंटू ने लाला के पैर पकड़ लिये अर बोल्या-सेठ जी माफ कर द्यो अर बदले म्हं मेरी भैंस ले ल्यो। लाला नै घंटू की भैंस ले ली अर राजी नामा कर लिया। अपणे घरां वापस आया अर उस झोटे नै गाम म्हं फ्री म्हं ही छोड़ दिया। घंटू की घर आली बोल्यी- इब तो आग्यी अक्ल ठिकाणे! और बांध ले झोटा? लुट पिट कै घर म्हं बैठग्या। ढंग का धंधा ही आच्छा लाग्या करै सै। उस तै ही मान सम्मान बढ़्या करै सै। 😂😂😂

13.

घंटू फकीर

गाम म्हं एक पीर की मजार थी। गाम के पुराणे लोग पीर की मजार पै बैठ कै पीर के किस्से सुणाया करे थे। इब मजार के बारे म्हं सिवाय घंटू के और कोय कुछ ना जाणे था। इब भैंस चराण आळे मजार पै बैठ के गप्पे हाँक्याँ करे थे।

घंटू तो मजार पै बैठण तै बहोत मना करूया करे था। एक दिन भूंडू का छोरा मजार नै गंदी कर आया तो घंटू बोल्या- इब पीर बाबा तनै मजा जरूर चखावैगा।

छोरा भी डरग्या अर सांझ नै ही उसके बुखार होग्या। तीसरे ही दिन छोरा भड़क ग्या। अंट-संट बकण लागग्या। उसके दिमाग म्हं बुखार चढग्या।

भूंडू बोल्या- चाल डॉक्टर धोरे चाल्यांगे पर भूंडू की लुगाई बोल्यी- इसके तो पीर बाबा की बीमारी सै। किसै मौलवी धोरे लेज्या? पर भूंडू का तो इसी बात्याँ म्हं भरोसा ही ना था।बोल्या- मनै इसै मौलवी कई देख राख्ये सै। छोरे नै डॉक्टर कै ले जाऊँगा। भूंडू छोरे नै डॉक्टर कै धोरे लेग्या। डॉक्टर नै दो सुइये ठोक दिये पर फेर भी छोरा ठीक कोन्यी हुया। बार-बार कहे कि अपणे घर जाऊँगा।

भूंडू बोल्या- रै यो तेरा ही घर सै और किसै का ना सै? पर छोरा कित मानै?

भूंडू की घर आळी बोल्यी-यो पीर की मजार नै गंदी कर के आया सै। तू इसनै लेज्या अर नाक रगड़ कै आ। कै बेरा यो ठीक होज्या। भूंडू घर आळी की

बात मानग्या अर छोरे नै बोल्या- चाल बेटा, बाबा की मजार पै चाल्यांगे?

छोरा बोल्या- तू ही चलाज्याँ मैं कोन्यी जांदा?

इतणी ही देर म्हं घंटू आग्या अर बोल्या- भूंडू तेरे छोरे का कै हाल सै?

भूंडू बोल्या- तू घंटू स्याणा आदमी सै, इस छोरे का कोय इलाज बता?

घंटू बोल्या- ल्या कित सै छोरा?

छोरा बोल्या- इब कै करेगा?

घंटू बोल्या- चाल एक बार बाबा पीर आली मजार पे चाल्यांगे अर उसने साफ कर द् यांगे।

छोरा चाल्या गया अर मजार की सफाई करी फेर माथा टेक छोरा घरां आ लिया। आगले दिन सचमुच छोरा ठीक होग्या। इब तो गाम की सारी लुगाई घंटू नै पीर का भगत मानण लागग्यी। घंटू भी पीर की मजार पे बैठण लागग्या। लोग पीसै भी चढाण लागग्ये। हरी चादर भी ऊढा दी। धूप अर अगरबत्ती, रेवड़ी चढाण लागग्ये। हर बृस्पतिवार के दिन, बाबा कै लोग धोक मारण लागग्ये। जै भैंस दूध ना दे तो घंटू तै झाड़ा लगवावै, बालकां के कुछ होज्या तो घंटू तै झाड़ा। घंटू की तो हर सप्ताह आच्छी आमदनी होण लागग्यी। इब तो कतई पक्का भगत बणग्या।

या खबर आसपास कै गामां म्हं भी फैल ग्यी। इब तो मुसलमान भी आण लागग्ये। गामां म्हं जो मुसलमान थे वे सब मजार पे चादर चढाण लागै अर रेवड़ी का प्रसाद चढ़ाण लागग्ये। जिब मुसलमान कठ्ठे होण लागै तो मुसलमानां नै एक मीटिंग बुलाई अर मजार पै छाया बणा दी, चार दीवारी अर गैट बणा दिया अर देखभाल की पूरी जिम्मेवारी घंटू तै ही सौंप दी। घंटू का खर्चा भी देण लागग्ये। एक दिन दिल्ली से कई कव्वाल आये। सारी रात कव्बाली गाते रहे। बहोत नोट बरसे। घंटू नै भी मुसलमाना आले कपड़े कमीज अर भिड़ी पजामी पहरली थी। सिर पै गोल टोपी कतई पूरा मुल्ला बणग्या था।

भूंडू नै जिब घंटू को मुसलमाना आले कपड़े पहरे देख्या तो बोल्या- लो भई गाम म्हं भी एक मुसलमान बणग्या।

सचमुच घंटू फकीर बणग्या अर गाम आले भी बाबा फकीर कहण लागग्ये थे। 😂😂😂

14.

इब तो घी के चसग्ये

धप्पो जिब अड़तालीस साल की थी जिब तै ही बूढा आल़ी पैंशन लेण लाग री थी। जिब गाम का सरपंच उसका जेठ हो अर पैंशन आल़े भी जाणकार हो फेर तो धप्पो की पैंशन बंधणी ही थी। जिब कई साल हो लिये तो धप्पो की पैंशन का पता घंटू नै लागग्या कि धप्पो तो इब भी साठ की ना हुई सै फेर या पैंशन क्यूँ कर ले री सै? इस बात का तो पता लगाणा ही चाहिए।

घंटू सरपंच धोरे चाल्या गया अर जा कै राम-राम बोल्या।

सरपंच बोल्या- राम-राम घंटू। सुणा कै हाल सै?

घंटू बोल्या- तनै सरपंच हमनै बणाया अर म्हारे कुणबे का आदमी फेर भी म्हारी बूढा आल़ी पैंशन इब तक ना बणवाई? जिब म्हारे तै छोटी उमर आल़े कई सालां तै पैंशन लेण लाग रै, फेर म्हारी क्यूँ ना?

सरपंच बोल्या- घंटू तू मेरा खास कुणबै का सै। कोय बात तेरे तै ना छुपाई सै। साच्ची बात तो या सै कि वृद्धावस्था पैंशन तो साठ का होण पै ही बणै सै। जै तू उनसठ का भी सै तो भी तेरी पैंशन पक्की अर साथ म्हं तेरी घर आल़ी की भी बंधवा द्यूँगा। तू बता तेरी इब कितनी उमर सै?

घंटू बोल्या- मैं तो इभी पचपन का हुया सूँ पर मैं न्यूँ कहू सूँ जिब फत्ते की घर आल़ी धप्पो अड़तालीस की थी जब से पैंशन लेण लाग री सै? वा तो इब साठ की

ना हुई सै?

सरपंच बोल्या- घंटू उसकी पैंशन तो उसके जेठ नै बंधवाई थी। वो सरपंच अर उसका बहणेऊँ बाबू था। उसने बंधवा दी थी अर वा गलत ले री सै पर कोय शिकायत ही ना करे तो चालण दे।

घंटू बोल्या- मैं कर रहा उसकी शिकायत। तू कहे तो लिख दे द् यूँ।

सरपंच बोल्या- टेम आण दे फेर तेरी भी बंधवा दूंगा।

घंटू अपणे घरां उल्टा आ लिया पर घंटू के तो ईर्ष्या की आग तन बदन म्हं लाग री थी। घंटू की घर आली भी तो तानै मार्‌या करे थी कि इस सरपंच तै आच्छा तो धप्पो का जेठ ही था उसने धप्पो की पैंशन बंधवा दी थी। म्हारे आला तो किसै काम का ना सै?

घंटू अपणी घर आली तै बोल्या- या धप्पो कौण से गाम की सै? अर इस के बाप का कै नाम सै? तू मनै पता कर के दे।

घंटू की घर आली नै सारा पता ठिकाणा घंटू तै बता दिया। घंटू के साले का छोरा उसै गाम म्हं मास्टर लाग रहा था। उसने मास्टर धोरे फोन मिलाया।
मास्टर बोल्या-फूफा राम-राम। सुणा फूफा कै हालचाल सै? सब राजी सै?

घंटू बोल्या- बेटा राम-राम। सब ठीक सै पर तू मनै इस धप्पो की जन्म तिथि लिख कै दे अर तेरे स्कूल की मोहर भी लगाइये।

मास्टर बोल्या- फूफा टेम लागेगा। पुराणा रिकॉर्ड देखणा पड़ेगा। एक दो दिन का टेम दे दे।

घंटू बोल्या- टेम की कोय बात ना सै जिब टेम लागै तब तलाश लिये।

दो दिन बाद ही घंटू धोरे धप्पो की उमर का ठोस सबूत आग्या। घंटू बहोत राजी हुया। उसने धप्पो की शिकायत एसडीएम के कर दी। महीने के बाद सरपंच नै भी बेरा लागग्या अर फत्ते नै भी। पहल्याँ कोय और छोटा अफसर आया। उसने फत्ते तै भी पूछताछ करी अर फेर सरपंच सै भी, फेर वो चाल्या गया। घंटू नै सोच्ची कि शिकायत मनै करी पर मेरे तै तो अफसर नै कुछ भी ना पूछी। शायद इनक्वारी बंद होग्यी लागै सै या फेर फत्ते घूस दे आया होग्या।

न्यूँ सोच कै घंटू नै फेर सी एम विंडो पै शिकायत कर दी। इब तो हफ्ते म्हं ही एसडीएम साहब आ ग्ये अर घंटू नै बुलाया अर बोल्या- शिकायत आपने करी सै? क्या नाम है ?

घंटू बोल्या- हाँ जनाब। मनै घंटू कह् या करै सै जी।
साहब नै कागज अर शिकायत ध्यान तै पढी अर बोल्या- सरपंच इस धप्पो से

पिछले दस साल के पैंशन के रुपये वापस जमा करवाओ अर इसकी पैंशन काट दो। यदि पैंशन के पैसे जमा नहीं करवाये तो इसकी रिपोर्ट थाणे करो। फत्ते हाथ जोड़ कै माफी मांगता रहा पर साहब बिल्कुल भी कोन्यी मान्या। फत्ते नै घंटू तै भी माफी मांग्यी पर घंटू बोल्या- फत्ते मेरे हाथ म्हं तो कुछ भी कोन्यी जो कुछ करेंगे साहब और सरपंच जाणे।

इस तरिया धप्पो की गलत पैंशन काटी गई अर सरपंच नै और भी जो कम उमर आले पैंशन ले रहे थे उन सबकी भी कटवा दी।

तब घप्पो बोल्यी- घंटू, इब तो घी के से चसग्ये? 😂😂😂

15.

कुबध की जड़ : दारू

सभी न्यूँ कह् या करै सै कि दारू कुबध की जड़ सै। दारू पीवण आल़ा म्हं सारे एब पावैंगे। जिसने कोय औगण सीखणा हो तो वो दारू पीणी सीख ले। उस म्हं सारे औगण अपणे आप आ ज्याँगे। किसै नै गुरु बनाण की जरूत ना सै।

बुधिया रेल के फाटक पै रहा करे था। दिन रात फाटक खोलणा अर बंद करणा, बस यो ही काम था। सप्ताह म्हं एक बार अपणे घरां चाल्या जाया करे था। एक ही फाटक पै बुधिया नै कई साल होग्ये थे। गाम के बहोत से लोग्याँ तै उसकी जाणकारी होग्यी थी।

घंटू अक्सर दारू पी के फाटक पै बैठा करे था। फेर वो फाटक पै बैठ कै दारू पीवण लाग ग्या। उसने बुधिया तै भी पीणी सिखा दई। पहल्याँ उसनै एक-दो पैग दे-दे कै आदत डाल दी। इब तो बुधिया भी घंटू कै साथ खुल्लम खुल्ला पीवण लागग्या था। बुधिया के पीवण की रिपोर्ट रेल के टेसण मास्टर तक पहुँच ली थी। एक दो बार पीडब्लूवाई चैक करण आया तो बुधिया नै चुर्री खा कै जान बचाई।

एक दिन घंटू अर बुधिया दारू पीण लाग रे थे तो स्टेशन मास्टर का फोन आया बोल्या- बुधिया, फाटक बंद करण आल़े नंबर लिख ले छप्पन अर अपणे बता दे।

बुधिया बोल्या- साहब थम ही बता द् यो, मैं तो वे ही लिख ल्यूँगा ?

स्टेशन मास्टर बोल्या- बुधिया, फाटक

बंद कर दे अर नंबर लिख ले चौसठ।

बुधिया बोल्या- ठीक सै साहब ,लिख लिया।

इब बुधिया नै नंबर तो लिख दिये पर ना तो लाल झंडी हटाई अर ना ही फाटक बंद किया। दारू पीता रह् या। थोड़ी ही देर म्हं माल़ गाड़ी आग्यी। फत्ते अपणे खेत म्हं काम कर रह् या था उसने देखा माल़ गाड़ी सीटी पे सीटी मारे सै अर फाटक खुल्या पड़ा सै। फत्ते बुधिया तै बोल्या- बुधिया, गाड़ी आग्यी?
बुधिया तो नशे म्हं टुल्ल था बोल्या- या रेल रही चाल्यी ज्याग्यी। मेरे के सिर पै तै ज्यागी। जिब घंटू नै भी देख्या माल़ गाड़ी आग्यी तो घंटू तो खिसक लिया। फत्ते अपणे खेत म्हं खड़ा था। गाड़ी सीटी पै सीटी मारे जा री थी। सिगनल तो हरे थे पर बुधिया नै पटरी के बीच म्हं लाल झंडी लगा राख्यी थी। गाड़ी ठीक फाटक पै आ कै रुकग्यी। ड्राईवर उतर कै आया तो देख्या, फाटक खुल्याँ पड़ा सै। ड्राईवर फाटक आल़े तै बोल्या- रै या झंडी क्यूँ कर लगा राख्यी सै?

बुधिया बोल्या- तनै कै मतलब सै। या गाड़ी नै रोकण के लिए लगा राख्यी सै। ड्राईवर ने देख्या कि इसनै तो दारू पी राख्यी सै तो उसकै चार पाँच झापड़ धर दिये अर उसका हाथ पकड़ कै घसीटा, बोल्या- खड़ा हो कै फाटक बंद कर दे अर झंडी हटा। ड्यूटी पै पीये बैठ् या सै। मैं तेरी रिपोर्ट करूँगा?

जिब बुधिया के झापड़ लागे अर गाड़ी खड़ी देख्यी तो ड्राईवर के पैर पकड़ लिए बोल्या- साहब इब-इब कै छोड़ दो, फेर कोन्यी पीऊँ।

जिब गाड़ी रस्ते म्हं खड़ी होग्यी तो ड्राईवर के पास टेसण मास्टर का फोन आग्या तो ड्राईवर नै बुधिया कै दारू पीणे की अर ड्यूटी पै लापरवाही करण की सूचना दे दी।

इब ड्राईवर ने खुद ही फाटक बंद किया फेर झंडी हटाई तब गाड़ी ले के चला गया। गाड़ी स्टेशन पर रुकी तो ड्राईवर नै सारी सूचना लिख कै दी। फेर टेसण मास्टर नै अपणी कारवाई शुरू कर दी।

थोड़ी देर बाद पुलिस आग्यी अर बुधिया नै पकड़ लेग्यी। बुधिया की जगहां दूसरे आदमी नै ड्यूटी पै तैनात कर्‌या। बुधिया नै अपणे साथ ले गई। उसका मैडीकल हुया। रिपोर्ट म्हं दारू पिये बताया गया। पहले कई दिन तक सस्पेंड रहा। कोर्ट म्हं केस चाल्या। इस तरिया बुधिया की नौकरी चली गई।

जिब नौकरी चली गई तो उसकी घर आल़ी भी अपणे बालकाँ नै ले के पीहर चाल्यी गई। इब बुधिया दिन रात मांग-मांग दारू पीता रहा अर नशे म्हं हांडता रह् या अर फेर एक दिन रेल तै ही कटग्या।
तभी तो लोग कहवै सै-या दारू नाश की जड़ ना सत्यानाश की जड़ सै। 😂😂😂

16.

अंडर पास

घंटू मोटर साइकिल चलाण म्हं बहोत माहिर था अर मोटर साइकिल नै कतई चमका कै राख्ये था। इब वा पुराणी भी होग्यी थी। उसके इंजन का कती भठ्या बैठग्या था। घंटू नै अपणी मोटर साइकिल बेच दी पर नई कोन्यी खरीद सका। नई लेण शोरूम म्हं गया तो पीसै घणे मांग्ये। न्यूँ सोच कै कि पहल्याँ पीसै का जुगाड़ करूँ फेर खरीद ल्यूंगा।

एक दिन घंटू नै सुसराड़ जाणा पड़ग्या। घंटू बदलू धोरे गया अर बोल्या- रै बदलू, भाई आज तो तेरी मोटर साइकिल दे, सुसराड़ जाऊँगा।

बदलू बोल्या- तेरे आली़ कित गई?

घंटू बोल्या- भाई वा तो बेच दी।

बदलू नै अपणी मोटर साइकिल घंटू तै दे दी अर बोल्या- घंटू इसके कागच ना सै? ध्यान तै जाइये ।

घंटू नई फेन धौली़ फट धोती अर खादी का नेता आला़ कमीज पहर कै अपणी सुसराड़ चाल पड़ा। रास्ते म्हं रेल का अंडर पास आग्या। उस म्हं काफी पाणी भरा था। घंटू सूख्ये म्हं ते तो कई बार लिकड़ा था अर इब पाणी भरा देख कै खड़ा रहा। सोचता रहा कि पाणी म्हं बड़ू. अक ना पर घंटू तो कतई अनाड़ी था पाणी म्हं बड़ग्याँ अर ठीक बीच के म्हां मोटर साईकिल गाद म्हं धँसग्यी अर बंद होग्यी। घंटू नै पाणी म्हं अपणे पैर टिकाणे पड़े। इब मोटर साइकिल स्टाट ना हुई अर घंटू पाणी के बीच खड़ा होग्या। करै

तो कै करे ?

घंटू सोच ही रहा था कि एक स्कूल बस आग्यी। दूसरी ओर तै भी स्कूल बस आग्यी पर लिकड़े कित तै। अंडर पास कै दोनों तरफ बसाँ की लेण लागग्यी अर सब ही घंटू तै कहै कि साईड म्हं कर ले पर घंटू सै तो मोटर साइकिल टस से मस ना हुई।

घंटू बोल्या- अरे मनै लिकाड़ो, मैं तो गाद म्हं धँस रह् या सूँ?

बहोत देर तक जाम लाग्या रहा। फेर कोई पड़ौस के कुँए तै एक रस्सा ले के आया पर रस्सा कई बार घंटू तक फैक्याँ पर घंटू रस्सै नै पकड़ ना सका। जै मोटर साईकिल छोड्चे तो वा कीचड़ म्हं पड़ज्या। इब घंटू मोटर साईकिल नै संभाले अक रस्से नै पकड़े। एक बस का खल्लासी उतरा अर वो पणी म्हं ज्यों हि घुस्याँ वो भी कीचड़ म्हं धँसग्या पर घंटू तक ना पहुंच सका। उसने पकड़ कै वापिस खींचा फेर एक और पाणी म्हं रस्सा ले के उतरा अर उसनै वो रस्सा घंटू की मोटर साईकिल कै बंधवा के खींचवाया तो मोटर साईकिल तो बाहर आग्यी पर वै दोनों फेर गाद म्हं धँसै रहे। फेर रस्सा फैक्याँ तो वे दोनों बाहर लिकड़े।

इब बस आल़े तो बारी-बारी तै लिकड़ग्ये पर घंटू के लत्ते सारे खराब होग्ये। घंटू तो कती भूत बरगा बणग्या। इब सुसराड़ क्यूँ कर जा? दूर एक खेत म्हं एक घर म्हं चाल्या गया। उस घर म्हं एक जर्मन शैफर्ड नसल का कुत्ता बैठ्या था। ज्यों हि घंटू नै आता देख्या तो एकदम टूट के पड़ा अर घंटू कै मार-मार पंजे कपड़े फाड़ दिये।

घंटू नै आवाज लगाई- रै कोय तो बचाओ? कुत्ते अर घंटू की आवाज़ सुण कै एक आदमी दौड़ के आया अर बोल्या- तू वहीं पै खड़ा रहै ना तो यो तनै फाड़ैगा? घंटू खड़ा होग्या।

आदमी आया कुत्ते के बेल घाल्यी अर फेर घंटू तै बोल्या- कित लोट के आया सै? सारा गाद म्हं लथपथ होर्‌या फेर कुत्ते तो तनै पाड़ैंगे ही।

घंटू नै अंडर पास आल़ी बात बताई। भाई बहोत चीकणी गाद कठ्‌ठी हो री सै अर मैं उस म्हं धँसग्या? अर मेरी मोटर साइकिल सड़क पै ही पड़ी सै।

वो आदमी घंटू तै बोल्या-आज्या नहा ले अर कपड़े भी धोय ले। उस नै अपणे कुएं की मोटर चला दी।

घंटू नहाया अर कपड़े धोए, फेर सुखाये अर अपणी मोटर साईकिल भी धोई। फेर चाँ पाणी पी कै बोल्या- कोय और रास्ता हो आगे जाणै का? उस कूँए आल़े नै एक दूसरा फाटक आल़ा रास्ता बताया जिब घंटू अपणी सुसराड़ पुहच्याँ।

घंटू की साल़ाहेली बोल्यी- घंटू इस्या लागग्ये सै जाणै इब्बे नहा कै आया हो? लत्ते भी आल्लै अर पाट्चे पहर राख्ये सै। सुसराड़ म्हं ये पाट्चे कपड़े क्यूँ कर? अर मोटर साइकिल भी शीशै की ढाला चमके सै? कोय तो बात सै, बता दे?

घंटू नै अपणी साल़ाहेली तै अंडर पास आली घटना विस्तार तै बताई अर कपड़े एक कुत्ते नै पाड़ दिये।

उसकी साल़ाहेली बोल्यी- बहोत बड़ाई कर्या करे था। लिकाड़ी होती गाद म्हं तै मोटर साईकिल? बण्या फिरे सै पायलैट?

घंटू बोल्या- पाणी का कै बेरा ,कितना सै कोय थाह ना लागै पर आगै तै इसी भूल कोन्यी करूँगा पर इन अंडर पास म्हं भरण का भी कोय इलाज होणा चाहिए।

ना जाने मेरे जिसै कितने इस म्हं फँसते होंगें। रेल आल़ा नै इन के ऊपर टीन शैड लाणी चाहवै ताकि पाणी ना भर सके। 😂😂😂

17.

घंटू झोला छाप

घंटू झोला छाप डॉक्टर था। गाम म्हं जिब किसै कै छोटी मोटी कोय बीमारी होज्यावै थी उसका घंटू ही इलाज कर्या करे था। जै किसै कै खाँसी, जुकाम, बुखार आदि कोय रोग हो उसके दो इंजेक्शन तै ही आराम हो जाया करे था अर जै कोय ज्यादा बीमार होज्याँ तो उसने किसी बड़े डॉक्टर धोरे ले के जाया करे था। इस तरिया घंटू गाम का चहेता बण रह्या था। बस एक बार फोन मार द् यो घंटू की मोटरसाइकिल तुरंत आ ज्यावै थी पर न्यूँ देख लेंदा कि यो ठीक हो सके सै अक ना। जै किसै के बड़ी बीमारी होज्या तो उसने शहर के बड़े अस्पताल म्हं भिजवा दिया करे था। घंटू की गाम म्हं आच्छी पैठ जम री थी।

एक दिन बदलू नै घणी ए दारू पी ली। उसनै कती होश ना रहा। घर आले नै घंटू धोरे फोन कर्या। घंटू तुरंत आग्या तो बदलू कती टुल्ल पाया। नाड़ी देखी बोल्या- ठीक सै, नाड़ी चाल री सै। थम इस नै लास्सी प्या दो पर बदलू नै तो कती होश ना था।

घंटू बोल्या- जिब नशा ढील्या होज्या तब प्या दियो। घंटे पाछै बदलू नै होश आग्या अर उसकी घर आली नै उस तै लास्सी प्यादी। इब बदलू ठीक होग्या अर बोल्या- रै भीड़ क्यूँ कर कठ्ठी हो रही सै? दारू तो सारी ही दुनिया पीवै सै, जै मैं पी ली तो कौण सा पहाड़ टूट पड़्या? आज फत्ते के छोरे का लगन आया

था फेर पी तो पी ली। जिब घंटू बैठा दीख्या तो बोल्या– डॉक्टर साहब, थोड़ी ज्यादा होग्यी कै? काल थोड़ी पीवांग्ये? अर डॉक्टर साहब थम कै ना पीवो सो अक सौगन खा राख्यी सै? डॉक्टर बोल्या– इब रोटी खा ले अर सोज्या नहीं तो इंजेक्शन लगा द्यूँगा। बदलू बोल्या– ल्या लगा? तू लगा? अर इब्बे लगा?

डॉक्टर बोल्या– बस रहण दे इब तू ठीक सै।

पर बदलू ना मान्या, बोल्या– ना तू इंजेक्शन ही लगा? मैं देखू तो सही किसका लगावैगा? जिब मेरे कोय बीमारी ही कोन्यी तो सुइया किस बात का? पर लगा। बदलू नै बाजू उघाड़ ली अर घंटू नै उसके एक डिस्टल वाटर का इंजेक्शन लगा दिया।

डॉक्टर बोल्या– इब ल्या मेरी फीस दे? पूरे दो सौ रुपये ल्यूँगा। तेल फूँक कै आ रहा सूँ। बदलू तो नाटग्या बोल्या सवेरे द्यांग्ये पर उसकी घर आळी नै दो सौ रुपये दे दिये। डॉक्टर चला गया।

फेर बदलू नै अपणी घर आळी पीट दी अर बोल्या– जिब मनै मना कर दी थी तो तनै पीसै क्यों दिये? तू घणी बोहरी बण री सै कै? तनै बेरा सै वो पाणी का सुइया लगा कै गया सै। वो गाम म्हं बहोत सा कै पाणी आळा इंजेक्शन ही लगावै सै अर मैं फेर कदे बता द्यूँगा पर वो डिब्बी नै साथ ले जावै सै। अरै गाम आळो यो मैट्रिक फेल अर मैं ग्रेजुएट यो ज्यादा जाणै सै अक मैं? पर मैं क्यूँ किसै की रोजी रोटी के लात मारू? जिब तक चाल्ले तब तक चालण दे।

बदलू की बात गाम म्हं बहोत सा नै मानणी पड़ी क्योंकि इब डॉक्टर के सुइया तै आराम कोन्यी आवै था। गोली अर कैपसूल भी पता ना नकली देय था कै। सबै उल्हाणा दिया करे थे। इब घंटू भी शराबियाँ के साथ घूँट भी मारण लगग्या था। उसकी दुकान म्हं कोय ना कोय एक मवाली लुगाइयाँ नै देखण खातिर बैठ्या रहवै था।

एक दिन घंटू ही बीमार होग्या। कई दिन खाट म्हं पड़ा रहा पर ठीक कोन्यी हुया? उसकै दिमाग म्हं बुखार चढग्या। अंट-संट बकण लागग्या। जो जी म्हं आवै उसै नै बक दे। जिब पागला की ढाल करण लाग्या तो घर कै उसनै एक बड़ी अस्पताल म्हं लेग्ये। जिब नर्स इंजेक्शन लगाण आई तो घंटू बोल्या– डिस्टल वाटर सै। दवाई कोन्यी? रै इतणी बड़ी अस्पताल अर पाणी के इंजेक्शन लगावै सै। बहोत गलत। मैं नहीं लगवाणा?

शोर सुण कै डॉक्टर आग्या बोल्या– कै बात होग्यी पहलवान? इंजेक्शन ना लगवावै। ल्या मैं लगा द्यूँ? घंटू फेर बोल्या– ना डॉक्टर साहब, डिस्टल वाटर सै। दवाई

कोन्यी ?

डॉक्टर बोल्या- या तो इंजेक्शन लगवाले नहीं तो बिजली कै शॉट लगाऊँगा ?

घंटू बोल्या- हाँ, जै असली हो तो बिजली के शॉट लगा ल्यो पर पाणी के सुइये ना लगावो।

डॉक्टर बोल्या- कै काम कर्‌या करै सै?

घंटू बोल्या- थारे आल़ा ही करूँ सूँ।

डॉक्टर बोल्या- म्हारे आल़ा मतलब डॉक्टर सै कै? इब समझ म्हं आग्यी तेरी बीमारी। तू तै स्टाफ का ही आदमी सै। इब तो तेरा सही इलाज करांग्ये। तनै पाणी के सुइये ही लगाये सै तभी तनै सारे सुइये पाणी आल़े लागै सै।

घंटू ठीक हो के घरां आया पर यो डॉक्टर आल़ा काम छोड़ दिया क्योंकि गाम आल़े कहण लागै कि रै यो पागल हो रहा सै इब इस तै कोय दवाई ना लियो नहीं तो कतई मार कै छोडेग्या। इब इसका दिमाग ठीक ना सै। इसनै बहोत पाणी आल़े सुइये लगाये सै। 😂😂😂

18.

दोगला गवाह

बदलू अर फत्ते का कोर्ट म्हं दीवानी मुकदमा चाल रहा था। उस मुकदमे म्हं इब गवाही होणी थी। बदलू नै सोची मैं घंटू नै गवाह बणा ल्यूँ। वो गाम म्हं सब की गवाही दे सै। वो मेरी भी दे देवैगा। इब या ही बात फत्ते नै भी सोची कि घंटू मेरी गवाही जरूर देवैगा।

पहल्याँ बदलू घंटू धोरे चाल्या गया अर बोल्या- घंटू, राम-राम। मैं तेरे धोरे एक खास काम तै ही आया सूँ। तनै तो बेरा ही सै मेरा अर फत्ते का कोर्ट म्हं मुकदमा चाल रहा सै। इस म्हं इब गवाही होणी सै। मैं न्यूँ सोची कि घंटू ही मेरा इस गाम म्हं भाई सै तो, यार सै तो यानी सब कुछ तू ही सै। जै तू मेरी गवाही दे दे तो मुकदमा मैं जीत जाऊँगा।

घंटू बोल्या- बदलू तू कहे तो साच्ची सै पर थम तो आपस म्हं चचेरे भाई सो फेर थारा कै झगड़ा सै?

बदलू बोल्या- ज़मीन तो मेरी सै अर मकान फत्ते बणा बैठ् या। बस यो ही झगड़ा सै।

घंटू बोल्या- ठीक सै। कब की तारीख सै?

बदलू बोल्या- घंटू काल ही जाणा सै। दस बजे चाल्यांगे।

घंटू बोल्या- सवेरे त्यार मिलूंगा।

बदलू चाल्या गया। फेर फत्ते नै भी घंटू तै राम-राम बोल्यी अर बैठग्या।

घंटू बोल्या- सुणा फत्ते क्यूँ कर आणा हुया? ले हुक्का पी ले ।

फत्ते नै भी अपणी राम कहाणी घंटू नै सुणाई अर बोल्या- घंटू काल ए म्हारी तारीख सै अर तनै म्हारे साथ चाल कै गवाही देणी पड़ेग्यी।

घंटू बोल्या- थम त्यार रहियो ।मैं सवेरे अड्डे पै आल्यूँगा।

फत्ते भी हाँ भरवा कै चाल्या गया। घंटू सवेरे उन दोनूवाँ ते पहल्याँ ही अड्डे पै जा लिया। ज्यों हि बस आई बैठ कै तहसील म्हं जा पहुंचा।

बदलू अर फत्ते दोनों ही घंटू नै ढूँढते रहे फेर अड्डे पै किसै नै बताई कि वो तो बस म्हं बैठ कै तहसील जा लिया।

वे दोनों भी पहुँच लिये अर जिब आवाज लाग्यी तो घंटू जज के सामणे जा लिया।

एक वकील बोल्या- गवाही देग्या कै? किसकी और सै?

घंटू बोल्या- हाँ गवाही ही देण आया सूँ। चाहे किसै की और से मान ल्यो।

वकील बोल्या- नाम अर गाम बता अपणा?

घंटू ने अपणा नाम अर गाम बता दिया।

वकील बोल्या- इस मुकदमे के बारे म्हं कै जाणै सै?

घंटू बोल्या- पूछो कै पूछो सो?

वकील बोल्या- ज़मीन किसकी सै?

घंटू बोल्या- ज़मीन तो बदलू की सै ।

वकील बोल्या- अर जमीन पै मकान किसका सै?

घंटू बोल्या- मकान फत्ते का।

वकील बोल्या- झगड़ा किस बात का सै? क्या फैसला होणा चाहिए?

घंटू बोल्या- झगड़ा तो जमीन अर मकान का सै अर फैसला थम आपै कर द्‌ यो जो करणा हो। मेरी बात कती साच्ची सै। इस म्हं कती झूठ ना सै।

वकील बोल्या- घंटू तू इब जा सके सै।

फत्ते आल़ा वकील बोल्या- ले आ तेरे गवाह नै भी?

आवाज़ लगाई फेर घंटू जा लिया। जज बोल्या आपकी तो गवाही हो चुकी। अब दुबारा नहीं।

पर घंटू बोल्या- ना जी मैं फत्ते की ठोक कै गवाही द्‌ यूँगा। यै तो दोनों भाई ही सै पर जिसी बात सै वा तो कही जावैगी अर मैं फेर न्यूँ ए कहूँ सूँ कि ज़मीन बदलू की अर मकान फत्ते का।

इतणी कह कै घंटू आग्या अर फेर आगली तारीख पै बुला लिया।

आगली तारीख पै घंटू की जगह भूंडू चाल्या गया अर वो भी घंटू आल़ी दो

लेन बोल कै आग्या।

इस तरिया घंटू दोनों हाथों म्हं लाड्डू राखणा चाहवै था पर पहल्या बदलू की गवाही दे के फत्ते नै नाराज कर लिया।

19.

घंटू ठेकेदार

घंटू ठेकेदार था। मकान अर कोठी बणान कै ठेके लिया करता। उस धोरे मिस्त्री अर मजदूरों की बहोत डिमांड रहा करे थी। उस ने कई आच्छे मिस्त्री पकड़ राख्ये थे जो कई बढिया कोठी बणा चुके थे। वैसे भी वे घंटू के सुभाव तै सारे ही परिचित भी थे। घंटू पसीना सूखण तै पहल्याँ ही दिहाड़ी दे दिया करे था। मालिक फेर चाहे उसने कदे भी द् यो।

एक बै घंटू नै एक स्कूल का ठेका ले लिया। मालिक घणा ए मक्खीचूस था। बजरी डस्ट अर सिमैंट के एक-एक तसले का हिसाब राख्या करे था। इस कारण काम मंदा चाल्या। फेर एक दिन आल इंडिया मजदूर संघ नै हड़ताल कर दी। इब सब के काम बंद होग्ये। मजदूर काम छोड़ के अपणे घरां म्हं बंद होग्ये। कुछ उल्टे अपणे प्रदेश म्हं जा लिये। ज्यादा तो यूपी बिहार के ही थे। इब मालिक कह मेरा काम पूरा कर कै दे। अर इब एक मिस्त्री एक मजदूर मिले ना।

घंटू भी बहोत परेशान हो लिया तब एक दिन न्यू सोच के कि यूपी म्हं जा के कोय मिस्त्री मजदूर और ले के आऊँ अर यो काम तो पूरा करणा ही पड़ेग्या।

एक दिन घंटू रेल म्हं बैठ कै एक मजदूर के गाम म्हं पहुँच ग्या। वो मजदूर घंटू नै जाणे था। उसके घरां चाल्या गया। दो चार दिन ठहर के चार आदमी अर उनकी चार लुगायाँ नै ले के चाल पड़ा वे बस म्हं बैठ के चाल पड़े। रास्ते म्हं एक

नदी आग्यी। बस नै सारी सवारी तार दी अर बस उल्टी चाल्यी गयी। इब नदी किनारे दो नाव लाग री एक म्हं तो जनानी बैठ कै जा अर दूसरी म्हं मर्द। जनानियाँ आळी नाव नै एक जनानी ही चलावै थी अर मर्दा आळी नै मर्द चलावै था। सवारी भाग भाग के बैठग्यी अर दोनों नाव चली गई। इब घंटू अर व आठों मजदूर खड़े रहग्ये। थोड़ी देर पाछै वे नाव फेर उल्टी आग्यी। इब एक म्हं तो वे चारों लुगाई बैठग्यी अर नाव चली गई। फेर दूसरी म्हं सारे मर्द बैठग्ये अर नाव चाल पड़ी। जिब बीच सी जा ली तो घंटू नै सोची तू किनारे की और बैठ ले। ज्यों हि घंटू खड़ा हुया नाव पलटग्यी। इब सारे बहग्ये पर घंटू नै तो तिरणा आवै था धीरे-धीरे पाणी काटता-काटता किनारे पै जा लिया। नाव आले नै अपणी नाव ना छोड़ी वो भी किनारे पे आ लिया। वे चारों मजदूर बहग्ये। कई देर किनारे पै बैठे रहे कि कोय लिकाड़ के ल्यावैगा पर जिब ना आये तो उनकी लुगाई रोवण लागग्यी। घंटू लुगाइया नै समझाता रहा पर वै रोती रही। जिब सांझ होग्यी तो घंटू बोल्या- थम चारों मेरे साथ चालो मैं थम ने अपणे घर राखूंगा अर थम मौज मारोग्यी। उन म्हं सै एक लुगाई पहल्या तै ही घंटू नै जाणै थी बोल्यी- ये म्हारे मर्द तो बहग्ये बेरा ना मरे सै अक जीवै सै? पर इब कै उनकी गैल मरा जा सै। घंटू ठीक कह रहा सै इसै के साथ चाल्यांगे अर अपणा गुजारा कर ल्यांगे नहीं तो अपणे घरां उल्टे आ ज्यांगे।

इस तरिया घंटू उन चारों लुगाइयाँ ने अपणे घरां लियाया। घंटू के चार भाई कँवारे ही थे। यूँ ही गलियारों म्हं लेण मारते हांडे थे। रस्ते म्हं घंटू लुगाइया तै बोल्या- जै घर बसाणा चाहो तो मेरे भाई सै चार थम अपणी-अपणी पसंद का संभाल लियो अर जै मजदूरी करणा चाहो तो मैं थमने काम पै छोड़ आऊँगा। लुगाइयाँ नै सलाह करी कि ये एक बार तो उजड़ग्या कै बेरा भगवान नै न्यूँ ही रच राख्यी हो। चाल्यो एक बार फेर घर बसा कै देख ल्याँ। घंटू भी उन के फैसले तै राजी होग्या।

ज्योंहि घंटू के गैल चार लुगाई देखी तो घंटू की घर आळी बोल्यी- इनका कै करेग्या अर इनके मर्द कित सै? घंटू बोल्या- तेक हमनै चाँ पाणी पी लेण दे फेर बताऊँगा। चाँ पाणी पी लिया पाछै घंटू नै अपणे भाई धारे तै आवाज लगाई। धारे आग्या अर बोल्या- बोल कै कहवै था?

घंटू बोल्या- इन म्हं तै एक नै लेज्या ।

फेर दूसरे नै फेर तीसरे नै अर फेर चौथे के बची खुची। एक-एक बाँट दी। इस तरिया घर म्हं फोकट म्हं ही बहू भी आग्यी अर मजदूरन भी। घंटू के तो इसै सीधे लागै कि चारों भाई भी लेन म्हं आग्ये। भाई मिस्त्री बणग्ये अर उनकी लुगाई

मजदूर। इब स्कूल कै, कोठी कै, मंदिर कै न जाणै कै-कै बणान लाग ग्ये अर घंटू तो सरकारी ठेकेदार बणग्या। बड़े-बड़े नेताओं तै जाण पहचान होग्यी।

अफसरों तै साठगाँठ कर ली अर गाड़ियां म्हं घूमण लागग्या अर आज घंटू ठेकेदार कहावै सै। 😆😆😆

20.

घंटू की दौड़

घंटू दौड़ लगाण म्हं सब तै आगे रहा करे था। कई मेला म्हं दौड़ जीत के मैडल, शील्ड मोमैंटों आदि लेके आया करै था। उसके धोरै कितणे ही सोने कै, कितणे ही चांदी के अर काँसे कै तो अणगिणत मैडल जीत राख्ये थे। इब भी साठ तै ऊपर आला की दौड़ म्हं भाज्याँ करै था। उसके भाजण का चाँव था । बढिया रैसर था।

एक बै घंटू भैंरू के मेले म्हं चाल्या गया। मेले म्हं कोय, किसै लुगाई की गले म्हं तै चैन तोड़ के भाज पड़ा। लुगाई नै शोर मचा दिया। जोर-जोर सै चिल्लाण लाग्यी अर फेर बेहोश होग्यी। लोग बोल्ये- पकड़ो-पकड़ो, रै कोय तो पकड़ो, देखो वो चैन तोड़ लेग्या। जिब या आवाज घंटू कै कानाँ म्हं पड़ी तो, इतणी सुणते ही घंटू उसके पाछै भाज पड़्या अर उसनै पकड़ लिया। उसकी जेब म्हं चैन भी मिलग्यी। इस तरिया वा चैन उस लुगाई नै दिलवाई। लोगाँ नै घंटू की पीठ थपथपाई।

फेर मेले म्हं झगड़ा होग्या। उस म्हं घंटू का भी नाम लिख्या गया। पुलिस घंटू के घराँ घंटू नै पकड़ण आग्यी।

घंटू बोल्या- हाँ थानेदार साहब कै बात होग्यी? क्यूँ कर आणा होग्या?

थानेदार बोल्या- घंटू तनै थाणै म्हं चालणा पड़ेगा? तेरे खिलाफ रिपोर्ट आ री सै। मेले म्हं जो मारपीट हुई उस म्हं तेरा भी हाथ सैं?

घंटू बोल्या- ना साहब, मेरा के

काम, मैं तो मेले म्हं जांदा ही कोन्यी। हाँ कोय दौड़- कबड्डी वगैरा हो तो मैं चाल्या ज्याँ, ना तो मेले म्हं मेरा कोय काम ना सैं।

थानेदार बोल्या- तूँ थाणे म्हं चाल। जो कुछ कहणा हो वो थाणे म्हं ही कहिए?

घंटू बोल्या- तो थम मनै ले चाल्लोगे? पर मेरी एक शर्त से साहब?

थानेदार बोल्या- वा कै सै? वा भी बता दे?

घंटू बोल्या- मैं भाजूंगा अर थम मनै पकड़ के दिखाओ? जै पकड़ लिया तो मैं थारे साथै चालूँगा। ना तो थमनै, मनै छोड़ के जाणा पड़ेगा।

थानेदार मानग्या अर बोल्या- पकड़ ल्यों रै, इसनै?

ज्योंहि थाणेदार बोल्या, तो घंटू भाज पड़ा। इब आगे- आगे घंटू, पाछै- पाछै सिपाही पर घंटू हाथ कोन्यी आया।सिपाही बुरी तरिया हारग्ये, हाँफण लागग्ये।

गाम के लोग बोल्ये- इब यो कोन्यी हाथ आवै? इब थारी दौड़ बेकार सै?

सचमुच पुलिस के हाथ कोन्यी आया। एक दो सिपाही भाज कै छिक लिए अर वे तो लोटग्ये। आखिर थाणेदार घंटू की शर्त हारग्या अर अपणी नाड़ नीची करके चुपचाप उल्टा चाल्या गया। बल्कि घंटू की दौड़ की बड़ाई करी सो अलग।

इस तरिया पुलिस घंटू नै फेर कदे पकड़ण ना आई। आज भी घंटू न्यूँ ही दौड़ लगावै सै। 😂😂😂

21.

लेणे के देणे पड़े

एक बै घंटू मोटरसाइकिल पे बैठ कै अपणी ससुराड़ चाल पड़्या। रस्ते म्हं भूंडू का खेत आग्या। उसके खेत म्हं अनार के पेड़ ला राक्खै थे। वे अनाराँ तै लदपध हो रै थे। घंटू नै सोच्यी पल्ला खातिर पाँन-सात अनार ही तोड़ ले। बजार म्हं तो पीसै भी देणे पड़ेंगे अर ये मुफ्त म्हं ही मिलण लाग रै सै। घंटू मोटे-मोटे अनार देख कै तोड़ण लागग्या। जिब छः-सात तोड़ लिए तो मन म्हं लालच आग्या। भूंडू का ही तो खेत सै, न्यूँ सोच कै और दस तोड़ लिए पर फेर भी सबर कोन्यी आया एक दूसरे पेड़ म्हं हाथ मार्‌या तो माक्खियाँ के छत्ते म्हं हाथ दे दिया। घंटू कै माक्खी चिपटग्यी अर बुरी तरिया खाग्यी। घंटू तो अपणै तोलिये म्हं गठड़ी बाँध कै अर अपणी मोटर साइकिल पे बैठ कै भाग पड़्या।

सीधा ससुराड़ पहूँचग्या। रामा-किसना हुई अर अनाराँ आली गठड़ी साल़ाहेली नै पकड़ा दी।

साल़ाहेली बोल्यी- घंटू, तेरा मूँह तो लाल होर्‌या सै। इसा लागै सै जाणै पिट कै आया हो। बतावै ना किसने पीट्या?

घंटू बोल्या- ना इसी बात ना सै, मनै कोई ना पीट सके पर घंटू नै माक्खी खाण आली बात किसै नै भी कोन्यी बताई। सांझ नै उसकी साल़ाहेली अर सास नै बढिया खातिरदारी करी।

जिब सवेरे घंटू उठ्या तो

उसका पूरा थोबड़ा कतई सूजग्या। मोटी मोटी आँख सूज कै कती बंद होग्यी अर होठ बड़े-बड़े बिड़कले से होग्ये अर गलूरै भी कती फूल कै पाटण नै होर्‍ये थे। नाक भी कतई भोलुवा जिसा बणग्या। घंटू कै दोनों हाथ भी बुरी तरिया सूजग्ये।

जिब सवेरे उसकी साल़ाहेली चाँ का गिलास ले के आई तो घंटू की शक्ल देख कै डरग्यी अर जोर सै चिंघाड़ मारी, बोल्यी- हाय राम! यो कै होग्या म्हारे बटेऊ कै? यो तो कतई पाटण नै होर्‍या सै। यो घंटू सै अक कोई और सै? बोल्यी- घंटू राम, यो कै होग्या तेरे? किमै लड़ तो ना गया तेरे? आवाज़ सुण कै घंटू की सासू भी भाग्यी आई अर बोल्यी- हे भगवान, कै होग्या म्हारे बटेऊ कै ? घंटू तै बोलै- घंटू, बता ना, कै खाग्या? साँप तो कोन्यी लड़ग्या?

घंटू का साल़ा अर सुसरा भी आग्या। सारे पूछण लागै तो घंटू बोल्या- रै, माक्खी खाग्यी, माक्खी अर मनै डॉक्टर धोरे ले चाल्यो, मेरा मूँह पाटेग्या? मेरे माक्खी लड़ग्यी। घंटू नै डॉक्टर के धोरे लेग्ये। उसनै घंटू कै दो सुइये ठोक दिये अर चार सौ रुपये ले लिए। इस तरिया घंटू नै तीन दिन सुसराड़ म्हं ठहरणा पड़ा।

परानै भूंडू ने अनार चोरी की रिपोर्ट लिखा दी। पुलिस ने आसपास पूछताछ करी पर फेर भी पता कोन्यी चाल्या। भूंडू नै सोच्यी या बात घंटू तै बताणी चाहिए, कै बेरा वो हे किसे का सुराग बता दे। भूंडू, घंटू के घराँ गया तो पता चाल्या, वो तो तीन दिन तै सुसराड़ जा रह्‌ या सै। इब तो भूंडू कै पक्का शक होग्या कि यो काम घंटू का हो सके सै अर वैसे भी घंटू अर भूंडू म्हं छत्तीस का आंकड़ा था। जिब किसै का दाव लागै था वो एक दूसरे नै नीचा दिखाण म्हं कसर कोन्यी छोड्‌या करे थे पर लोगाँ की नजर म्हं वे दोनों एकै थैली के चट्टे बट्टे लागै थे। उसनै पुलिस तै शक म्हं घंटू का नाम बता दिया।

जिब घंटू सांझ नै अपणे घराँ आया तो उसने पुलिस पकड़ लेग्यी। पुलिस का सिपाही बोल्या- घंटू तेरे खिलाफ चोरी की रिपोर्ट आई सै। तनै चोरी करी सै? घंटू बोल्या- ना साहब, मनै कोई चोरी वोरी कोन्यी करी, कुण कहवै सै? मेरे साम्हे ल्यावो?

सिपाही बोल्या- तनै भूंडू का पूरा बगीचा उजाड़ दिया अर न्यूँ कहवै सै, मनै चोरी ना करी। उसके सारे अनाराँ के पेड़ उजाड़ दिये? इब तनै जुर्माना देणा पड़ेगा?

घंटू बोल्या- जी, भूंडू तो मेरा ही भाई सै। थम उसनै बुला ल्यो अर पूछ ल्यो? भूंडू भी आग्या अर बोल्या- घंटू मेरे अनार तनै तोड़े थे तो मेरे तै बता देंदा।

घंटू बोल्या- भाई, तेरे ये अनार देख के लालच आग्या अर अपणा खेत

जाण कै तोड़ लिए पर भाई, इब तू राजी नामा कर ले अर अपणे घराँ चाल। मैं अपणी गलती मानू सूँ। भूंडू नै राजीनामा लिख दिया पर फेर भी घंटू नै दो सौ रुपये थाणे म्हं देणे पड़े।

रस्ते म्हं घंटू, भूंडू तै बोल्या- रै भूंडू, तेरे ये अनार तो बहोत महंगे पड़े। मैं तो कतई ठगाग्याँ। सुण मनै तेरी माक्खी खाग्यी अर चार सौ रुपये डॉक्टर नै देणे पड़े अर मूँह सूजग्या सो अलग, बहोत दुख पाया सूँ अर दो सौ इब थाणे म्हं लागग्ये।

भूंडू बोल्या- घंटू, तू बहोत स्याणा बणै था, फोकट का माल़ भावे सै तनै। इब तो अकल आग्यी ठिकाणे?

घंटू बोल्या- भूंडू, भाई या गलती समझ ले या, चाहे चालाकी। मनै कै बैरा था कि लेणे कै दैणे पड़ेंगे पर आगै तो इसै करम फेर कोन्यी करूँ। ये तेरे आगै कान पकड़े पर तू गाम म्हं किसै तै भी ना बताइये ना तो लोग मेरी खिल्ली उड़ावैंगे। जिसा करम कर्‌या था उसा ही फल मिलग्या।

भूंडू बोल्या- ठीक सै घंटू, मैं किसै नै भी कोन्यी बताऊँ? इब घराँ चाल, राम-राम।

22.
बिदकनी घोड़ी

एक बै ताऊ घंटू एक घोड़ी ले आया। घंटू ने या घोड़ी बहोत आच्छी लाग्यी। एक दिन दादा फत्ते आया और बोला- रै घंटू, छोरे का ब्याह आग्या अर निकासी और बारोठी खात्यर तेरी घोड़ी चाहवै थी।

घंटू बोल्या- या घोड़ी तो रेस की सै फत्ते, दौड़ लगाण जाया करे। ब्याह -शादी म्हं ना जांदी।

फत्ते बोला- रै, सै तो या घोड़ी ही, तू चाहे इस तै रेस लगवा ले या घुमा ले। घंटू पैसे द् यूंगा, मुफ्त कोन्यी लेज्यां। देख ले खुशी का मौका सै।

घंटू तैयार हो ग्या अर बोला- दादा तू पहली बार आया सै तेरा तो काम निकालना ही पड़ेगा। तारीख बता दे कौन सी तारीख नै आणा सै? फत्ते ने तारीख बता दी पर घंटू ने केवल बारोठी की ही हामी भरी।

घंटू ठीक टेम पै घोड़ी ले के चाल्या गया अर नोशे ने घोड़ी पे बैठा कै, बारोठी के लिए चाल पड़े। डीजै की धूमधाम, नाचते कूदते बाराती घोड़ी के आगे-आगे चाल्ये। इसी बीच म्हं किसै नै एक पटाखा घोड़ी की दोनों टांगा के बीच फोड़ दिया। बहोत जोर का खुड़का होया अर खुड़के नै सुण के घोड़ी बिदकग्यीअर छूट पड़ी या रेस की घोड़ी थी अर खुड़का सुण कै या भागा करे थी। नोशा थोड़ी दूर तक तो ऊपर बैठा रह् या और फिर गिर पड़ा। घोड़ी नोशे नै घसीटती-घसीटती

बहोत दूर लेगी। पाछै-पाछै कई बाराती भी दौड़ पड़े पर घोड़ी हाथ नहीं आई। लगभग 1 किलोमीटर आगे घोड़ी अपणे आप रुकग्यी। भागते हुये बाराती भी जा लिए। नौशा लहूलुहान होग्या। उसके हाथ पैर और मुंह से खून बहण लागग्या। बाराती उसनेे ठा के एक अस्पताल में लेग्ये। उसकी मरहम पट्टी करवाई। उसके हाथ पैर टूट गये थे। पलस्तर चढ़ा। जब दूल्हा होश म्हं आग्या तो उसनै बारोठी पे ठा कै लेग्ये। नोशी ने जिब नोशा देखा तो चकरागी अर बोली- मैं इस लंगड़े-लूल्ले तै क्यूं कर ब्याह कर लूँ? मैं कोन्यी कर दी इस तै ब्याह?

कुणबे के लोगां ने नोशी को बहोत समझाई पर किसै की बात ना मान्यी ?

नोशी बोल्यी- कोई और ढूंढ ल्याओ, इसनै ठा ले जाओ।

बारात म्हं कई कुंवारे छोरे आ रह् ये थे। जिब या बात सुणी तो बहोत राजी होग्ये। कुंवारों की फौज खड़ी होग्यी। लड़की एक-एक नै गौर से परखण लाग्यी। हाथ, पैर, पीठ, छाती आदि को हाथ से थपकी लगा लगा देखण लागी। फेर सीधा ही एक हाथ का धोल छाती म्हं जमा दिया। कुट पिट कै कई छोरे तो भाग लिए पर एक मंलग के जिब छाती म्हं झापड़ मार्‍या तो उसनै भी उसके एक कै बदले दो झापड़ जड़ दिए। थोड़ा रोला होग्या, पर लड़की बोली- सुण बापू, मैं इसतै ब्याह करूंगी। ये सारे मर्द तो मरे पड़े सै। यो ही एक ढंग का मिला सै। कुणबा भी राजी होग्या। छोरी बोली-

मैं अपणी धुन की पक्की सूँ
मन की करणा चाहवै थी
मैं छोरी सूँ पहलवान
अर पहलवान ही चाहवै थी

उस पहलवान छोरे नै घंटू का शुक्रिया कर्‍या अर बोल्या- ताऊ घंटू, तेरी घोड़ी बहोत शुभ सै।

23.

पोल खुलग्यी लालच की

घंटू नै हरेक चीज मुफ्त म्हं ठा कै ल्याण की आदत थी। दिन म्हं एक बार जरूर किसै नै ठगणा। चाहे दस पीसै ही ल्यावै पर ठग कै ल्याया करै था। किसै का बीड़ी का बंडल, तो किसै की माचिस, किसै की चिलम, किसै की बेल, कोय डंडा और भी कई छोटी-मोटी कोय चीज जरूर ठा कै ल्याया करे था। इब तो घंटू इतणा लालची होग्या था कि अपणे सगे यार दोस्ताँ अर रिश्ते दाराँ नै भी कोन्यी बख्शे था।

एक बै घंटू कै छोरे का ब्याह था। घंटू की घर आल़ी बोल्यी- घंटू, बजार तै बहू के कपड़े लत्ते अर टूम ल्यावांगे।

घंटू बोल्या- मेरा एक सेठ जाणकार सै, मैं आपै बहू के कपड़े अर टूम ले आऊँगा। घंटू बजार म्हं चाल्या गया अर सोचण लाग्या कि कपड़े तो बहोत महंगे सै, कोन्यी खरीदे ज्याँ अर फेर एक सोनी कै धोरे चाल्या गया अक बहू कै टूम भी घालणी पड़ेगी। सोने- चांदी का भाव सुण कै घंटू न्यूँ सोचण लाग्या कि टूम तो रात नै दिखाई ज्याँ सै अर बिजली कै चाँदणे म्हं, सारी टूम आच्छी ढाल्याँ चमकै सै। जै मैं नकली ले ल्यूँ तो किसै नै भी कोन्यी पता चाल्लेगा कि ये नकली सै, इतणै गोर तै कोय ना देखे, सब असली ही बतावैंगे। घंटू नकली सोने का हार आल़ा सैट खरीद ल्याया।

धप्पो भी सैट नै देख कै बहोत राजी हुई। ब्याह म्हं जिब बिदा होण लाग्यी

तो घंटू नै एक परात म्हं यो सैट खोल कै धर दिया अर बोल्या- देख ल्यो साहब, पूरे दस तोल़ा का सै अर फोटू आले़ तै बोल्या- ले भाई, इसकी फोटू खींच ले। फोटोग्राफर नै फोटू खींच ली। कई लोग्याँ नै अर लुगाइयाँ नै भी टूम देख्यी। बहोत सराई। घंटू भी मन ही मन बहोत राजी हुया। बिदा होकै अपणे घराँ आ लिया।

तीन महीने पाछै बहू कै भाई का ब्याह आग्या। बहू अपणे गाम चली गई अर टूम भी लेग्यी अर ब्याह म्हं सारी टूम खो दई। जिब या खबर घंटू नै लाग्यी कि बहू सारी टूम खो आई तो बहोत नाराज हुया अर बोल्या- बहू अपणे बाप तै कह कै म्हारी टूम मंगवा कै दे। कै बैरा वो म्हारी टूम्याँ तै ही अपणे छोरे नै ब्याह कै ल्याया हो अर इब लालच आग्या लागै सै, कोन्यी देणा चाहता हो। तनै बेरा सै पूरे दस तोले का माल़ था।

बहू नै अपणे बाप तै फोन कर्‌या अर टूम खोवण आल़ी बात बताई। बहू के बाप नै घंटू धोरे फोन कर्‌या अर बोल्या- चौधरी घंटू, बेरा ना टूम क्यूँ कर खोग्यी? हमने तो बहोत तलाश करी पर ना मिली। थम चिंता ना करो, मैं नयी घड़ा कै दे द्‌ यूँगा। थम म्हारी छोरी नै कुछ ना कहो?

घंटू बोल्या- ठीक सै साहब, हमने तो टूम चाहवै। जल्दी घड़वा दियो।

बहू के बाप नै असली दस तोले़ सोने का नया सैट घड़वा के दे दिया। घंटू नये सैट नै देख कै बहोत राजी हुया। इब तो घर म्हं नकली सोने की जगह असली सोने की टूम आग्यी थी। बहू की भी बहोत बड़ाई करी।

दो महीने पाछै या बात पुराणी होग्यी पर एक दिन उसै नकली सैट नै लेके एक आदमी बहू के बाप धोरे आया अर बोल्या- साहब यो टूम्याँ का डिब्बा किसै नै म्हारे झोले़ म्हं घाल दिया था अर मनै भी लोभ आग्या था कि ये टूम तो और किसै की सै पर इब आई लिछमी नै मैं क्यूँ कर नाटज्याँ। इस कारण मैंने यो डिब्बा छुपा लिया पर जिब सुनार धोरे लेग्या तो वो बोल्या- रे, यो तो सारी नकली सै? लेज्या, ठा अड़े ते। मैं न्यूँ सोच कै कि जिब नकली ही सै, तो उल्टी देण आया सूँ। ल्यो संभालो? बहू के बाप नै टूम देखी, तो सन्न रह गया। नकली टूम क्यूँ कर होग्यी? या बात तो घंटू तै पूछणी चाहिये। घंटू धोरे फोन मिलाया अर बोल्या- चौधरी साहब, राम-राम। थम वे टूम कौण सै सुनार तै घड़वाई थी। उस तै हम मिलणा चाहवै सै? घंटू बोल्या- इब कै बात होग्यी?

बहू का बाप बोल्या- एक बै थम उसका पता हम ने बता द्‌ यो। हम भी टूम और घड़वावांगे?

घंटू नै उसै सुनार का पता बता दिया। बहू का बाप वे पुराणी अर

नकली टूम ले के, उसै सुनार धोरे चाल्या गया।

सुनार बोल्या- हाँ जी, बोलो? बहू के बाप नै वे टूम उस तै दिखाई तो वो बोल्या- ये टूम तो घंटू लेग्या था। ये थारे धोरे कित तै आग्यी?

बहू का बाप बोल्या- हम तो इण नै बेचणा चाहवै सै।

सुनार बोल्या- ये तो नकली सै। घंटू म्हारे तै नकली ही लेग्या था। घंटू धोरे फोन कर्‌या, अर नकली टूम आली बात बताई। पहल्याँ तो घंटू साफ नाट ग्या पर जिब सुनार बोल्या तो हाँ मी भर ली। इस तरिया घंटू के लालच की पोल खुलग्यी। रिश्तेदारा के साम्है घंटू नै कायल होणा पड़ा। वे नकली टूम वापिस लेणी पड़ी अर असली टूम अपणी रिश्ते दारी बणी रहवै न्यूँ सोच कै, बहू के बाप तै सौंप दी।

घंटू बोल्या- रै या सारी दुनिया कहवै सै कि- 'लालच बुरी बला सै' पर इस मन नै मैं क्यूँ कर समझाँऊ? बहोत काबू म्हं करा साँ पर फेर भी मन कोन्यी डटे। यो मुफ्त के माल नै तरसे सै। बेरा ना इसी भावना कब अर क्यूँ कर जाग ज्या सै। इब तो आगे तै मन नै बस म्हं राखणा पड़ेगा, ना तो फेर किसै दिन बेइज्जत करवावेगा। 😂😂😂

24.

सपने म्हं लुटग्या

घंटू का छोरा काले़ अव्बल दरजे का बदमाश था। घर कै बरतन भांडे, टूम ठेकरी सब बेच दिये। घंटू उसनै समझा कै हार लिया था पर काले़ की माँ धप्पो उसनै बहोत चाहया करे थी। जिब भी पीसै मांगता वो झट से दिया करै थी। काले़ था भी अकेला अर लाडला। अर न्यू कह् या करै सै, माँ कै लिये तो बेटा ही सब कुछ होवै सै। जान तै भी प्यारा लागै सै पर घंटू इस छोरे तै कतई तंग होग्या था पर न्यूँ भी डरे था कदे यो लिकड़ कै चाल्या गया तो म्हारे भी हाड किते ही पड़े पावैंगे।

एक बै घंटू रात नै खर्राटें पाड़ के सोवण लाग रह् या था। धप्पो अर काले़ भी सो रे थे। रात नै सपनै म्हं घंटू बैड़कण लाग्या, अर बोल्या- अरे! रे-रे! साँप खाग्या रै? यो गया, वो गया, मारो! मारो! अरे, काले़ लाठी ल्या, अर मार इस साँप नै? अरी धप्पो देख, मेरा तो सारा शरीर लील्या होग्या? जल्दी ठा ले चाल्यो, किसै डॉक्टर धोरे? ना तो मैं मरूंगा? धप्पो, अपणै कोणे आले़ बक्शै म्हं बीस हजार रुपये लकोह राक्खे सै अर तेरी सोने आली़ चैन भी धरी सै। ध्यान राखियै। कै बेरा मैं इब्बे मरज्याँ? साँप कै काटै, बचा ना करे सै? मेरा तो मुंह भी भारी होग्या अर नशा सा चढता आवै सै। इब तो धप्पो तू जाणे कै तेरा यो बेटा। थम दुख मत पाइयो ।

धप्पो सुणती रही अर बोल्यी-

घंटू , कित सै साँप? कित खाग्या तनै? अड़े तो कोय साँप कोन्यी? चुपचाप सोज्याँ।

घंटू तो नींद म्हं ही था। बस केवल आँ बोल्या अर खर्राटें पाड़ता रह् या पर कालै नै भी घंटू की सपने आली सारी बात सुण ली। जिब देख्या कि धप्पो अर घंटू गहरी नींद म्हं सो रहे सै तो काले उठ्या अर चुपचाप कोणे आला बक्शा खोल्या। घंटू नै धोती की तह म्हं दो-दो हजार के करारे दस नोट लपेट राक्खे थे, वे लिकाड़ लिये अर एक छोटी सी डीबिया म्हं धप्पो की सोने आली चैन लिकाड़ी अर बक्शे ने धीरे सै बंद कर दिया। फेर चुपचाप सोग्या पर नींद कोन्यी आई। सवेरे चार बजते ही घर तै खिसक लिया। घंटू भी सवेरे उठ्या अर डांगर ढोराँ नै सान्यी न्यार घालण लगग्या। धप्पो भी धार काढण आग्यी ।फेर जिब चाँ पीण लागै तो देख्या आज तो कालै कोन्यी दीख्या, कित ग्या?

घंटू बोल्या- कितै अखाड़े म्हं गया होग्या? आजकाल उसकै पहलवानी का भूत सवार सै। धप्पो तू फिकर ना करे आज्यागा।

पर सांझ होग्यी कालै तो कोन्यी आया। तब घंटू कै भी चिंता होग्यी। धप्पो तो रोवण लागग्यी कि आज कित लिकड़ग्या? जिब सांझ हुई तो कालै एक मोडे नै साथ ए ल्याया अर बोल्या- बाबा, यो सै मेरा बापू अर इसनै रात नै बहोत बुरे-बुरे सपने आवै सै। कदे साँप दीखै सै, कदे चोर दीखै सै। कदे रोवण लागज्या सै कदे हंसै ही हंसै सै। जै थम किमै जाणो सो तो इसका इलाज कर द् यो?

घंटू बोल्या- रे इस मोड्डे तै किसका इलाज करवावैगा? मैं तो बिल्कुल ठीक सूँ। या धप्पो भी ठीक सै?

पर कालै बोल्या- बापू, यो बाबा सही झाड़ा ल्यावै सै। बस एक बै लगवा ले। बाबा नै अपणा मोर के पंखा आला एक बंडल लिकाड़ा अर बोल्या- भगत इब तू ठीक सै, तनै फेर कदे सपनै कोन्यी आवैंगे। इब ल्या मेरी फीस दे पान सौ रुपये?

घंटू बोल्या- सुण मोडे, मैं तनै बुला कै ल्याया था कै? तू अपणे आपै आया था फेर पीसै किस बात के लेवेगा?

मोडा बोल्या- मनै तो यो कालै ले के आया सै। अर चाहे तू दे या कालै दे, मनै चाहिए पूरे पान सौ रुपये।

कालै बोल्या-दे- दे बापू? मेरे धोरे ना सै?

घंटू बोल्या- धप्पो बक्शे तै पान सौ रुपये लिकाड़ कै ल्या अर इस मोड्डे कै मूंड मार दे। धप्पो नै सारा बक्शा छाण मार्‌या पर पीसै तो कोन्यी मिलै ?

घंटू बोल्या- कै होग्या भागवान? ले भी आ, अर इस आफत नै लिकाड़ घर तै। यो कालै तो यूँ ही सांग भरे सै।

धप्पो बोल्यी- सुण घंटू, बक्शे म्हं तो फूटी कोड़ी भी कोन्यी?

घंटू बोल्या- रै ध्यान तै देख?

धप्पो बक्शा ठा कै ल्याई अर घंटू कै साम्हे जोर सै ल्या पटक्या अर बोल्यी- ले देख ले? तू भी कसर मेट ले?

बक्शा देख्या तो कुछ ना मिला। सोने की चैन भी गायब मिली। मोड्या जाणा इब ये तेरे चोरी का इल्जाम लगावेंगे। इस तै तो आच्छा सै अड़े तै खिसक ले।

काल़े बोल्या- ठहरज्या बाबा अपणे पान सौ ले के जाइये।

मोडा बोल्या- मनै कोन्यी चाहवै थारे पान सौ। थम ही बणे रहो।

काल़े बोल्या- बापू, मोडा तो चाल्या गया, इब थम रहण द् यो फेर कदे ढूँढ लियो। थारा नाटक सही टेम पै काम आया। मोडा न्यूँ जाणा कि इब तेरे चोरी का इल्जाम लागैग्या इस कारण खिसक लिया। तेरे झाड़ा भी लागग्या अर थारे पान सौ रुपये भी बचग्ये।

घंटू बोल्या- रै, काल़े हम तो कतई लुटग्ये कोय म्हारे बक्शे म्हं तै पूरे बीस हजार रुपये अर सोने की चैन भी लिकाड़ लेग्या?

काल़े बोल्या- थारे घर म्हं बीस हजार कित तै आग्ये थे?

घंटू बोल्या- रै सिरस्यू बेच कै आया था। उसके पीसै धरे थे पर कोय चोर लेग्या। जै काल़े तू कहे तो थाणे म्हं रिपोर्ट लिखा द् यूँ?

काल़े बोल्या- बस रहण द् यो बापू, थम किसै नै बेकार म्हं ही पिटवाओगे? पुलिस शक के आधार पै कईया की खाल उधेड़ देवैगी। इब जाण दे, गये सो गये।

धप्पो बोल्यी- मैं काल बूझ्या कढवा कै आऊंगी? वो जरूर किसै का नाम बतावैगा ?

पर काल़े बोल्या- री माँ, गया सो गया इब रहण दे।

पर काल़े कई दिनाँ तक मौज उड़ाता रह् या पर जिब चैन बेचण गया तो सुनार नै घंटू ताँ ही फोन कर के बुला लिया कि तेरा काल़े किसै की चैन चोर के ल्याया सै अर इसनै बेचणा चाहवै सै। जै तू आणा चाहवै तो जल्दी आज्याँ। घंटू सुनार धोरे जा लिया अर बोल्या- कित सै वा चैन?

सुनार नै वा चैन दिखाई तो बोल्या- या तो म्हारी ही सै पर काल़े धोरे क्यूँ कर आई? क्यों रे काल़े?

इस तरिया काल़े नै सुपने आली बात बताई। इब जिब काल़े की पोल खुलग्यी तो उसने माफी मांग ली अर चुपचाप दोनों अपणे घराँ आ लिये।

घंटू धप्पो तै बोल्या- मनै तो इस सुपनै नै ही ठग लिया। यो अपणा काले ही चोर सै। जिब मैं सुपनै म्हं बड़बड़ावै था तो इसनै भी सारी बात सुण ली अर उसै रात नै यो पीसै भी लेग्या अर चैन भी। आज पकड़ म्हं आया सै।😂😂😂

25.

बिन बात का पंगा

एक बै आधी रात का टेम था। घंटू के घर म्हं चोर घुसग्या। घंटू के घर म्हं सब कुछ ढूँढ मार्‌या पर कोय भी चीज चोरण नै ना मिली। ना रुपये, ना टूम ठेकरी, अर ना कोय खास बर्तन-भांडे तक भी ना मिले। सारा घर छाण मार्‌या। एकै संदूक थी वो भी खाली पड़्यी थी। घंटू भी खुड़का सुण कै नींद म्हं ही करवट बदलण लाग्या।

तो चोर बोल्या- घंटू, सोवै सै, अक जागै सै?

घंटू नींद म्हं ही बोल्या- हाँ, थोड़ा बहोत जागू सूँ पर बोल कै बात सै? कौण सै तू?

चोर बोल्या- घंटू मैं तो चोर सूँ अर तेरे घर म्हं चोरी करण आया था पर मनै तो चुरावण नै कुछ भी ना मिला। इब बता मैं कै करूँ? कित सै वे टूम ठेकरी?

घंटू बोल्या- जै तनै किमै दीखै सै, तो ठा लेज्या अर मनै सोवण दे।

चोर बोल्या- घंटू, मैं न्यूँ ही तो पूछूँ सूँ, मैं कै ठा के लेज्या?

घंटू बोल्या- अरे घप्पो के दोनों हाथ्याँ म्हं सोना के कड़े सै, अर मंगल सूत्र रह्‌ या?

चोर बोल्या- ठीक सै घंटू, इब तू सोज्याँ।

चोर नै धप्पो के दोनों कड़े लिकाड़ लिए अर गले म्हं तै मंगल सूत्र अर भाग लिया। धप्पो नै रोळा मचा दिया। जोर सै चिल्लाई- चोर! चोर! पकड़ो, पकड़ो।

घंटू की भी आँख खुलग्यी अर झट तै खड़ा होग्या अर धप्पो तै बोल्या- कित सै चोर? क्यूँ कर रोळा मचा री सै?

धप्पो बोल्यी- रै घंटू, मनै तो कती लूट लेग्या। जमा ए नंगी बूची करग्या।

घंटू इधर- उधर भाजण लाग्या। कदे बाहर नै जा, तो कदे भीतर ने देखे पर कोय भी कोन्यी दीख्या तो धप्पो ते बोल्या- इसा कै लेग्या? सब किमै तो घर म्हं सै।

धप्पो बोल्यी- रे घंटू, मेरा तो सब कुछ लेग्या। मेरी तो सुहाग की निशानी तक लेग्या। हाय राम! इब कै करा?

घंटू बोल्या- रै, तू मनै तो बता दे, इसा कै-कै लेग्या?

धप्पो बोल्यी- घंटू मेरे हाथ्याँ के दोनों कड़े लेग्या अर गले का मंगलसूत्र।

हाय राम! लुटग्यी रे?

घंटू बोल्या- कोय ना, सावण आळे मेळे तै और ले आइये। दो आनै की टूम लेग्या सै अर तनै दुनिया म्हं रोळा घाल दिया। देख, रात हो री सै अर रोळा दूर-दूर तक जा सै। सोज्याँ इब, शोर ना मचावै?

धप्पो बोल्यी- सो क्यूँ कर जाऊँ? मेरा सुहाग उजाड़ग्या? तनै तो दो आने का माल लागै सै। किसै लुगाई तै पूछिये, कै कीमत सै इण चूड़िया की अर मंगल सूत्र की। मेरे लिये तो ये अनमोल सै। जै तेरे किमे होग्या तो मैं तो कतई बरबाद होज्यांगी।

घंटू बोल्या- अरे, इब चुप भी होवैगी। कौण से असली सोने के लेग्या सै?

रोला सुण के पड़ौसी भी आग्ये अर बोल्ये- सुणा सै, थारे घर म्हं चोर बड़ग्ये अर या धप्पो क्यूँ कर रोवै सै? इसा कै लेग्ये?

घंटू बोल्या- अरे, चोर इसका सुहाग लेग्ये अर इब या रांड होग्यी। न्यूँ रोवण लाग री सै। जाओ, सो जाओ सवेरे ढूँढ कै ल्यावांगे?

एक बोल्या- घंटू, इब्बै तो तू जीवै सै, फेर या रांड क्यूँ कर होग्यी?

दूसरा बोल्या- हाँ भई, इब तो लुगाई मर्द के जीतै जी रांड होज्याँ सै अर या धप्पो भी उन म्हं तै एक सै।

पहल्या बोल्या- रै आदमी कै जीतै जी लुगाई रांड होज्या सै या बात तो पहली बार सुणी सै कि घंटू के जीतै जी धप्पो एकै रात म्हं रांड होग्यी।

घंटू बोल्या- रै थम चाल्ये जाओ, अड़े तै? इसनै मत भड़काओ या तो पहल्या ही जली-भुणी बैठी सै अर थम आग म्हं घी डालण और आग्ये फेर भी कदे सुणा सै कि आदमी के जीतै जी लुगाई रांड होज्याँ सै। आग्ये बण के तेल की पूरिया के गवाह। लिकड़ो म्हारे घर तै?

पाड़ौसी चाल्ये गये। सवेरे होते ही घंटू के घराँ चोरी की खबर सारे गाम म्हं फैल ग्यी। जिब लोग पूछण आये तो धप्पो फेर रात की ढाल्याँ रोवण लागग्यी अर बोल्यी- री मनै तो कतई नंगी बूची करग्या? म्हारा तो सब कुछ लेग्या। घर म्हं कतई झाड़ू फेरग्या अर यो रिपोर्ट भी कोन्यी करै, दुश्मन?

गाम के लोगाँ कै कहणे तै घंटू थाणे म्हं रिपोर्ट कर आया। घर का सामान कै साथ-साथ धप्पो के हाथाँ के कड़े अर मंगल सूत्र सोने के लिखा आया। पुलिस आई पूछताछ करी। मौके का मुआयना कर्‌या अर चाल्लै गये। चार दिनाँ पाछै पुलिस आले एक चोर नै पकड़ कै ल्याये अर बोल्ये- देख घंटू, एक चोर तो यो सै, जै तू पिछाणे सै तो बता?

घंटू बोल्या- जी मनै तो शकल- वकल कोन्यी देखी, बस आवाज़ ए सुणी थी। जिब मैं उठ् या तो वो भाजग्या था।

घंटू की बात सुण कै चोर बोल्या- साहब, मनै घंटू के घर म्हं चोरी करण आला कोय सामान ना मिला, तो मैं घंटू ते बोल्या- तू सोवै सै अक जागै सै? बता ना, कै चोरी कर के ले जाऊँ? इतणी सुण कै घंटू बोल्या कि धप्पो के गले म्हं मंगल सूत्र सै अर दोनों हाथ्याँ म्हं कड़े सै, ले ज्या? मैं धप्पो के कड़े अर मंगल सूत्र लिकाड़ लेग्या। इब साहब, मेरा कै दोष सै? अर इसके ये कड़े अर मंगल सूत्र सोने कै ना सै, ये तो मेले तै दो आने म्हं खरीदे लाग्ये सै। काल मैं सुनार धोरे गया था उसनै ये सड़क पै फैंक दिये थे, बोल्या- ये मनै लोह के भी ना लागै। भागज्या अड़े तै। नकली सोना बेचण आया सै? बुलाऊँ पुलिस?

चोर बोल्या- साहब, यो सै धप्पो का मंगल सूत्र अर ये दोनों कड़े। इसके सिवाय मैं और कोय चीज ना लेग्या।

धप्पो बहोत राजी हुई अर बोल्यी- रै मेरा सुहाग बचग्या। मनै कै बेरा था कि मेरा ही घंटू मनै रांड बनाणा चाहवै था यो तो चोर ही भला सै जो मेरा सुहाग आला सामान उल्टा ले आया, ना तो घंटू नै तो मनै रांड बनाण म्हं कोय कसर कोन्यी छोड़ी।

पुलिस आला बोल्या- घंटू तो पुलिस तै सोने के कड़े अर मंगल सूत्र लेणा चाहवै था। इस कारण नकली सामान की झूठी रिपोर्ट लिखाई थी।

इस तरिया पुलिस चोर के साथ-साथ, खुद के घर म्हं चोरी कराण के अपराध म्हं अर झूठी रिपोर्ट लिखाण के मामले म्हं, घंटू नै पकड़ लेग्यी। मुकदमा दरज कर्‌या। गाम आले उसकी जमानत दे के छुड़ा के ल्याये। घंटू बोल्या- रै, यो बिना बात का पंगा गले म्हं घलग्या। 😂😂😂

26.

तीस मार खां

एक बै घंटू एक नई मोटरसाइकिल खरीद ल्याया। इब जित भी जाणों पड़े, उत ही अपणी मोटरसाइकिल ठा कै चाल पड़े। कुछ न्यूँ भी दिखाणाँ चाहवै था कि सारे गाम नै बेरा पाटज्याँ कि घंटू नई होंडा मोटरसाइकिल ले आया पर घंटू नै मोटरसाइकिल कम चलाणी आवै थी। घणा बढ़िया ड्राइवर ना था। कई बै अपणे गोड्डे फुड़वा बैठा था। जिब कोई टोक दे तो कह् या करे था- पड़ गिर कै ही सँवार बण्या करै सै।

एक बै ताई धप्पो की जाड़ म्हं दर्द होग्या। तो घंटू धप्पो नै मोटरसाइकिल पै बिठा कै डॉक्टर धोरै शहर म्हं चाल पड़्या। डॉक्टर नै ताई धप्पो की जाड़ फाड़ दी अर दवाई लेके उल्टे घराँ चाल पड़े। जिब घंटू नै मोटरसाईकिल की रेस बढ़ाई तो मोटर साईकिल भाग पड़ी। ताई धप्पो की तो घिग्गी बंधग्यी अर बोल्यी- घंटू धीरे चला ले? पर घंटू कित मानै था और रेस दे दी। जिब मोटरसाइकिल पै पाछै लुगाई बैठी हो तो आदमी इतराया ही करै सैं। रस्ते म्हं एक ब्रेकर आग्या। घंटू नै वो कोन्यी दीख्या, मोटरसाइकिल कुदा दी। ताई धप्पो भी मोटरसाइकिल कै साथ उछली अर ब्रेकर पै पड़ग्यी। घंटू तो दे रेस भगा लेग्या। लोग भाज्ये अर धप्पो नै ठाके सड़क तै दूर बिठा दी। धप्पो के मुँह तै खून आग्ये थे। एक तो जाड़ पड़ा कै आई थी अर इब एक दाँत और टूट ग्या था। धप्पो तै पाणी पिलाया, लोग गाम का नाम पूछण लागै। धप्पो के कई जगहाँ चोट लागग्यी थी। एक भला आदमी धप्पो नै

अस्पताल म्हं लेग्या अर मरहम पट्टी करवाई अर धप्पो नै अपणे घराँ ले आया था। चाँ-पाणी पिला, आराम करण खातिर लिटा दिया अर बोल्या- तनै तेरे गाम छोड़ के आवांगे, तैं चिंता ना कर। थोड़ा बहोत आराम कर ले।

घंटू जिब अपणे घराँ जा लिया तो धप्पो तै बोल्या- धप्पो इब उतर लै, घर आग्या? पर धप्पो तो थी ही कोन्यी? जिब घंटू नै देख्या कि धप्पो तो कोन्यी, कित रहग्यी? तो घंटू घबराग्या बोल्या- या कै हुई? धप्पो कित उतरग्यी? मनै तो मोटरसाइकिल भी ना रोक्यी, फेर कित जा सके सै?

घंटू वापिस धप्पो नै ढूँढ़ण चाल पड़ा। रास्ते म्हं बहोत माणसाँ तै पूछताछ करी पर धप्पो का कोन्यी पता लाग्या? घंटू पूछता-पूछता शहर म्हं डॉक्टराँ धोरै जा लिया। डॉक्टर तै भी पूछताछ करी पर फेर भी धप्पो कोन्यी मिली। उल्टा घराँ चाल पड़ा। न्यूँ सोच विचार करता-करता जिब चाल्या तो सड़क पै उसै ब्रेकर पै मोटरसाइकिल उछली तो इब घंटू गिर पड़ा। दो-चार लोग भाज पड़े, घंटू नै ठाया अर कहण लाग्ये, धीरै कोन्यी चाल्या ज्या कै? यो इतणा बड़ा ब्रेकर भी तनै ना दीख्ये तो आँख ठीक करा ले?

घंटू बोल्या- रै गाम आल़ो मेरी धप्पो खोग्यी? मैं तो उसनै ढूँढ़ण लाग राँ सूँ। मेरा ब्रेकर की ओर ध्यान ना था। जै थमनै बैरा हो मेरी धप्पो कितै देखी हो? लोग बोल्ये- रै वा दोफाराँ म्हं पड़ग्यी थी। वो तू ही था कै? अर तू इबै आया सै? जा वा फत्ते कै घराँ बैठी, ले ज्या उसनै? घंटू फत्ते के घराँ जा पहुंचा तो फत्ते बोल्या- वा तो तेरे घराँ चली गई। घंटू अपणे घराँ पहुंचा तो धप्पो भरी बैठी थी। धप्पो का पारा सातवें आसमान पै चढ़ग्या। झाडू ठा कै घंटू नै मारण चाल्यी पर घंटू का उतरा चेहरा देख कै बोल्यी- कोई शरम लिहाज बची सै अक ना, डूब कै मरज्याँ? मैं पड़ग्यी अर तनै बेरा कोन्यी लाग्या, इसा कदे हो सके सै? घंटू कुछ ना बोल्या, चुपचाप सुणता रह्या। घंटू नै अपणे फूट्टे कोहणी अर गोड्डे धप्पो तै दिखाये। जिब जा कै धप्पो का पारा उतरा। इब धप्पो अपणे कोहणी अर गोड्डे दिखाण लाग्यी जिनके पट्टी बांध राख्यी थी। घंटू नै अपणी गलती मान ली थी पर दोष ब्रेकर का बताया कि लोग सड़का पे इतणे ऊँचे ब्रेकर क्यूँ बणावै सै? जित देखे उतै ब्रेकर ही ब्रेकर बणा राख्ये सै? मेरे जिसा का तो चालणा मुश्किल ही सैं।

धप्पो बोल्यी- तू ही ढंग तै चलाणा सीख ले। मोटरसाइकिल तेज भगाण आल़ा नै कोई ईनाम ना दे अर जो घणे तीस मार खाँ सै उणकै तो न्यूँ ही गोड्डे टूट्या करे सैं। जिब कोई ठोकर लागज्या तो इंसान नै संभल जाणा चाहवै पर एक तूँ सै, जो बार बार गोड्डे फुड़वा कै भी कोन्यी मानै।

घंटू नै धप्पो की बात मान ली अर बोल्या- यो कान पकड़ूया, आज कै पाछै कदे तेज नहीं चलाऊं। 😂😂😂

27.

लापरवाही

घंटू का गाम म्हं कसूता रोब था। दूसरे कै पंग्याँ बीच पड़णा अर फेर लंबड़दारी दिखांदा, फैसला भी करवा दिया करै था। ठगबाजी म्हं भी माहिर था। बहोत लोग्याँ नै ठग्याँ करै था पर एक दिन पासा उल्टा पड़ग्या अर कोय घंटू नै ही ठग लेग्या।

एक बै घंटू अपणी ऊँट गाड़ी ले के बजार म्हं चाल्या गया। दो आदमियाँ नै घंटू की ऊँट गाड़ी भाड़े म्हं कर ली। पूरे पाँच सौ रुपये भाड़ा तय कर लिया अर चार बोरी बिनोलै लाद कै चाल पड़े।

घंटू तो न्यू राजी होर्‌या था कि सोरे दिन म्हं भी इतणे रुपये ना कमाये जा अर आज तो पूरे पाँन सौ मिलेंगे। मेरी घर आळी बहोत राजी होवैगी। छोरे की स्कूल की फीस देणी सै अर किताब कापी ल्याणी सै अर कपड़े लत्ते भी सिमाणे सै। घर आळी नै भी एक सूट दिलाऊँगा अर मेरी धोती भी झीरमझीर होग्यी, एक धोती मेरी भी ल्याऊँगा। घर का सामान भी ले जाणा सै। सोचता रह्‌ या अर आगे चालता रह्‌ या। अपणी डींग भी हाँकता रह्‌ या। वे दोनों आदमी भी उसकी हाँ म्हं हाँ मिलाते रहे अर गप्पे मारते रह्‌ ये। जिब पाँच-छः कोस चाल लिये तो आगे पहाड़ी रास्ता आग्या था अर दो रस्ते बणग्ये। एक आदमी बोल्या- घंटू उस रस्ते चाल्यांगे, वो छोटा रास्ता सै। घंटू नै गाड़ी उसै रस्ते पै मोड़ दी। जिब घणा जंगल आग्या तो दूसरा बोल्या- घंटू उस कोटड़े

धोरे गाड़ी रोक लिए ।थोड़ी देर आराम कर ले।
पर इब तो सांझ होण नै आग्यी थी। घंटू बोल्या- थम जल्दी कर ल्यो, मनै तो उल्टा भी जाणा सै।

फेर एक आदमी बोल्या- इब तो तू म्हारे साथ ए चाल। तड़कै उल्टा आ जाइये पर घंटू कोन्यी मान्या, बोल्या- मैं तो इब्बै उल्टा ज्यांगा। जिब गाम म्हं पहुंचे तो अंधेरा होग्या था। उन दोनवाँ नै सही ठिकाणे पहुंचा दिया तो एक बोल्या- घंटू इब तू रोटी खा ले अर सोज्या, तड़के चाल्या जाइये। घंटू फेर मना करग्या अर चाँ पाणी पी कै अर पान सौ रुपये ले के उल्टा चाल पड़ा। इब अंधेरी रात अर सुनसान जंगल का रास्ता पर घंटू तो कतई निडर हो के चालता रह् या जिब उसै कोटड़े धोरे पहुंचा तो देख्या कि तीन आदमी बैठे सै, अर दारू पीण लाग रै सै। एक बोल्या- ऊँट आले राम-राम। कित ज्यागा? आज्या दम ले ले?

घंटू नै राम-राम ली पर कोन्यी रुक्या, चालता रह् या। उन म्हं तै दो टूट कै पड़े अर बोल्ये- हम तनै रोकण लाग रे अर तू भाज्या जा सै। किमै घणी अकड़ सै कै? घंटू ठहरग्या अर बोल्या- बोलो कै बात सै?
एक बोल्या- तलै नै पड़ ले अर आज्या बैठ ज्या?

घंटू बोल्या- देखो इब तो वार होग्यी अर फेर मनै घणी ही दूर जाणा सै।

दूसरा बोल्या- आज्या एक दो पैग मार ले फेर चाल्या जाइये।

तीसरा भी न्यू हे बोल्या- आज्या खागड़ क्यूँ कर मना करै सै।

घंटू नै गाड़ी तै तार लेग्ये। घंटू के भी दारू का नाम सुण कै मुंह म्हं पाणी आग्या अर उन धोरे जा बैठ् या। एक नै दो पटियाला पैग बणा कै घंटू ताहीं दे दिये।

घंटू ने भी दोनों पैग जल्दी-जल्दी खींच लिये अर बोल्या- अच्छा भाइयों राम-राम। न्यूँ कह कै चाल पड़ा पर घंटू कै तुरंत नशा होग्या अर थोड़ी दूर चालते ही गाड़ी म्हं पसरग्या। उन म्हं तै एक उसके पाछै-पाछै चाल्या गया। उसनै देख्या कि घंटू कती नशे म्हं टुल्ल होग्या तो उसनै गाड़ी तै तार कै जंगल म्हं पटक दिया अर गाड़ी ले के चंपत होग्या।

घंटू रस्ते म्हं पड़ा रह् या। रात नै जिब उसनै होश आया तो देख्या कि ना ऊँट अर ना गाड़ी। इब घंटू कै करै? घंटू कै तो पसीने आग्ये। उल्टा उसै कोटड़े की ओर चाल पड़ा। कोटड़े पै पहुंचा तो कोय भी ना मिला। माथा पकड़ कै बैठग्या अर सोचता रह् या कै-कै सपनै संजोएँ थे। सब पै पाणी फिर ग्या। इब गाम आले मेरी खिल्ली उड़ावेंगे। मैं गाम म्हं जा कै कै मुंह दिखाऊँगा? आज तो बुरी तरिया ठगाग्या। दिन लिकड़ा जिब अपणे घरां पैदल चाल पड़ा। थाणे म्हं जा कै पुलिस म्हं रिपोर्ट करी।

घंटू नै अपणी सारी राम कहाणी पुलिस तै बताई। वे बोल्ये- घंटू गलती तो तेरी ही सै। तनै उनकी दारू क्यूँ कर पी ई। जिब तनै वे जबरदस्ती रोकण लाग रे थे। तब तू उन धोरे क्यूँ ठहरा? पर कोय ना हम पूरी कारवाई करांग्ये। पुलिस आले उसनै बिठा कै उसै कोटड़े पै लेग्यी। फेर जिनके बिनोलै तार कै आया था उनके धोरे गये पर खाली हाथ लोट आये। काफी कोशिश करण तै भी ना तो ऊँट मिला अर ना गाड़ी।

हार कै अपणै घराँ आग्या। गाम कै लोग्याँ नै जिब घंटू कै ऊँटगाड़ी की खबर लाग्यी तो उस तै मिलण आये। कई बोल्ये- हम पता लगावांगे। घंटू गाड़ी मिलज्यागी पर घंटू ने आज तक ना कोय ऊँट मिला अर ना कोय गाड़ी। सबर कर कै अपणे घराँ बैठग्या अर बोल्या- भाई कर माँ कै लेख आगे आवैं सै। लोग कह्‌ या करे सै -

लापरवाही तै काम बिगड़ा ही करै। फेर तो पछताणा ही पड़ै सै। 😂😂😂

28.

अनाड़ी अकल

घंटू म्हं मिलावट करण की आदत थी। कोय भी चीज उस धोरे हो, उस म्हं मिलावट कर कै बेच्या करै था। तूड़ी बेचे तो उस म्हं रेत मिला कै बेचे, दूध म्हं पाणी मिला कै बेचे, घी म्हं डालडा या रिफाईंड मिला के बेचे, नये गेहूं म्हं पुराणे मिला कै बेचे और भी भतेरी चीज थी जिस म्हं वो मिलावट कर्या करे था।

एक बै झंडू बजार म्हं सिरस्यू बेचण चाल्या गया। लाला जी नै सिरस्यू की छणाई करी तो उस म्हं डेढ़ बोरी राला़ लिकड़ा। झंडू न्यू सोच कै कि इसका तेल लिकड़वांगे, डेढ़ बोरी राला़ अपणे घराँ ले आया अर बाकी सिरस्यू बेच आया। झंडू नै या बात घंटू तै बताई तो घंटू बोल्या– झंडू यो सारा सिरस्यू का राला़ मनै दे दे। झंडू नै वो राला घंटू तै पाँच सौ म्हं बेच दिया।

घंटू डेढ़ बोरी राला़ अपणे घराँ ले आया अर अपणी चार बोरी सिरस्यू म्हं वो राला़ रला़ दिया। फेर उसनै बजार म्हं बेचण चाल्या गया। अपणी छः बोरी सिरस्यू एक दूसरे लाला जी की दुकान म्हं गेर आया। लाला जी नै तौल कर कै सिरस्यू ले ली। सारी सिरस्यू छः बोरी हुई। आगले दिन जिब बोल्यी लाग्यी तो लाला नै घंटू की गैर हाजिरी म्हं उसकी सिरस्यू बेच दी। लाला जी नै घंटू की गैर हाजिरी म्हं सिरस्यू की छणाई करवा दी, तो उस म्हं दो बोरी राला़ की लिकड़ी। बाकी चार बोरी लाला नै बेच दी ।घंटू

लाला तै अपणा हिसाब करण चाल्या गया। जिब दुकान पै पहुंचा तो लाला बोल्या- घंटू निरा राला मिला कै ल्याया था। रै छः बोरियाँ म्हं दो बोरी राला लिकड़ा सै। ये तेरी राला की बोरी पड़ी। लेज्या इसनै ठा कै?

घंटू बोल्या- लाला कै बात करे सै ? मेरी तो अव्वल दरजे की सिरस्यू थी। यो राला किसै और का होग्या? नहीं तू न्यूँ बता कदे पहल्या भी इतणा राला लिकड़ा था कै? लाला तू बेईमानी ना करै, मैं तो छः बोरी डाल कै गया था या हेराफेरी तो तन्नै करी सै।

लाला बोल्या- घंटू, तू पक्का बेईमान सै। एक तो तेरी सिरस्यू हल्की थी इसकी टेस्ट रिपोर्ट भी तो कम ही आई सै। मनै इसा लागै सै तू राला मिला कै ल्याया सै।

पर घंटू तो कतई अनाड़ी था, अड़ग्या अर बोल्या- लाला, पीसै पूरे ल्यूँगा? कै तो राजी-राजी दे दे ना तो पुलिस बुलाऊँगा।

लाला बोल्या- पुलिस तो मैं बुलाऊँगा। इब्बै ले?

लाला नै थाणे म्हं फोन कर दिया। तो घंटू बोल्या- लाला, मैं तो यूँ ही मजाक करै था। मामलै नै आपस म्हं निपटा ल्यो। कै करोगे पुलिस नै बुला कै। यो राला अर रोला तो तेरे-मेरे बीच म्हं सै।

थोड़ी देर म्हं पुलिस आग्यी। पुलिस आला बोल्या- कहो लाला कैसे याद कर्‌या?

लाला बोल्या- यो घंटू सिरस्यू बेचण ल्याया था। मनै सिरस्यू की छणाई करवाई तो उस म्हं दो बोरी राले की लिकड़ी। इब यो उस राले नै भी सिरस्यू कह कै बेचणा चाहवै सै। अर पूरे पीसै मांगै सै? इस मंडी म्हं इतणे जमीदार अपणा नाज दाणा बेचण नै ल्यावै सै अर हम सबकी पहल्या छणाई करवा कै अर फेर बोली लगवाया करै सै। कोय ऐतराज कोन्यी करे। अर फेर इस कूड़े नै कौण लेवैगा? मैं तो कोन्यी लेंदा?

पुलिस आला बोल्या- बोल घंटू ,कै चाहवै सै? चाल थाणै म्हं चाल। तेरा अर लाला का हिसाब थाणै म्हं ही कर्‌यांगे।

घंटू बोल्या- लाला नै छणाई मेरे पाछै तै कराई सै। मेरे साम्हे ना कराई। कै बेरा और किसै का राला मिला दिया हो?

लाला बोल्या- अड़े तो हर आदमी अपणा राला साथ ले के जाया करै सै। कोय छौड़ कै ना जा।

लाला नै पुलिस आले की ओर इशारा कर्‌या तो पुलिस आले घंटू नै थाणे

म्हं ले के चाल्ये गये ।

पुलिस का एक होल्दार बोल्या- घंटू इब तो साच्ची बता दे। हम तनै राळे कै पीसै भी दिवावांगे? अर जै झूठ बोल्यी तो तेरे पै मुकदमा भी दर्ज करांग्ये अर तेरी कंबल परेड भी करांग्ये।

कंबल परेड का नाम सुण कै घंटू डरग्या अर बोल्या- साहब किमै लाला से कम दिवा दो? पर फैसला करवा द्‌ यो।

होल्दार बोल्या- कितणे लेग्या? छणाई आळे भी लेग्या कै?

घंटू बोल्या- हाँ साहब, पूरे दिवा द्‌ यो। अर साहब थम लाला नै मत बताइयो। मैं तो डेढ़ बोरी राळा रळा कै ल्याया था।

होल्दार बोल्या- हाँ, न्यू आ लेण पै। पर यो राळा कित तै ल्याया? पहल्याँ का बचा पड़ा था कै?

घंटू बोल्या- मैं तो यो झंडू का ल्याया था? चार दिन पहल्याँ वो सिरस्यू बेचग्या था। वो बोल्या कि मेरे इस राळे नै बेच दे, फेर पीसै भी आधे-आधे कर ल्यांगे। यूँ मैं दड़ा करके अपणी सिरस्यू म्हं मिला कै लाला कै डालग्या था।

होल्दार बोल्या- तो इस राळे के आधे पीसै झंडू भी लेग्या अर आधे तू लेग्या। फेर म्हारा हिस्सा कौण देवे गा?

घंटू बोल्या- थम चाहे सारे राखल्यो पर उस लाला धोरे मत छोड़ दियो? वो तो कदे तै ही म्हारा शोषण करै सै। म्हारी फसल नै वो मन मरजी मोल म्हं खरीद लेवे सै अर मजबूरी म्हं बेच कै जाणी पड़े सै, ना तो यो लाला घराँ जा लेवे सै। उधार म्हं बेरा ना किस तरिया सूद लगावै सै। मूल मूल ही चुकाया जा सकै सै अर यो उस सूद नै फेर मूल बणा लेय सै। इसका कर्जा आज तक कोन्यी उतरा सै। इब मैं थम नै अपणे मन की बात बतादी आगै थारी मरजी।

लाला जी भी थाणे म्हं आग्या था।

पुलिस आळे बोल्ये- क्यों लाला जिब घंटू बोरी ले के आया तो तूने इस की सिरस्यू इसके साम्हे क्यों नहीं छाणी? जै इस कै साम्हे छणाई हो ज्याती तो यो रोळा भी ना होता। गलती तो लाला तेरी भी सै। घंटू भी ठीक कहवै सै मनै कै बेरा यो राळा मेरी सिरस्यू तै ही लिकड़ा सै?

लाला बोल्या- या तो भूल होग्यी साहब। मनै तो घंटू पै भरोसा था कि यो मेरी बात मान लेग्या। अपणे गाम का निजी गाहक समझ कै मनै इस की गैर हाजिरी म्हं छणाई करवा दी थी।

होल्दार बोल्या- जै तू इसनै अपणा खास मानै सै अर गलती मानै सै तो

इसनै पूरे पीसै दे दे यो फेर तेरे धोरे ही तो आवैगा और कित ज्यागा? फेर वसूल कर लिये।

लाला बोल्या- होलदार साहब थम भी मनै ही दबा रे सो। इस घंटू नै तै भी तो कुछ ल्यो?

पुलिस नै घंटू की सिरस्यू के सारे पीसै दिवा दिये अर घंटू नै राळे का तीसरा हिस्सा एक होलदार तै दे दिया अर बोल्या- साहब थमनै मेरा यो केस सुलझाया सै ये थारे चाँ पाणी कै सै मेरी ओड़ तै। लाला जी टुकर-टुकर दीदे फाड़ कै देख ता रह् या।

पुलिस आळे बोल्ये- लाला आगै तै ध्यान राखिये, कदे फेर कोय आँट म्हं घंटू आज्या।

इस तरिया घंटू, झंडू के राले नै भी सिरस्यूँ के भाव बेच आया। इस नै कह सै अनाड़ी अकल। 😂😂😂

29.

पुलिसिया रोब

एक बै पुलिस आले चौराहे पै बैरीकैट लगा कै व्हीकलाँ नै चौक करण लाग रे थे। अर एक रजिस्टर म्हं गाड़ियां के नंबर, नाम, पता आदि लिखण लाग रे थे। व्हीकलाँ की लांबी लेण लाग री थी। कई इसै भी थे जो पुलिस आला के जाणकार थे वे लेण तोड़ के लिकड़ रे थे। घंटू नै भी अपणी स्कूटी लेण तोड़ कै आगे लगा दी तो थाणेदार भड़क कै बोल्या- क्यों रे मास्टर, तनै या लेण ना दीखै कै? हम न्यूँ ही झख मार रह् ये सा कै? लेण म्हं लागज्याँ? बहोत जल्दी कर रह् या सै?

घंटू नै अपणी स्कूटी वापिस मोड़ कै लेण म्हं लगा ली। घंटू सोचण लाग्या कि यो थाणेदार मनै क्यूँ कर जाणै सै। जरूर कोय जाणकार सै। मनै तो यो भूंडू लागै सै यो तो बहोत घणे दिनाँ पाछै मिला सै पर यो मनै जाणे सै फेर भी डाट मारै सै।

जिब घंटू स्कूल म्हं हैड मास्टर था तो भूंडू स्कूल म्हं सबतै फिसड्डी बालकाँ म्हं था। पढण-लिखण म्हं रोज पिटा करे था। कई बार घर आले उलाहणा ले के स्कूल म्हं आया करे थे पर मास्टर जिब उसकी शिकायत अर कारनामे सुणाते तो उल्टे चाल्ये जाया करे थे। भूंडू भी अपणी गलती मान कै माफी मांग लिया करे था। अर घंटू भी उसनै वारनिंग दे के छोड़ दिया करे था। कह् या करे था कि भूंडू पढ़ ले या पढ़ाई बहोत काम आवैगी।

जैसे-तैसे भूंडू नै बारहवीं

जमात पास करी अर स्कूल छोड़ कै चाल्या गया। फेर पुलिस म्हं भरती होग्या था।

इब घंटू भी प्रिंसिपल बणग्या था अर अपणे स्कूल म्हं ही जा रहा था। आज लेट होग्या था। इस कारण अपणी स्कूटी लेण तोड़ के आगै अड़ा दी थी। जिब घंटू की बारी आई तो फेर थाणेदार बोल्या- यो देख ल्यो सरकारी स्कूल का मास्टर सै अर दूसरा नै नियम सिखावै सै पर खुद नियम तोड़े सै। अड़े तो इसै आदर्श वादी आवै सै।

एक सिपाही कड़क के बोल्या- ल्या कागच दिखा?

थाणैदार फेर बोल्या- ल्या, इसकै कागच तो मैं खुद देखूंगा।

घंटू नै देख्या कि यो तो भूंडू ही सै। अपणे कागच ले के साम्हे जा खड़ा हुया अर बोल्या- ल्यो होलदार साहब, देख ल्यो मेरे कागज?

भूंडू थाणेदार नै जिब होलदार का नाम सुण्या तो छोह म्हं आ कै बोल्या- क्यों रे मास्टर, मैं तनै होल्दार लागू सूँ कै? मेरे तीन-तीन स्टार लाग रे तनै ये भी ना दीखै कै? अर तू मनै होल्दार कहवै सै? लगा साइड म्हं इस डिब्बे नै? तेरा तो परचा ही फाड़णा पड़ेगा ?

थाणेदार की इतणी डाट खा के भी घंटू फेर बोल्या- होल्दार साहब, मनै जाण द्‌ यो। मैं तो पहल्याँ ही लेट होय रह्‌ या सूँ।

थाणेदार बोल्या- मास्टर, मैं तनै जाणू सूँ कि तू घंटू हैड मास्टर सै। पर तू जाण बूझ के मनै होल्दार बोल्ये सै। इभी तनै मेरा पुलिस आला रोब ना देख्या सै? बोल फाड़ द्‌ यूँ तेरा परचा?

घंटू बोल्या- जिब तनै न्यूँ बेरा सै कि मैं घंटू हैड मास्टर सूँ पर तू भी तो मनै मास्टर कह कै पुकारे सै। अरे तू तो एक सिपाही ते थाणेदार बणग्या पर फेर भी पुराणी आदत कोन्यी भूल्याँ कै? जाणै सै तू कितणा कामचोर अर पढाई म्हं कमजोर था। कितनी शरारत कर्‌या करे था। जै मैं तनै माफ कोन्यी करदा अर तेरा नाम काट देता तो बण जाता कै थाणेदार? तनै न्यूँ भी बेरा सै कि मैं स्कूल का प्रिंसिपल सूँ पर तू भी तो जाणबूझ कै मनै मास्टर कहवै सै। अरे हम तो मास्टर सुण कै भी खुश होज्याँ सै। हम मास्टर जिसनै जो बणाणा चाहे वो ही बणा देवा साँ। तनै थाणेदार भी किसै मास्टर नै ही बणाया सै। इब मेरे कागज देख ले अर मनै जाण दे अर हाँ स्कूल म्हं और भी कई भावी पुलिस आले, थाणेदार, नेता, डॉक्टर, अफसर अर कई किस्म के नौकर आदि बाट देख रै सै।

भूंडू थाणेदार के मन म्हं भी अपणे गुरु जी के प्रति प्रेम उमड़ आया था। उसकी आँख्याँ म्हं सम्मान की झलक दिखाई दे रही थी पर ड्यूटी पै हाजिर था इस कारण कागज पलटते हुये बोल्या- गुरु जी, आपके सारे कागज देख लिये सै। थारे सारे कागज पूरे सै अर इब थम जा सको सो अर जै कदे भी थमनै भूंडू की जरूरत पड़े तो एक बै अजमा कै देखियो जरूर। अच्छा राम-राम। 😂😂😂

30.

घर जमाई

घंटू के एकै छोरा था। उसका ब्याह सगाई ना हुया था। कई सगाई आले आये पर सब उसने नापसंद करज्या थे। काम धंधा भी कोन्यी करे था। फेर इसै लुंगाड़े नै कौण ब्याह् वै था। उमर भी तीस कै लग्गैभगैथी। इब तो घंटू नै चिंता होग्यी थी। गाम कै मवालियाँ तै उसकी दोस्ती थी। रोज कोय न कोय उलाहणा त्यार मिलै था। कई बार पंचायत नै जुर्माना भी ठोक्या पर कतई ना सुधरा। इब तो घंटू न्यू चाहवै था कि यो घर तै लिकड़ ज्या तो चैन मिले।

पर छोरा बोल्या- बापू तेरी छाती पै रहूँगा, छाती पै।

घंटू की घर आली पहल्या तो न्यूँ जाणती रही कि म्हारे एकै छोरा सै, जै यो कितै लिकड़ग्या तो बुढ़ापा किस कै सहारे कटेगा? पर इब तो उसके भी नाक म्हं दम आग्या था। सारे गाम म्हं इस छोरे की बदनामी के चिठ्ठे लोग बाचण लाग रे थे।

एक दिन कालै घंटू के छोरे नै देखण आग्या। गाम म्हं किसै कै घरां जा कै घंटू के छोरे के कारनामा के बारे म्हं पड़ताल करी। फेर घंटू के घरां जा लिया अर घंटू तै बोल्या- राम-राम साहब जी।

घंटू बोल्या- राम-राम भाई। पहचाणा कोन्यी? कौण सो?

कालै बोल्या- मेरा नाम तो कालै सै अर थारे छोरे का रिश्ता करण आया सूँ।

घंटू बोल्या- ठीक सै कालै। कुर्सी पै बैठ ज्या। सुणा, गोत मिला ले?

कालै बोल्या- गोत कै मिलाणे सै। कोन्यी मिलै।

घंटू बोल्या- यो छोरा किसनै बताया सै?

कालै बोल्या- घंटू, बात न्यू सै तू इस छोरे तै दुखी सै। बोल सै अक ना? अर मैं अपणी छोरी तै दुखी सूँ। मेरी छोरी भी कंट्रोल तै बाहर सै, अर यो तेरा सपूत भी थारे कंट्रोल म्हं ना सै। इस तरिया तेरा अर म्हारा यो रिश्ता बणै सै ।

घंटू बोल्या- कालै तू कहवै तो ठीक सै। म्हारा तो सही म्हं कपूत सै पर जै तेरी या हे इच्छा सै तो हमनै तो यो रिश्ता मंजूर सै। कै पता तेरी छोरी इसनै सीधा कर दे?

कालै बोल्या- सुण घंटू, एक बात और सै। मेरे कोय छोरा ना सै। बस या एकै छोरी ही सै। इस कारण तेरे छोरे नै घर जमाई बण कै रहणा पड़ेगा। मेरी छोरी तेरे घर म्हं बहू बण कै कोन्यी रहेगी। बल्कि तेरे छोरे नै ही ब्याह कै पाछै मेरे घर रहणा पड़ेगा अर इस नै कतई पादरा बणा देग्यी।

घंटू नै सोच्यी या तो और भी आच्छी बात सै। छोरे की बदनामी तै तो पैंडा छूट ज्यागा। यो जित भी रहणा चाहवै रह लेग्या अर फेर कालै की जमीन का भी यो ही मालिक रहवैगा। घंटू नै पक्की हामी भर ली अर बोल्या- कालै, मैं तो इस रिश्ते तै बहोत खुश सूँ। आगै तू जाणै?

कालै बोल्या- तू परसो अपणे छोरे नै ले के म्हारे घरां आ जाइये। छोरा-छोरी आपस म्हं एक दूसरे नै देख लेवैंगे अर ब्याह कर द् याँगे।बेशक खाली हाथ आ जाइये।

घंटू राजी होकै अपणे छोरे नै लेके कालै कै घराँ जा पहूँचा। छोरा-छोरी आपस म्हं मिले अर दोनों ब्याह के लिए त्यार होग्ये। कालै बोल्या- घंटू, आजै ब्याह करांग्ये?

घंटू बोल्या- न्यू थोड़ी हुया करे सै। थम छोरे की सगाई लग्न तो लिखाओ अर दोनवा नै बान बिठाओ। फेर हम बारात ले के आवांग्ये। फेर ब्याह होवैगा। फेर चाहे तू इस छोरे नै अड़े ही राख लिये।

कालै बोल्या- ब्याह तो होणा ही सै, दो दिन पाछै कै होवेगा ।मैं तो आजै फेरे फेरूँगा। जै मंजूर सै तो बोल, ना तो या राह पड़ी।

घंटू का छोरा बोल्या- बापू, क्यूँ आई लिछमी नै नाटै सै। क्यूँ बारात ल्या कै बिगाड़ खाता करै सै। यो कालै ठीक कहवै सै। इब तू भी मानज्याँ।

घंटू बोल्या- जिब छोरा भी न्यू ही चाहवै सै तो ठीक सै। इब आगै कालै

की मरजी ।

कालै नै एक पंडत बुला कै छोरा छोरी कै माला घलवा दी अर बेदी बणा कै फेरे फेर दिये अर घंटू तै बोल्या- चौधरी घंटू राम जी, इब थम अपणे घराँ जाओ। थारा छोरा तो आज तै ही घर जमाई बण ग्या।

घंटू बोल्या- कालै, एक बार तो बहू सुसराड़ जाया ही करै सै ।इसने भेज दे। फेर हम भी तो बहू के रंग चाव करांग्ये।

कालै बोल्या- ना चौधरी साहब, या तो पहल्याँ ही खोल बांध हो ली थी कि छोरा घर जमाई रहवैगा। इब तू अपणे घराँ चाल्या जा।

घंटू अपणे घराँ खाली हाथ लोट आया। बल्कि अपणे छोरे नै भी खो बैठ्या।

उसकी घर आली बोल्यी- घंटू, तू बहू नै एक बार तो घराँ ले के आता। इब मैं गाम की लुगाइयाँ नै कै मुंह दिखाऊँगी? अर क्यूँ कर समझाऊँगी? ये सब मनै तान्नै मारेंगी अक दिखावै ना कित सै बहू?

घंटू का छोरा कतई सीधा होग्या था। सारा दिन खेत क्यार म्हं लाग्या रहवै था। जिस दिन भी काम ना करे था उस दिन तो उसनै टूक भी ना मिले थे अर उसकी घर आली तो सीधी टांगा पै डंडे मारण लागग्यी थी। इब तो कतई लेण पै आग्या था।

घंटू अर उसकी घर आली ही बेटे बहू तै मिलण चाल्ये गये तो बहू नै पाणी की भी ना पूछी अर बोल्यी- कै लेण आये सो? इब अड़े थारा कुछ ना सै। उल्टे चाल्ये जाओ फेर कदे शक्ल ना दिखाइयो। कालै नै तो एक घर जमाई, बटेऊ ही ना बल्कि एक कमाऊ पूत अर खेत म्हं काम करण आला नौकर, घर का चौकीदार, सेवादार फ्री म्हं ही मिलग्या था। 😂😂😂

31.
गंड्याँ की पूली

एक बै घंटू नै बजार म्हं दुकान कर राख्यी थी। एक दिन एक अनजाण आदमी सिर पै गंडा की पूली लिये आया अर बोल्या- जीजा राम-राम, और सुणा कै हाल सै?

घंटू बोल्या- राम-राम पर आप कौण सो? मैं तो कोन्यी जाणू?

वो बोल्या- जीजा आप भी कमाल करो सो, मनै कोन्यी पिछाणे कै? मैं झूंडिया सूँ, झूंडिया।

घंटू बोल्या- तू कौण सा झूंडिया सै, मैं ना जाणा? कौण सा गाम सै तेरा?

झूंडिया बोल्या- मैं तो गुड़गाम्ये तै आया सूँ अर थारे बड्डे भाई का साला सूँ। इब भी जै कोय शक सै तो फोन करके पूछ ल्यो?

घंटू का भाई सचमुच गुड़गाम्ये ही ब्याहा था पर मैं तो भाई के साले अर बालकाँ नै जाणू सूँ फेर यो झूंडिया कौण सै या समझ म्हं कोन्यी आई पर खैर जिब कहवै सै तो मान ल्यू सूँ अर बोल्या- हाँ तो झूंडिया आज क्यूँ कर आणा होग्या? घर परिवार म्हं तो सब राजी खुशी सै?

झूंडिया बोल्या- पहल्या तो मनै चाँ पाणी प्या द् यो अर फेर मैं रोटी खाँग्या?

घंटू नै उस तै पाणी पिलाया अर चाँ पिलाई। एक घंटे पाछै रोटी भी खिलाई।

फेर झूंडिया बोल्या- जीजा मैं थारे धोरे एक खास काम तै आया सूँ। तू

मनै पचास रुपये दे दे। मैं यूँ गया अर घंटे म्हं ही उल्टा आया अर फेर मेरी या गंड्या की पूली भी थारे धोरे ही सै। मैं उल्टा आ कै ले जाऊँगा।

घंटू नै सोच्यी यो रिश्तेदार सै अर कै पचास रुपये की बात सै। जै मांगे सै तो देणा ही चाहिए अर फेर रिश्तेदार कै तो रिश्तेदार काम आया ही करे सै। घंटू नै उस तै पचास रुपये दे दिये अर झूंडिया पचास रुपये ले के चंपत हुया।

इब सांझ होग्यी थी पर झूंडिया तो कोन्यी आया। आगले दिन भी ना आया तो घंटू नै अपणे भाई धोरे फोन कर्या अर बोल्या- भाई तेरी सुसराड़ ते झूंडिया आया था अर गंड्या की पूली तो धरग्या अर पचास रुपये लेग्या।

घंटू का भाई बोल्या- कौण झूंडिया? मैं किसै झूंडिया- वूंडिया नै ना जाणू? कोय और ही होग्या?

घंटू बोल्या- तो भाई इब कै करा?

उसका भाई बोल्या- वो तो कोय टीकड़पाड़ सै। भूख्या मरता होग्या इस कारण आग्या होग्या। जै फेर आज्या तो भगा दिये। झूंडिया एक हफ्ता तक ना आया।

हफ्ता पाछै झूंडिया आया अर बोल्या- जीजा राम-राम अर अपणी गंड्याँ की पूली नै ढूंढण लाग्या।

घंटू बोल्या- राम-राम। सुणा आज क्यूँ कर आणा हुया।

झूंडिया बोल्या- मैं तो गंड्याँ की पूली इतै छोड़ग्या था उसनै लेण आया सूँ।

घंटू बोल्या- कब छोड़ग्या था? कितनै दिन हो लिये?

झूंडिया बोल्या- घंटू तेरी सलहज बीमार होग्यी थी इस कारण म्हं आ कोन्यी सका। फेर गंड्या की पूली याद आई। वा थारे तो किमै काम की ना अर बजार का काम न्यूँ सोच कै लेण आया सूँ। बत्या दो कित धर राख्यी सै? मैं तो कतई ताजा गंड्ये ल्याया था।

घंटू बोल्या- ल्या पहल्या मेरे पचास रुपये दे? अर फेर गंड्याँ की बात करांग्ये?

झूंडिया बोल्या- जीजा, थारे पचास रुपये भी द् यूँगा । कार व्यवहार म्हं कै शरम सै? मन साफ होणा चाहिए। इब ल्याओ मेरे गंड्ये?

घंटू बोल्या- तेरे गंड्ये तो बालकाँ नै चूस लिये। इब तो एक भी गंड्या कोन्यी?

झूंडिया बोल्या- मनै बेरा था तू मेरे साथ धोखा करेगा। थमनै मेरे गंड्ये

भी चूस लिये। मैं तो थाणे म्हं रिपोर्ट करूँगा?

घंटू कै पड़ौसी दुकानदार भी आग्ये थे। एक बोल्या- तू गंड्चे आला सै कै? कितनै कै ल्याया था?

झूंडिया बोल्या- पूरे साठ रुपये कै ल्याया था अर चालीस भाड़े कै लाग्ये सै पूरे सौ रुपये बणै सै पर आपनै मनै चाँ पाणी प्याया अर रोटी खुवाई थी। इस कारण आप मनै गंड्या के पीसै तो देय दो?

दुकानदार बोल्या- कितने दिन होग्ये?

घंटू बोल्या- एक हफ्ता पूरा होग्या।

दुकानदार बोल्या- एक पूली का दस रुपये रोजाना के हिसाब तै सत्तर रुपये किराया बण्या अर पचास नगद लेग्या था। घंटू नै तेरी पूली की चौकीदारी करी सै। इब तू घंटू नै पूरे एक सौ बीस दे नहीं तो तनै चार सौ बीसी के केस म्हं बंद करवावांगे? कहै तो सौ नंबर पै फोन करूँ ? इब्बे पुलिस आज्यागी।

झूंडिया बोल्या- घंटू मैं तो मजाक कर रह् या था। कोय ना थारे अर म्हारै के बालक अलग-अलग सै। इब चूस लिये तो चूस लिए।

दुकानदार बोल्या- एक सौ बीस लिकाड़? तेरे जैसे ठग बेरा ना कितणे आवै सै? लिकाड़ रुपये?

झूंडिया तो घंटू नै सचमुच ठगण आया था पर इब तो उल्टा पासा पड़ग्या। चुपचाप रुपये दे के अपणा पिंड छुड़ाया। घंटू नै एक सौ बीस रुपये ले लिये अर बोल्या- आज तै हम तनै साला ही मानाँग्ये फेर आ जाइये। 😂😂😂

32.

चौबारे म्हं ऊँट

घंटू धोरे एक बहोत सुथरा अर तगड़ा ऊँट था। इस ऊँट नै कई लोग देखण आया करे थे। घंटू भी इस नै मेले म्हं दिखाणे ले जाया करे था। इस ऊँट नै ठुमकै लगाणे भी आवै थे। कदे आगले दोनों पैराँ पै तो कदे पाछले पैरों पै खड़ा हो कै नाच्याँ करै था। गलै म्हं घूंघरू भी बांध राख्ये थे अर शरीर पै लाल रंग तै लकीर खींच राख्यी थी। इस कारण सब नै बहोत आच्छा लागै था। घंटू भी इसनै पकड़ कै छाती ताण कै चाल्या करै था। इसनै खरीदण बहोत सै ग्राहक आये पर चौगुणी कीमत सुण कै उल्टे चाल्ले गये।

एक बै एक झक्की आया अर घंटू तै बोल्या- इस ऊँट का कै मांगै सै? बोल? इस नै मैं खरीदूंगा?

घंटू बोल्या- मनै यो बेचणा ही कोन्यी।

झक्की बोल्या- देख ले, हमनै ऊँट ही खरीदे सै अर जो पसंद आज्या उसनै जरूर खरीद लिया करै सै। इब तू बोल?

घंटू बोल्या- तनै कह दिया ना, मनै बेचणा कोन्यी।

झक्की बोल्या- सुण घंटू, इब तो इसनै मैं जरूर लेके ज्यांगा?

घंटू बोल्या- धमकी देवै सै तेरे जिसै मनै पता ना कितनै कै देखे सै। चाल्ये ज्या अड़े तै।

झक्की चला गया। घंटू भी मस्त रह् या। एक दिन घंटू नै एक शादी म्हं दूर

शहर म्हं जाणा पड़ग्या। घंटू, भूंडू धोरे गया अर बोल्या- भूंडू तनै मेरा एक काम करणा पड़ेग्या?

भूंडू बोल्या- सुणा के हाल सै? सब राजी सै?

घंटू बोल्या- भूंडू मनै एक ब्याह म्हं शहर म्हं जाणा सै। तू आज रात नै म्हारे ऊँट धोरे सो जाइये। मैं काल जल्दी आज्यांगा। तनै तो बेरा सै कि मेरे ऊँट पै कइया की नीत डिग रही सै। बस तू किसै तरिया एक रात लिकाड़ दे।

भूंडू बोल्या- तू चिंता ना करै। मैं ऊँट धोरे ही सोऊँगा।

घंटू अर उसकी घर आली दोनों ब्याह म्हं चाल्ये गये। भूंडू, घंटू के ऊँट धोरे जा बैठ् या। सांझ नै काले एक बोतल ले के भूंडू धोरे आ पहुंचा अर बोल्या- भूंडू तनै मैं सारे गाम म्हं टोह आया अर तू अड़े बैठ् या सै। घंटू कित मरग्या? भूंडू बोल्या- रै काले, आज तो इस घर का मालिक मैं ही सूँ। बोल कै कहवै सै?

काले नै आँट म्हं से बोतल लिकाड़ी अर दारू पीवण लागग्ये। आधी बोतल झाड़ दी जिब भूंडू कै नशा होग्या ।फेर घंटे कै पाछै दोनों पी कै लोटग्ये।

आधी रात नै झक्की आया अर ऊँट नै खोल लेग्या। अपणे घर के पिछवाड़े म्हं दो तख्त लगा कै अर ऊँट के रस्सै बांध के चौबारे म्हं चढ़ा दिया।

सवेरे जिब भूंडू उठ् या तो देख्या कि ऊँट तो कोन्यी। इधर-उधर टोहण लाग्या पर ऊँट किते ना मिला। कच्चौ म्हं तो खोज मिले पर पक्के रोड़ पै ना मिले। दिन लिकड़ते ही घंटू आ लिया। जिब गाम म्हं पहुंचा तो ऊँट की चोरी की खबर मिली।भाज कै घरां पहुंचा तो कै देखे ऊँट तो सचमुच कोन्यी। भूंडू कै घरां चाल्या गया। उसकी घर आली बोल्यी- रात नै थारै ऊँट नै कोय चोर लेग्या, उसनै ढूँढण जा रै सै साथ म्हं कालै भी जा रह् या सै। भूंडू वापिस घराँ आया सीधा घंटू धोरे गया। रात आली सारी कहाणी बताई। तब घंटू बोल्या- भूंडू दो महीने पहल्या वो झक्की आया था। चाल उसकै गाम म्हं चाल्यांगे अर पता लगावांगे।

घंटू अर भूंडू दोनों झंक्की कै गाम म्हं चाल्ये गये। गाम के लोग्याँ ते पूछताछ करी तो एक बोल्या- मनै झक्की कै ऊँट देख्या सै। वो एक टोकरी न्यार भी चराणै खातिर लेके गया सै।

दोनों झक्की के घरां जा लिए पर ऊँट कोन्यी दिखाई दिया। झक्की नै आवाज लगाई पर वो घर पै कोन्यी था। वे गाम कै सरपंच धोरे गये अर ऊँट की चोरी के बारे म्हं बताया। एक पंच बोल्या- ऊँट देख आये? मिलग्या कै?

घंटू बोल्या- हमनै तो कोन्यी मिला।

वो बोल्या- ऊँट उसकै चौबारे म्हं सै। ध्यान तै देख कै आओ।

गाम के कई आदमी कठ्ठे हो कै झक्की कै घराँ फेर गये। एक सकड़े से पैड़े म्हं चढ कै चौबारे म्हं जा पहुंचे। चौबारे म्हं ऊँट खड़ा था। झक्की भी आग्या था। लोग बोल्ये- रै यो ऊँट चौबारे म्हं किस तरिया चढ्या? झक्की तू कब ल्याया यो ऊँट? झक्की बोल्या- मेरा ऊँट, मैं चाहे कितै राखू, थम नै के मतलब सै?

घंटू बोल्या- यो ऊँट तो झक्की मेरा सै अर यो भूंडू रात नै ऊँट धोरे सोया हुया जिब तू खोल कै ल्याया सै।

सरपंच बोल्या- झक्की यो ऊँट तो घंटू का ही सै तू चुपचाप इसनै दे दे ना तो पुलिस म्हं रिपोर्ट करणी पड़ेगी, फेर भी तो देग्या।

झक्की बोल्या- घंटू, मैं तनै कही थी कि तेरा ऊँट मैं ले के जाऊँगा ,बोल ल्याया अक ना? तनै मोल तो दिया ना, मैं इसनै खोल ल्याया अर काले नै दारू ले के मनै ही भेज्या था। सरपंच साहब ऊँट तो घंटू का ही सै अर मैं ही ल्याया था पर इब घंटू इसनै ले जा सकै सै पर मेरी दारू के पीसै तो दिवा द्यो?

घंटू बोल्या- तू इसनै चौबारे तै तार तो दे। फेर हिसाब करांग्ये।

झक्की बोल्या- इब थम ही उतारो इसनै? थारा ऊँट।

हर कोय अपणे- अपणे तजुर्बे बताण लाग्या। पैड़ा तो सकड़ा था अर उस म्हं तै ऊँट लिकड़ कोन्यी सकै था।

झक्की तै बोल्ये- तनै चढाया सै उसी तरिया इस नै उतार भी दे।

झक्की बोल्या- मनै कोन्यी बेरा थारा ऊँट किसै भी तरिया ले जाओ?

गाम के लोग कठ्ठे होग्ये रस्सै बांध कै ऊँट नै पड़ौसी के घर म्हं उतारा। जिब घंटू नै झक्की का हिसाब कर्‌या अर अपणे ऊँट नै घराँ ल्याये।

पर रस्ते म्हं घंटू अर भूंडू दोनों न्यूँ सोचते रहे कि झक्की नै अकेले नै यो ऊँट चौबारे म्हं क्यूँ कर चढाया? जिब गाम म्हं पहुंचे तो लोग पूछण आये कि घंटू कित मिल्याँ ?

घंटू बोल्या- चौबारे म्हं मिला सै, चढग्या ऊँट चौबारे म्हं। 😂😂😂

33.

गलती का अहसास

घंटू सरकारी महकमे म्हं ड्राईवर लाग रह्‌या था। साहब की गाड़ी चलाया करे था। साहब नै जिब किते भी जाणा होता तो घंटू नै ही साथ ले जाया करे था। कई साहब आये अर बदलते गये पर घंटू सरकारी कार का आज्ञा कारी, वफादार बण्या रह्‌ या। दफ्तर म्हं भी उसै का रोब चाल्या करे था। सारे किलर्क उसै की चापलूसी कर्‌या करे थे।

एक बै दफ्तर म्हं एक नया साहब बदल कै आग्या। उसनै सारे किलर्का की परेड कराई फेर सारे चपड़ासी बुलाये। सब तै नाम पता ठिकाणा पूछ्‌ या फेर बारी ड्राईवर की आई तो घंटू बोल्या- हाँ जनाब, मेरा नाम तो घंटू सै अर मैं ही थारा इकलौता वफादार ड्राईवर सूँ।

साहब बोल्या- गाड़ी कब से चला रहे हो?

घंटू बोल्या- जी बीस साल तै।

साहब बोल्या- चलो, मुझे अपणे नाके दिखाओ ?

घंटू साहब नै बिठा कै नाकै दिखाण चाल्या गया। पहले नाके पै आदमी सलामत मिले पर दूसरे पै एक गैर हाजिर मिला। साहब नै उसकी एक दिन की तनख्वाह काट ली। इस तरिया इस साहब नै तो सारे कर्मचारी तंग करने शुरू कर दिये। इब तो घंटू भी दिन रात गाड़ी लिये घूमता रहवै था।

एक बै साहब नै चंडीगढ़ जाणा

पड़ग्या। घंटू अर साहब चंडीगढ़ पहुँच ग्ये। जिब सांझ नै उल्टे चाल्ले तो वार होग्यी थी। रस्ते म्हं साहब बोल्या- घंटू, गाड़ी रोक ले। पेशाब करांगे।

घंटू नै गाड़ी रोक दी। साहब पेशाब करण चाल्या गया। फेर घंटू तै छिप कै सिगरेट पीवण लागग्या। जिब पाँच मिनट तक साहब ना आया तो घंटू कार नै लेके भाज पड़ा। साहब नै सड़क पै आ कै देख्या तो घंटू तो भाज्या जा रह् या। साहब नै आवाज भी लगाई पर सुणे कौण? फोन भी कर्या पर स्विच ओफ कर लिया। घंटू तो अंधेरे म्हं ओझल होग्या। इब साहब सड़क पै खड़ा आण-जाण आले़ विहक्लाँ ने हाथ दे अरे कोय तो रोको? पर कोय ना रुक् या हार कै सड़क पे पैदल चाल पड़ा। दो तीन मील चाल्या पाछै एक पिटरोल पंप पै पहुंचा अर एक ट्रक आले़ ते रिकवेस्ट करी। उस नै साहब पै दया आई अर बोल्या साहब मैं दिल्ली तक जाऊँगा। बेशक दिल्ली चाल्लो? साहब ट्रक म्हं बैठ कै दिल्ली चाल पड़ा। जिब रात कै बाराँ बजे तो ट्रक आला़ बोल्या- साहब रोटी खाँ ग्ये अर दो घंटे आराम भी करांगे फेर चाल्यांगे। आप भी खा ल्यो रोटी?

उसै टेम एक बस भी होटल पै आ रुकी। साहब तो बस म्हं बैठ कै अपणे घरां जा लिया।

घंटू जिब तीन चार मील आ लिया तो सोच्यी, रै रात का टेम सै, बेरा ना कै होज्या? न्यूँ सोच कै उल्टा चाल पड़ा। साहब नै बहोत तलाश करा पर साहब कोन्यी मिला। घंटू नै सोच्यी इब तो घर चालणा ही पड़ेगा। घंटू भी अपणे घराँ जा लिया।

आगले दिन घंटू दफ्तर म्हं कोन्यी आया। साहब बहोत नाराज हुया। घंटू धोरे फोन मिलाया तो घंटू बोल्या- साहब पैर टूटग्या। मैं दफ्तर कोन्यी आ सकू? मेरी छुट्टी मंजूर कर द् यो।

साहब बोल्या- पैर क्यूँ कर टूट ग्या?

भूंडू बोल्या- जिब मैं आपणे लेण उल्टा गया तो एक खड्डे म्हं फिसलग्या अर पैर के फ्रैक्चर होग्या।

साहब बोल्या- तू जल्दी ठीक हो कै आ जाइये।

घंटू एक हफ्ता बाद आया तो साहब का व्यवहार बदला पाया। सारे किलर्क भी साहब की बड़ाई करण लागगे थे।

घंटू तै बोल्ये- रै इसा कै कर ल्याया साहब तेरी ही बड़ाई करै सै। घंटू नै रस्ते आली़ बात किलर्का तै बताई फेर घंटू साहब धोरे माफी मांगण चाल्या गया।

साहब बोल्या- मनै बेरा सै, तू कितणा वफादार सै? बोल कै सजा चाहवै

सै ?

घंटू बोल्या- साहब इब-इब कै माफ कर द् यो, फेर इसी गलती नहीं करुंगा।

घंटू नै इब तो माफ कर दिया पर दो महीने बाद घंटू की बदली चंडीगढ़ की हो गई थी। जिब बदली के आडर देखे तो घंटू नै अपणी गलती का अहसास हुया। 😂😂😂

34.

अंधविश्वास की हद

आजकल लोग पढ़े लिख्ये तो बहोत सै पर वे भी अंधविश्वास पै भरोसा करै सै। न्यूँ भी कहवै सै कि ये सब पाखंड सै पर वै ही उन सब नै मानै भी सै। जै भैंस दूध ना दे तो झाड़ा लगवावै सै। जै बकरी ना ब्यावै तो भैरों पे बकरा चढाण की बात करे सै। कोय बीमार होज्या तो झाड़ा अर जै ब्याह सगाई ना होवै तो इतणे टोणै टोटकै अजमावै सै कि पूछो मत अर जै बालक ना होवै तो वो सब कुछ करै सै जो ना करणा चाहिए।

घंटू के छोरे का ब्याह हुये सात साल होग्ये थे। बहू का बहोत सै डाक्टराँ तै इलाज करवाया पर फेर भी बालक कोन्यी हुये तो एक दिन घंटू की घर आळी बोल्यी- घंटू, हमनै बहू का बहोत ईलाज करवा लिया फेर भी बालक ना हुये। तू कहे तो मैं इसने ढोंग्यी पंडे नै दिखा ल्यूँ? वो पतड़ा भी देखे सै अर इलाज भी बता दे सै।

घंटू बोल्या- देख धप्पो, मनै तो इन पतड़ा अर पंडा तै घणी नफरत सै। ये तो पक्के पाखंडी सै। कई दफा पिट लिए पर जै तेरे अर बहू के मन म्हं सै, तो चाल्ये जाओ अर पूछ आओ।

धप्पो अपणी बहू नै साथ लेके ढोंगी पंडे के घरां चाल्यी गई अर बोल्यी- ढोंगी, राम-राम।

पंडा बोल्या- राम-राम धप्पो, आज क्यूँ कर आणा होग्या?

धप्पो बोल्यी- मैं थारे धोरै एक खास काम तै आई सूँ। इस बहू कै ब्याह नै पूरे सात साल हो लिए पर बालक

कोन्यी हुये सै । इब आप ही कोय इलाज बताओ?

ढोंगी पंडे नै अपणा पतड़ा खोल्या अर पन्नै पलटण लाग्या फेर उंगली पे हिसाब करण लाग्या। बहू का नाम पूछ्या। पतड़े पै हाथ भी धरवाया कदे उंगली धराई फेर पंडा बोल्या- धप्पो तनै तो बहोत देर कर दी आण म्हं? जै तू चार साल पहल्याँ आज्याती तो सारा काम ठीक हो जाता। इब तक बालकाँ की लेन लाग जाती।

धप्पो बोल्यी- तो इब कै होग्या? जो पहल्याँ हो सके था वो इब ना हो सके कै?

ढोंगी पंडा बोल्या- धप्पो तनै बेरा कोन्यी, इसकी कूख बांध कै कूएँ म्हं डाल राख्यी सै। इस कारण या कदे भी माँ .... ?

धप्पो बोल्यी- पंडे जै तू न्यूँ जाणै सै तो इलाज भी करणा जाणै सै। इलाज कर दे ?

ढोंगी पंडा बोल्या- खरचा बहोत आवैगा? तू उस भूप्पी की बहू तै पूछ लिए, मनै ही इलाज कर्या था पर वे तो पुराणी बात होग्यी। तू घंटू तै पूछ कै मनै बता दिये कदे वो बाद म्हं रोला़ करै अर पीसे भी पहल्या ही देणे पड़ेंगे।

धप्पो अपणे घरां आग्यी अर घंटू तै पंडे आली़ बात बताई अर बोल्यी- घंटू, तू उसनै ढोंगी बतावै सै पर उसनै म्हारे घर की सारी बातां का बेरा सै। मनै तो उसकी सारी बात साच्यी लाग्यी। इब बोल तू कै कहवै सै?

घंटू बोल्या- धप्पो जै तनै उस पै भरोसा सै तो उसनै भी अजमा ले? जो खरचा आवैगा वो द् यांगे?

धप्पो बोल्यी- खरचा तो वो पहल्याँ ही लेग्या।

घंटू भी मानग्या। धप्पो भूप्पी की बहू धोरै गई अर ढोंगी पंडे कै बारे म्हं पूछताछ करके आई। कितना कै खरच हुया, सारी बात पूछ कै आई।

आगले दिन फेर धप्पो ढोंगी पंडे धोरे जा पहुँची अर बोल्यी- हाँ ढोंगी, इब सारी बात बता दे। तनै पूरा खरचा देवांगे अर इलाज शुरू कर दे।

पंडा बोल्या- ठीक सै धप्पो, तेरे पै तो मनै भरोसा सै पर घंटू पै कती ना सै। पंडे नै कुछ पुड़िया लिकाड़ी फेर एक डिब्बे म्हं ते और दवाई लिकाड़ी अर पुड़िया बणा कै दे दी अर बोल्या- आठ दिन खा कै आ जाइये फेर और दवाई दे दूंगा पर रुपये दो हजार ले के आइये।

बहू ने दवाई खाई अर आठ दिन बाद फेर चाल्यी गई तो पंडा बोल्या- देख तनै इब एक काम करणा सै अर जरूर करणा सै।

बहू बोल्यी- बताओ जी। तनै सात शनिवार ने एक-एक छप्पर कै आग

लगाणी सै अर वा भी आधी रात नै। जै छप्पर कोन्यी मिलै तो कड़बी कै छ्योर फूँकणे पड़ेंगे।

बहू बोल्यी– कब तै शुरू करूँ?

ढोंगी पंडा बोल्या– देख एक शनिवार उत्तर दिशा म्हं, फेर दखण म्हं, फेर पूरब म्हं अर फेर पछम म्हं, अर फेर न्यूँ ही फूंक आइये। न्यूँ किसै कै शक ना होवैगा।

ज्योंहि शनिवार आया तो आधी रात नै बहू अपणी सासू तै इशारा करके चाल पड़ी अर एक कड़बी का छोर फूंक आई। गाम म्हं रोला माचग्या। रै गाम आलो आग लागग्यी। गाम कै लोग्याँ नै पहुँच कै आग बुझाई। सवेरे या खबर घंटू नै भी लागगी बोल्या– धप्पो रात नै फत्ते की कड़बी जलग्यी। कोय बीड़ी सिगरेट जलती फैंकग्या फेर दूसरे शनिवार नै भी, तीसरे ने …………छः शनिवार हो लिये तो गाम म्हं पंचायत हुई कि कड़बी के तो कोय जाण बूझ कै आग लगावै सै। इब तो पहरा देणा पड़ेगा।

आगले शनिवार नै पहरा बिठा दिया। घंटू नै भी एक मोहल्ले की चौकीदारी करणी पड़ी। इब बहू कै करै? आधी रात नै तो गाम म्हं पहरे दार घूमण लाग रै सै। बहू अपणे ही गुवाड़े म्हं गई अर अपणी ही कड़बी फूंक दी। गाम आले भाग कै आये। आग बुझाई।

धप्पो नै जिब गुवाड़े म्हं जा के देख्या तो बोल्यी– आँए बहू, यो तनै कै करा ? अपणी ही कड़बी कै आग लगा दी और गाम म्हं कड़बी ना मिली कै?

बहू बोल्यी– माजी, गाम म्हं तो पहरेदार घूम रै थे फेर मैं कै करती? अपणी ही फूंकणी पड़ी।

जिब घंटू नै बेरा लाग्या तो ढोंगी पंडे धोरे जा लिया अर बोल्या– रै दुष्ट, तू ही सै जो गाम म्हं आग लगावै सै। तै मेरी बहू तै मेरे ही घर म्हं आग लगवा दी। तनै पकड़वाऊंगा। ढोंगी बोल्या– जिब दूसराँ का जलावै थी तब तो तेरे घी कै चसै थे। तू कदे ना आया अर इब तेरे लाग्यी से जिब भाग्या आया सै। चलाज्याँ तेरी बहू नै बेटा भावै सै। आग तो लगावैगी।

घंटू नै पंचायत बुलाई अर ढोंगी पंडे की करतूत सुणाई। गाम नै फैसला करा कि इस ढोंगी पंडे को गाम ते बाहर लिकाड़ो। इस नै गाम म्हं अंधविश्वास फैल्या राख्या सै। इस तरिया ढोंगी गाम छोड़ के चाल्या गया। घंटू की बहू के कोय बालक ना हुये। किसै भले माणस नै अनाथ बालक गोद लेण की सलाह दी तो घंटू भी मानग्या अर अनाथालय तै एक छोरी गोद ले के आए ।आज घंटू का पूरा कुणबा राजी सै।

35.

आंधा मास्टर

घंटू सरकारी स्कूल म्हं मास्टर बण कै आग्या। स्कूल के बालक बहोत राजी हुये। घंटू का हैडमास्टर नै भी बड़ा स्वागत कर्‌या। हैडमास्टर अपणे बाबू तै बोल्या- बाबू, घंटू नै जवाइन करा ले। घंटू इस स्कूल का बढ़िया विद्यार्थी भी रह् या सै। इस तै बड़ी और कै खुशी की बात हो सकै सै कि जिस स्कूल म्हं पढ्या अर उसै स्कूल म्हं मास्टर बण कै आज्या। म्हारे लिए भी तो या गर्व की बात सै अर देखो इस सम्मान पट पै इसका भी नाम सै।

घंटू नै जिब जुवाइन कर लिया तो छठी किलास का मानीटर आया अर घंटू का हाथ पकड़ कै बोल्या- मास्टर जी म्हारी किलास म्हं चालो? सारे टाबर बाट देख रे सै। मानीटर घंटू का हाथ पकड़ कै ले गया। फेर आठवीं आल़ा मानीटर आग्या अर घंटू मास्टर का हाथ पकड़ के लेग्या। कई बालक तो घंटू नै जाणै थे अर बहोत सै जो ना जाणे थे वे भी घंटू तै मिल कै बहोत राजी हुये पर किलास म्हं एक दो आवारा टाइप के भी हुया करै सै वे बोल्ये- रै यो तो आंधा सै? कै पढावैगा? पर घंटू नै भी सब तै पहल्याँ उन पै लगाम कसी। उनका पता ठिकाणा, नाम-गाम पूछ् या तो वे भी ढीले होग्ये। इब तो घंटू का हाथ पकड़ कै बालक कदे किसै किलास म्हं तो कदे किसै किलास म्हं कुर्सी तै कतई ना उठण देवे थे पर एक दिन एक मास्टर नै घंटू तै आंधा होणे आल़ी बात पूछ बैठ् या तो घंटू भी अपणे

लड़कपण म्हं पहुँच ग्या ।

एक बै गाम म्हं सबकी आँख दूखणी आग्यी थी। इसा रोग फैल्या कि गाम कै कई माणस आंधे होग्ये थे। जिब घंटू की आँख दूखणी आई तब घंटू आठ साल का ही था। गाम म्हं कोय डॉक्टर ना था। दूर शहर तै दवाई लेण जाणा पड़े था। सरकारी अस्पताल की दवा तै भी आराम कोन्यी मिले था। ज्यादा तर लोग अपणे देशी नुस्खे ही अपणा रह्ृ ये थे। कोय आँख म्हं रसोत, सुरमा, शहद, आकड़े का दूध, मुलतानी मिट्टी और भी कई दवाई बणा-बणा कै आँख्याँ म्हं घाल रह्ृ ये थे। घंटू की माँ नै उसकी आँख्याँ म्हं आकड़े का दूध घाल दिया। जिस कारण आँख्याँ म्हं इसा इन्फैक्शन हुया कि घंटू की तो रोशनी चली गई। कई आँख्या के अस्पताल म्हं लेग्ये पर आँख्या का जख्म ठीक कोन्यी हुआ। इस तरिया घंटू कतई आंधा होग्या।

घंटू की पढ़ाई भी डिस्टर्ब होग्यी। दो साल का टेम लिकड़ग्या। उसके बाप ने स्कूल के मास्टरां तै मिल कै पाँचवी तक तो पढाया पर छठी किलास म्हं दाखिला लेण पड़ौस के गाम म्हं जाणा पड़ा। गाम तै स्कूल पूरा दो मील दूर था। गाम कै कई बालक पढण जाया करे थे। घंटू भी उनके साथ जाण लाग्या। सालाना परीक्षा म्हं उसनै एक राईटर मिला अर परीक्षा पास की। इसी तरिया जिब घंटू सातवीं म्हं हुया तो एक स्पेशल टीचर जो विकलांग बालकां का मास्टर था वो घंटू नै पढ़ाण आणै लाग्या। इब तो घंटू स्कूल म्हं कई बालकां तै हुशियार होग्या था। आठवीं म्हं तो फस्ट आया था अर दसवीं म्हं तो मैरिट म्हं आया। अखबारों म्हं फोटो भी छपी अर खबर का हैडिंग था- एक अंधा मेधावी जिले की मैरिट म्हं सब तै ऊपर। घंटू नै बहोत इनाम अर प्रशंसा पत्र मिले। आसपास के बहोत से मास्टर भी चकराग्ये थे कि घंटू मैरिट म्हं! कमाल है भई! अरे वाह नैन सुख ! कै दाव मार्‌या सै? हैडमास्टर बोल्या- परिश्रम ही सफलता की कुंजी है। इस तरिया घंटू नै बारहवीं म्हं भी अपणी मैरिट बरकरार राख्यी अर बारहवीं पास करकै दिल्ली के एक कालेज म्हं दाखिला ले लिया। होस्टल म्हं रहणा अर दिनरात अपणी मेहनत करणा। खर्चा कुछ सरकार देती रही अर कुछ अपणे बाप तै ले लेता ।इस तरहां पाँच साल बीतग्ये थे। घंटू ने फस्ट डिवीजन से बीए की अर बी. एड .की परीक्षा पास करी। फेर टीचर भर्ती बोर्ड की परीक्षा पास करी अर इब स्कूल के मास्टर की नौकरी मिल गई अर सब तै पहल्या स्कूल भी अपणा ही मिला सै।

एक मास्टर बोल्या- घंटू, जै तू अंधा ना होता तो फेर कै करता? कै फेर भी मास्टर ही बणता?

घंटू बोल्या- मास्टर जी बिन मेहनत के कुछ ना मिलता। जै हम मेहनत

करांग्ये तो फल भी मिलेगा आज नहीं तो कल, मिलैगा जरूर अर फेर मैं तो आंधा होग्या था मैं ही जाणू सूँ मनै कितणे कष्ट ठाये सै। कौण बस म्हं बिठावै, कौण रेल चढ़ावै फेर उतरना और भी मुश्किल था पर भगवान का अर आप जैसों का सहयोग व सहारा मिला अर आज आपके साम्हे खड़ा सूँ। 😂😂😂

36.

सगाई आले़ खेत

गाम के मंदिर कै नीचे बीस कीलै जमीन सै। सिंचाई के लिए दो कूएँ भी सै। मंदिर की जमीन जोतणे आले़ बँटाई म्हं जोत्याँ करे सैं। मंदिर के महाराज नै एक नियम बणा राख्या था कि जिस के भी छोरा छोरी शादी करण लायक होज्या उसै नै जमीन जोतण नै दिया करे था। फेर दूसरे की बारी आ जाया करे थी या परम्परा कई बरस तै चाल री सै । कई महाराज बदलग्ये पर गाम की या परम्परा कोन्यी टूटी सै। आज भी जिनके जमीन ना सै या जिनके थोड़ी जमीन सै चाहे वो किसै भी जात का हो महाराज उस नै ही जमीन जोतणे के लिए देवै सै। इस तरिया गाम के कई सैकड़ों का ब्याह हो चुका। कई तो आज भी अपणे रिश्ते दाराँ की नजर म्हं जागैदार बणै हांडे सै।

इब घंटू का छोरा भी जवान होग्या था। कई सगाई आले़ आये पर जमीन ना होणे के कारण देख के उल्टे चले ज्या थे। घंटू की घर आली़ भी बीमार सी रहण लाग ग्यी थी। एक दिन वा घंटू तै बोल्यी- घंटू मैं तो बीमार रहूँ सूँ, तू किसै तरहाँ इस छोरे के रिश्ते का जुगाड़ कर ले। घंटू बोल्या- इब तू ही बता, मैं कै करूँ?

उसकी घर आली़ बोल्यी- तू महाराज धोरे चाल्या जा अर महाराज तै एक कुँआ बटाई म्हं कर ले। कै पता सूत बैठज्याँ? देख महाराज नै गाम म्हं कई घर बसवाँ दिये। तू भी चाल्या जा?

घंटू सीधा महाराज धोरे जा लिया। पैरों म्हं धोक लगाई। देवता कै भी धोक लगाई अर महाराज के पैर पकड़ कै बैठग्या।

महाराज बोल्या- घंटू कै हाल सै? कुछ कहणा चाहवै सै? कह दे शरमावै ना।

घंटू बोल्या- महाराज जी, थम तो मेरी हालत नै आच्छी तरिया जाणो सो थारा सै कोय बात छान्यी ना सै।

महाराज फेर बोल्या- घंटू कह दे, जितनी हो सकेगी तेरी मदद करांग्ये। बोल कै बात सै?

घंटू बोल्या- महाराज जी, मेरा छोरा तो पूरा तीस का होग्या पर इब तक कुँवारा ही हांडे सै। कोय ब्याह सगाई ना हुई सै? इबके एक कुँआ डहर आल़ा मनै दे द्‌ यो। कै बेरा थारे आशीर्वाद तै उसका भी काम बणज्या।

महाराज बोल्या- कोय ना घंटू इब कै डहर आल़े खेत अर कूँआ, जा तू जोत लिये पर मंदिर के दाणे अर कड़बी- तूड़ी तनै डाल कै जाणा पड़ेगा।

घंटू नै मंदिर की जमीन जोत ली। एक साख चली गई तब तक तो कोय रिश्ते आल़ा कोन्यी आया। आँख पाड़-पाड़ कै देखता रह्‌ या पर जिब दूसरी साख बोई तो कोय रिश्ते आल़ा आ पहुंचा अर बोल्या- घंटू कित मिलैगा? गाम का एक

आदमी बोल्या- भाई वो तो खेत म्हं सै। अड़े ते सीधा लाईन पार पहुँच ज्याँ।

वो सीधा घंटू धोरे जा लिया। घंटू नै चार कील्याँ म्हं सिरस्यूँ बो राख्यी अर चार कील्याँ म्हं गेहूँ बो राख्ये थे अर इब नलाई-गुड़ाई के लाग रह्‌ या था। रिश्ते आल़ा बोल्या- साहब, मनै तो घंटू तै मिलणा था।

घंटू बोल्या- हाँ, मेरा ही नाम घंटू सै। कहो कित तै आये सो अर आज इसा कै काम होग्या? दोनों जा कै कूएँ पै बैठग्ये। घंटू हुक्का भर ल्याया। बैठ कै पीवण लागग्ये। वो बोल्या- ये गेहूँ तो सही लागग्ये कितनै सै? घंटू बोल्या- चार कील्ये गेहूँ सै अर वो चार कील्ये म्हं सिरस्यूँ सै।

रिश्ते आल़ा बोल्या- घंटू मेरे एकै छोरी सै अर बारवीं पास सै। तेरे भी एकै छोरा सै, बोल फेर कै कहवै सै? देख मेरे धोरे तो बेटी अर रोटी ही सै और कुछ ना सै। छोरा तो मनै देख लिया। मेरे पसंद आग्या अर इब तू मेरी छोरी कै सिर पै हाथ धर दिये। जिब रिश्ता पक्का मानूँगा।

घंटू भी तो न्यूँ ही चाहवै था पर थोड़ा जमीन का रोब फेर बणाया। देख हम भी गरीब ही सै, ये चार कीली गेहूँ अर चार कीली सिरस्यूँ सै। कै बेरा राम जी

कै कर दे। सही सलामत घर म्हं आज्या तब जाणिये।

ठीक सै साहब थारी छोरी नै एक बै देख्यांगे जरूर। आण तै पहल्याँ थारे धोरे फोन कर द्‌ यांगे।

वो तो चाल्या गया। घंटू मन ही मन बहोत राजी हुया। घर आली़ तै बोल्या- इब बोल, छोरी देखण कब चाल्लैगी? वा बोल्यी- थम ढील ना करो यो काम झटपट कर ल्यो, तो फेर परसो ही चाल्या। वा बोल्यी- हाँ, ठीक सै। परसों आच्छा बार सै।

घंटू फोन करके चाल्या गया। छोरी पसंद आग्यी। ब्याह भी जल्दी होग्या। सुथरी बहू आई। महाराज नै भी मिठाई खिलाई। आशीर्वाद लिया।

जिब फसल आग्यी तो महाराज बोल्या- घंटू इब तो तेरे छोरे का ब्याह होग्या। आगै ?

घंटू बोल्या- महाराज जी मनै एक साख और दे द्‌ यो थारी बड़ी मेहरबानी होग्यी।

महाराज बोल्या- इब किसै दूसरे का भी नंबर आ जाण दे?

पर घंटू कोन्यी मान्या बोल्या- जी ब्याह नै थोड़े ही दिन हुये सै इस कारण एक साख और दे द्‌ यो।

महाराज मानग्या अर एक साख घंटू नै फेर फसल बो दी पर एक साल बाद घंटू की पोल खुलग्यी। छोरे की बहू नै अपणे बाप तै सारी बात बता दी कि बापू इणके धोरे तो एक भी खूड कोन्यी। तू तो बोल्या ये आठ कील्याँ कै जागैदार सै। इब आ कै देख, कित सै वै आठ कीलै? घास भी दूसरां कै खेत म्हं तै खोद कै ल्याणी पड़े सै। बापू तै तो मनै कतई डुबो दी। इण कै खाण नै भी दाणे कोन्यी?

इस तरिया घंटू के छोरे की बहू घर छोड़ कै चाल्यी गई पर गाम कै कई लोग जा कै राजी नामा करवा ल्याये। न्यूँ घंटू के छोरे का ब्याह हुया। इस कारण गाम आले़ आज भी मंदिर के खेत्याँ नै सगाई आले़ खेत बतावै सै।😂😂😂